सर्व अस्वत्व सुरक्षित हैं. बिना आज्ञा कोई न छापे ॥

प्लेग प्रतिबन्धक उपाय

जिस में

प्लेग से सुरक्षित रहने के उपाय, आदि पर गूढ़ और विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है ॥

जिसको

कविविनोद वैद्यभूषण पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य

मालिक

"अमृतधारा" औषधालय तथा सम्पादक वैद्यकपत्र 'देशोपकारक' और अनेक वैद्यक पुस्तकों के रचियता ने लिखा

१५५२

और

देशोपकारक औषधालय के कार्य कर्त्ताओं ने छपवाकर प्रकाशित किया

औषधि या पुस्तक के मिलने के वास्ते पत्र तथा तार का पता केवल इतना है:--

"अमृतधारा" लाहौर ॥

अमृत प्रेस रलवे रोड लाहौर में छपी ।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

कापी १०००] [मूल्य

धन्यवाद है

उस महान् ईश, अद्वितीय, सर्व शक्तिमान्, सर्व व्यापी, अजर, अमर, अभय, सर्वान्तर्यामी, दयामय ईश्वर का, जिसने अपनी अपार कृपा से मनुष्य को बुद्धि प्रदान की है, ताकि वह भले बुरे की विवेचना करे, और सीधे मार्ग चलता हुआ अभीष्ट पद को प्राप्त करे। धन्य है, वह परमात्मा जिस की कृपा से आज यह पुस्तक "प्लेग प्रतिबन्धक" छपकर पाठकों की सेवा में अर्पण होती है, उर्दू में २ बार छप चुकी है, और जिसके पास पहुंची है उसने ही इसको पसन्द किया है। प्लेग जैसा दुष्ट रोग कभी आक्रमण करे ही नहीं, प्रत्येक मनुष्य को ऐसा उद्योग करना चाहिए, क्योंकि इस का भय इतना छाया हुआ है, कि आक्रमण होने के पीछे इसके पंजे से बच निकलना सहज काम नहीं, इस छोटी सी पुस्तक में हमने प्लेग से रक्षा की सर्व विधियों का वर्णन किया है॥

यह पुस्तक उर्दू में मैंने १९०५ में लिखी थी, इस समय तक बहुत सी नई बातें भी ज्ञात हो चुकी हैं, परन्तु अब मेरी इच्छा "प्लेग चिकित्सा लिखने की है और उसमें वह बातें आजावेंगी, इस वास्ते इस पुस्तक को बढ़ाया नहीं गया है, ज्यों की त्यों छाप दी गई है॥

ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य

लाहौर॥

भूमिका ॥

महामारी (प्लेग) का नाम सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं, प्लेग का शब्दार्थ ही धक्का है, इस पापी ने जितना कष्ट हिन्दुस्तान को पहुंचाया है, वह किसी से गुप्त नहीं है, १८९६ से मरी बम्बई से आरम्भ हुई थी, और इस समय तक बराबर बढ़ती जाती है, उस समय से लेकर इस समय तक जो २ थ्यूरियां पेश की गई हैं वह एक दूसरे के विरुद्ध हैं, मुझे शोक से कहना पड़ता है, कि पूरा यत्न इसके दूर करने के लिये नहीं किया गया, यू० पी० प्रान्त की गवर्मेन्ट की रिपोर्ट में यह शब्द पढ़ते ही सचमुच रोना आता था, जब कि उन्हों ने लिखा, कि ताऊन बश से निकल गई है, सब से प्रसिद्ध डाक्टरी पत्र लेनसिट का निम्न लिखित लेख पढ़ने योग्य है:—

'१९०३ में ८५२००० मनुष्य प्लेग से हिन्दुस्तान में परलोक गामी हुए, और १९०४ में दस लाख से अधिक, इस में से ३५०००० केवल पंजाब प्रान्त में मरे, यही प्रान्त है जिस से कि हमारी फौज में योधा सिपाही भरती होते हैं, पंजाब बड़ा प्रान्त नहीं है, इसके निवासी दो करोड़ अर्थात् इङ्गलिस्तान के ½ हैं, १२ सप्ताह में २५०००० मृत्यु हुवे, यह गणना इतनी है, कि विश्वास नहीं आता, परन्तु किसी ने इसकी यथार्थता में संशय नहीं किया ॥

" इङ्गलिस्तान में क्या हल्ला मचता और कितना कोलाहल होता, यदि बारह सप्ताह के अन्दर ढाई लाख मनुष्य मर जाते, वावेला मच जाता, और यदि यह प्रगट होता कि यह मृत्यु प्रति वर्ष हुवा करेगी तो हाकिमों की क्या गति होती, मेरी सम्मति में जो दशा हमारी होती इस पर विचार करके हमें चाहिये, कि हम हिन्दुस्तानियों से प्रेम करें, इस हृदय विदारिक कहानी से हमारी दया की कुछ हद्द होनी चाहिए, जो भयंकर भूकंप कांगडा में हुवा और जिस से दस पन्द्रह हजार मनुष्यों का नाश हुवा इसक लिए हमने सन्देश भेजे और चन्दा भी इकट्ठा किया, परन्तु वह मृत्युवें प्लेग की मृत्युवों का एक प्रति सैकड़ा भी नहीं, अंग्रेजों ने अपनी जिम्मेवारी को अब तक नहीं विचारा, हमारे विचार में सत्य को छिपाने की पौलिसी बहुत बुरी है, और उसे अब बन्द करना चाहिए, हिन्दुस्तान बृटिश ताज का सब से मूल्यवान रत्न समझा जाता है, और उस की उन्नति के लिए हमारी जाति जिम्मेवार है " ॥

पाठक गण ! १८९६ से लेकर इस समय तक ५० लाख से अधिक मनुष्यों की मृत्यु सरकारी रिपोर्ट के अनुसार हो चुकी है, और जिन्हें इस बात का तजुरबा है, कि सरकारी रिपोर्ट बहुत ही अपूर्ण होती है, वह कह सकते हैं, कि एक करोड़ पचास लाख से अधिक प्लेग से मृत्यु हो चुकी है, सब से बढ़ कर शोक की बात तो यह है, कि मृत्युवों की गणना प्रति वर्ष बढ़ती जाती है, भारत वासियो ! यह समय आलस्य में पड़े रहने का नहीं है,

आप भी कुछ उद्योग करो इस भयानक रोग को दूर करने का यत्न करो हिन्दुस्तान के लिए इससे अधिक कोई और बात विचार करने योग्य नहीं है, एक दो डाक्टरों का विलायत से आकर अनुसन्धान करके रिपोर्ट लिख जाना काफी नहीं है ॥

यह रिसाला भी सभ कुछ नहीं है, आप विचार सकते हैं, कि इस छोटी सी पुस्तक में क्या कुछ समा सकता है, ताऊन की खोज आज तक की सब थ्यूरीज़, ताऊन के उपाय, और उन पर अच्छे २ विद्वान पुरुषों की सम्मतियां और प्लेग की उत्पत्ति आदि पर यदि पूरी बहस की जावे तो न्यून से न्यून दो चार सौ पृष्ठों की आवश्यकता है, इन सब को इस समय छोड़ कर केवल उन तदबीरों का वर्णन इस रिसाले में किया जावेगा जो कि ताऊन के आक्रमण से बचा सकती हैं, शेष बातों का वर्णन भिन्न २ रिसालों में या एक ही रिसाले में शीघ्र पाठकों के सामने प्रकाशित करने की आशा रखता हूं, क्योंकि इस लेख की देश को बहुत आवश्यकता है ॥

प्लेग से रक्षा की रीति ॥

बाज़ डाक्टर टीका ताऊन एक अत्युत्तम प्लेग के बचाव की रीति वर्णन करते हैं, परन्तु मुझे इसके लाभ दायक होने में सन्देह है, सब से पहिले यह प्रगट करना आवश्यक है, कि टीका ताऊन क्या वस्तु है ॥

ताऊन के कीटाणुओं को समुद्री घास पर छोड़ा जाता है, जो शीघ्र ही बढ़ने लगते हैं, उसके पीछे बड़ी बोतलों में बन्द कर के छः सप्ताह तक वहां रक्खा जाता है, इस समय तक यह विशेष प्रकार के मादे निकालते रहते हैं, प्रोफैसर हाफकिन साहिब का अपना कथन है, कि उन से जो मल निकलता है, वह अति विषैला होता है, इसके पीछे इन बोतलों को गर्म जल में रख कर कीटों को मारा जाता है, और बोतलों को निकाल कर कारबालिक एसिड मिश्रित कर छोटी २ बोतलों में भर कर भिन्न २ स्थानों में भेजा जाता है, यह है जो कि मनुष्य के शरीर में प्रवेश किया जाता है, डाक्टरों की सम्मति है कि इस में प्लेग के जीवित कीट भी मौजूद होते हैं, **कर्नललारी** साहिब प्लेग कमिश्नर हैदराबाद दक्खन कहते हैं, मैं हाफकिन साहिब के टीका ताऊन का हैदराबाद रियासत में प्रयोग करने को तैय्यार हूं, बशर्ते कि इस में से जीवित कीटाणु बिलकुल निकाल दिए जावें, और फिर यह सिद्ध कर दिया जावे कि इससे टीका करने में कुछ भी लाभ शेष रह जाता है ॥

इसी प्रकार जनाब कर्नल जान्सन साहिब लिखते हैं; टीका के मादे की छः बोतलों में से पांच बोतलों के अन्दर साफ तौर से उन कीटों का बढना पाया गया, छटी बोतल के विषय में जो तजुरबा किया गया उसमें संदेह था ॥

इस विष के प्रवेश करने के पीछे चार से बारह घण्टे के अन्दर २ मनुष्य ज्वर और अस्थियों में पीड़ा मालूम करता है,

प्रोफैसर हाफकिन साहिब की सम्मति है कि १०२ दर्जे का ज्वर आवश्यक है, यह ज्वर दो तीन दिन तक रहता है, बाहू में सोजन मालूम होती है, और बगल में दर्द के साथ एक गिलटी भी मालूम होती है, बेचैनी और सिर दर्द भी मालूम होता है, रोगी वृद्ध बच्चे और दुर्बल मनुष्य को अति कष्ट होता है डाक्टर साहिब उपदेश करते हैं, कि चारपाई पर आराम करें, बांह को न हिलावें, दूध चावलों का सेवन करें और २४ घण्टों के बाद छोटा सा जुलाब लेलें ऊपर लिखित से स्पष्ट है कि :--

टीका ताऊन छोटे दर्जे में ताऊन ही है ॥

इस वास्ते यह कह देना बिलकुल आसान है; कि प्लेग के पीछे जो रोग शेष रह जाते हैं, वह टीका लगाने वाले पुरुषों में भी होते हैं, जिन मनुष्यों को ताऊन होती है, और वह ईश्वर की कृपा से बच रहे हैं उनके पास जावो और उनकी दशा पूछो कोई मसाने में सदा के लिए गरमी बैठ जाने की शिकायत करेगा, किसी का चेहरा पीला होगा, किसी पर खुश्की ने डेरे जमाए होंगे, और यही दशा टीका लगवाने वालों की होती है, वीर्य्य पतला होजाता है और दिमाग निर्बल होजाता है, शरीर रोगी होजाता है ॥

सर्जन जनरल थारंटन अपने पत्र में जो उन्हों ने वजीर हिन्द के नाम लिखा था लिखते हैं, टीका लगवा कर प्लेग के आक्रमण

से बचे रहने का प्रयत्न करना एक ऐसी तजवीज है, कि बुद्धि से झूठी और तजुरबे में ना कामयाब प्रमाणित हुई है। इस बातको दृष्टि गोचर किया जाता है कि यह ठीक हो सकता है कि टीका का अभियोग मनुष्य के शरीर में कोई ऐसी अवस्था पैदा कर दे कि जिसका परिणाम उसके पीछे बहुत खराब निकले, एक प्रसिद्ध फ़यालोजिस्ट का कथन है, कि जब एक बार प्रकृति के प्रबन्ध को उलट पुलट किया जावे तो नहीं मालूम कि इस के परिणामों का अन्त कहां होगा, इसी प्रकार चूंकि टीका का योग भी अन्धेरे में छलांगें मारने की तरह है इस लिए इस का परिणाम पहिले नहीं जाना जा सकता। अच्छा है कि ऐसी भयानक युक्ति से बच रहे, और शरीर रक्षा के योग्य रीतियों से इस रोग की उन्नति को रोक दिया जावे, अथवा इस के बल को न्यून किया जावे, अन्त में इतनी सर गर्मी के साथ जिसके कि मैं योग्य हूं, आप की सेवा में प्रर्थना करता हूं, कि आप अत्यन्त आवश्यक कार्य्य में पूरा २ ध्यान देवें और भारतवर्ष गवर्मेन्ट को यह आज्ञा न देवें, कि वह भारत वर्ष के निवासियों को उनकी इच्छा के विरुद्ध टीका लाऊन के लिए मजबूर करें॥

एक प्रसिद्ध तिब्बी पत्र इन्डियन लैनासिट का एक नामा निगार लिखता है, कि हमारी सम्मति कैप्टन लिस्टन से जो प्लेग से बचाव का पूरा उपाय केवल टीका को बताता है, बिलकुल विरुद्ध है, हम ने बहुत से टीका लगाने वाले मनुष्यों को प्लेग

ग्रस्त और उस से मरते हुवे देखा है, और हमारे विचार में प्लेग से बचे रहने के लिए टीका का प्रभाव अत्यन्त शङ्का पूर्ण है, इससे अधिक यह बात पूरे तौर पर प्रमाणित हो चुकी है, कि टीका के लगवाने से प्लेग की तरह के और भयानक और असाध्य रोगों का प्राप्त होना पडता है उदाहरणतः कोई २ मिरगी में और कोई २ मनुष्य छाती के रोग में ग्रस्त हो जाते हैं, और बाज टीका लगवाने से एक रोग लगवा लेते हैं, और फिर कभी निरोग नहीं होते। एक केस में अंग्रेज टीका के विष के रुधिर में फैल जाने पर जीवित न रह सका। टीका उस समय तक लाभ दायक नहीं कहा जा सकता, जब तक कि यह सिद्ध न हो जावे, कि ताऊन के एक आक्रमण के पीछे उस का दूसरा आक्रमण नहीं होता, परन्तु इस ख्याल को गलत प्रमाणित किया जा चुका है, चुनांचे हजारों मनुष्य टीका लगवाने के पीछे प्लेग का शिकार हो चुके हैं। हमारे विचार में टीका से प्लेग के आक्रमण से बचे रहने की बजाय उलटा विषैला माद्दा रुधिर में प्रवेश कर जाता है, और प्लेग के कीटों को शरीर में रहकर और अधिक फैलने का मौका मिल जाता है, और भी वैज्ञानिक डाक्टरों की सम्मतियां प्रस्तुत की जा सकती हैं, जो साफ तौर पर टीका ताऊन का लाभदायक न होना बयान करते हैं, टीका का योग निकालने वाले और इसके मानने वाले अधिकतर इसलिये टीका को गुणकारक लिखते हैं कि चूंकि एक बार प्लेग के आक्रमण से बच जाने पर दूसरी बार ताऊन का आक्रमण नहीं

होता, इसलिये टीका ताऊन एक छोटी श्रेणी का ताऊन भी अवश्य आक्रमण ताऊन से बचा रक्खेगी, परन्तु अब पूरे तजरुबों के पश्चात् यह सिद्ध हो चुका है कि यह बिलकुल गलत है, आस्टरिया की ओर से जो कामिशन नियत होकर आई थी इन में से डाक्टर मिल्लर पर ताऊन ने हमला किया परन्तु पहिली वार वह बच निकले, कुछ काल पीछे डाक्टर मिल्लर पर ताऊन ने दूसरी वार आक्रमण किया इस बार बच न सके ॥

एक मिल्लर जैसे डाक्टर की इस प्रकार मृत्यु इस विषय का पूर्ण प्रमाण है, कि प्लेग रोग के विषय में यह हठ कि एक बार जिस मनुष्य के प्लेग हो जावे दुबारा नहीं होता ठीक नहीं है, जब ईश्वरीय टीका भविष्यत् ताऊन के लिए एक पुरुष की रक्षा नहीं कर सक्ता तो बनावटी टीका से यह उमीद करना कहां तक ठीक है। टीका लगाने वाले यह दावे करते हैं कि टीका कराने वाली श्रेणी में उस श्रेणी की अपेक्षा जिन्हों ने टीका नहीं लगवाया आक्रमण तथा मृत्यु बहुत न्यून हुई है, यह वर्णन इस विषय को दृढ़ करता है कि टीका प्रत्येक मनुष्य की रक्षा करने में असमर्थ है टीका की सहायता करने वाले इस न्यूनता को टीका का असर निश्चय करते हैं हमारे विचार में ऐसा कदापि नहीं है, निम्न लिखित कारणों से यह बात साफ तौर पर प्रगट है कि जहां कहीं रोग पडता है विद्वान और धनाढ्य पुरुषों की अपेक्षा अनभिज्ञ निर्धन अज्ञानी अधिकतर रोग ग्रस्त होते हैं क्योंकि धनाढ्य पुरुष शुद्धि नियमों के अधिक पाबन्द होते हैं इस बात में कोई सन्देह

इस समय तक टीके का प्रयोग विद्वान धनवान और उनसे भी मुख्य २ शिरोमणि पुरुषों में रहा है, इससे स्पष्ट प्रगट होता है, कि टीका लगवाने वाली श्रेणी में प्रति सैंकड़ा कम मृत्यु होना टीका का गुण नहीं, परन्तु टीका लगवाने वाले मनुष्यों की विद्या आरोग्यता और रोग के नियमों को जानने का फल है, जो कि बिना टीका लगवाने पर भी प्रगट होता है। अंग्रेज़ शायद ही कभी टीका लगवाते हैं, फिर भी उन में मृत्यु हिन्दुस्तानियों से प्रति सैंकड़ा न्यून ही होती हैं, अर्थात् केवल नाम मात्र ही होती है, यह क्यूं ? शुद्धताई के नियमों का पालन। मैं कहता हूं, कि यदि यह भी मान लिया जावे कि टीका लगवाने वाली श्रेणी में कुछ अनपढ़ भी सम्मिलत थे, तो इस बात के मानने में तो कोई सन्देह नहीं रहा कि वह दिल चले और कुछ न कुछ ताऊन रोग को समझने वाले होंगे, उन्हों ने टीका लगवाने के साथ शरीर की रक्षा के नियमों का पालन भी किया होगा, ज़िला गुरदासपुर के डिस्ट्रिक्ट प्लेग आफ़िसर की डायरी से निम्न लिखित पंक्तियां इस लेख पर भी ज्योति डालती हैं:—

"यह बात वर्णन करने योग्य है, कि टीका ताऊन से एक और भी लाभ देखा गया है, कि जिन्हों ने टीका लगवाया वह अन्य नियमों के भी जो प्लेग रोग से बचने के लिए हितकर और आवश्यक हैं, मानने वाले होगए हैं, और उन पर चलने की ओर उनकी दिली इच्छा हो रही है"॥ विश्वास बड़ी वस्तु है, साधू धूनी की विभूती हर रोग पर दे देते हैं. और विश्वास रखने

वाले मनुष्य प्रायः निरोग होजाते हैं, किसी वैद्य पर विश्वास हो तो उसके कमरे में पांव रखते ही कभी २ रोग में न्यूनता हो जाती है। महामरी रोगों में दिल का दृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। टीका ताऊन पर जिनका विश्वास होता है वह अपने विश्वास से इसे लगवाते हैं, और उनका विश्वास होता है, कि वह ताऊन से बचे रहेंगे, और इसके साथ ही उनका दिल दृढ़ होता है, अस्तु! क्या आश्चर्य है कि यदि ऐसे मनुष्य ताऊन के आक्रमण से बच जावें? बहुत से नगरों में कई दिल चले मनुष्यों ने अपना वीरता का काम ही यह बना रखा है कि जहां कहीं किसी प्लेग ग्रस्त की मृत्यु हुई उठा कर दबा या जला आए, एक २ दिन में उन्हों ने बीसियों मुरदे जलाए, परन्तु फिर भी प्लेग से बचे रहे। यह किस कारण से दिल की शक्ति के कारण विश्वास और शुद्धि के कारण ॥

(१) यह तो टीका के मानने वालों का ही कथन है, कि एक नियत समय के पीछे पहिले टीके का प्रभाव प्लेग का आक्रमण रोकने के लिये असमर्थ है। पहिले विचार था कि टीका का प्रभाव ६ मास तक रहता है। परन्तु जब तीन मास तक हज़ारों मृत्युवें होने लगीं तो तीन मास की सीमा नियत की गई, परन्तु जब बारह दिन के अन्दर भी मौतें दृष्टि गोचर होने लगीं तो टीका का प्रभाव बिलकुल सन्देह जनक हो गया। प्लेग कमिश्नर की रिपोर्ट से निम्न लिखित वृतान्त हमारे निश्चय को सिद्ध करता है ॥

"अब हम ऐसे स्थान पर पहुंच गए हैं, कि जहां पर प्रथम इस बात का अनुसन्धान करना आवश्यक मालूम होता है, कि टीका किस समय तक उस मनुष्य को जिस पर इसका प्रयोग किया जावे प्लेग के रोग से बचा सकता है। इस विषय के अनु-सन्धान के लिए इस समय तक कोई सामग्री प्रस्तुत नहीं है, उन संख्याओं के अतिरिक्त जो आदि में मेजर बेनरमेन ने अंधेरे के स्थान के विषय में प्रस्तुत की हैं, जिन से प्रगट हुवा कि टीका का प्रभाव छे सप्ताह के अन्दर कम नहीं हुआ॥

दूसरे जेलखाना उमरखेडी के प्रमाण हैं:--

जिनसे यह सिद्ध होता है कि टीका के चार सप्ताह पीछे टीका कृत श्रेणी में बिना टीका वाली श्रेणी की अपेक्षा प्लेग की वारदात अधिक दृष्टि गोचर हुई, सब से पीछे हिबली धरोवर, गंडक, और मैसूर के विषय में संख्याएं हैं, यह यदि एक साधारण परिणाम के लिये विश्वास दायक खयाल किये जा सकते हैं, तो यह प्रगट करते हैं, कि अन्तिम स्थानों पर टीका कृत श्रेणी में यद्यपि उनमें से कइ मनुष्य चिरकाल तक ऐसी अवस्था में रहे जहां इन पर प्लेग का प्रभाव हो सकता था, बिना टीका लगवाने वाली श्रेणी की अपेक्षा कम मृत्युएं हुईं, इस से यह परिणाम निकल सकता है, कि एक नियत समय तक टीका का प्रभाव रहता है"॥

ऊपर लिखित वृतान्त से यह प्रगट है, कि जो नकशे हमारे सामने प्रस्तुत किए गए, इन से इस विषय में कि किस नियत

समय तक टीका वा प्रभाव प्लेग के आक्रमण से बचा सकता है कोई निश्चित सम्मति नियत नहीं की जा सकती ॥

जहां इस विषय में अभी संदेह है कि किस समय तक टीका ताऊन का प्रभाव रहता है, वहां इस समय तक यह बात भी मालूम नहीं हुई कि ताऊन का टीका लगातार कितनी वार लगाया जावे, जो फिर सदा के लिए इस से बचने की आशा हो सके। एक अंग्रेजी समाचार पत्र गणना करके लिखता है, कि सब भारत वासियों को एक वार टीका लगवाने का व्यय कम से कम दो क्रोड रुपया होगा और यदि दो सप्ताह तक टीका का प्रभाव माना जावे तो ५२ करोड सालाना खर्च होगा चूंकि इस समय तक टीका की सहायता करने वालों ने यह मालूम नहीं किया, कि कितनी वार लगातार टीका लगवाने से मनुष्य ताऊन के आक्रमण से बच सकता है, इसी कारण से हम इस विषय पर अपनी सम्मति कुछ प्रगट नहीं कर सकते. कि टीका ही यदि इस रोग से रक्षा का साधन नियत किया जावे तो कितने वर्ष तक भारत वासियों को यह बड़ा भारी खरच सहना पड़ेगा ॥

(२) टीका सहायकों का वर्णन है कि शीतला का टीका लाभदायक सिद्ध होता है, और ताऊन का टीका भी इसी आधार पर है इस वास्ते निश्चय फल दायक है। इस विषय पर तो हम फिर कभी लिखेंगे कि शीतला का टीका ठीक उपयोगी है या नहीं, और इङ्गलिस्तान में इसके कितने विरोधी हैं, और इन की

कितनी शक्ति है जब कि वहां पर शीतला के टीके का कानून बदल दिया गया है, वहां पर भारतवर्ष की तरह कोई इसके लगवाने के बन्धन में नहीं है । यहां हमें यह प्रार्थना कर देनी है, कि यदि शीतला के टीके को फलदायक मान भी लिया जावे जैसा कि कुछ अवस्थाओं में वह है, तो भी इस से यह प्रगट नहीं होता कि ताऊन का टीका भी लाभदायक सिद्ध होगा, क्योंकि विचार करने से ज्ञात होता है, कि टीका चेचक में खास चेचक का मादा मनुष्य के शरीर के अन्दर प्रवेश नहीं किया जाता, गाय की शीतला के मादा से टीका के लिये योग तैयार कर के शरीर रक्षा के नियम पर इस से टीका लगाया जाता है, क्योंकि शीतला के टीका सहायकों का यह दावा है जो सत्य प्रतीत होता है, जिन मनुष्यों को एक बार चेचक निकल आवे दुबारा नहीं निकलती जो कि प्लेग के रूप में अप्रामाणिक सिद्ध हुआ है । टीका चेचक से चेचक का प्रभाव यदि वह शरीर में हो नष्ट हो जाता है, परन्तु टीका ताऊन से यदि ताऊन का प्रभाव पहिले से मौजूद हो तो मृत्यु हो जाती है ॥

टीका निकालने वाले व उसकी सहायता करने वाले कहते हैं कि टीका ताऊन रुधिर में जाकर एक विष का प्रभाव पैदा करता है, और लवण के सदृश उस में मिश्रित हो जाता है, और जिस तरह शोरे वाली भूमि में चावल नहीं उत्पन्न होते, वैसे ही ताऊन के कीटाणु टीका लगवाने वाले के शरीर में प्रवेश भी हो जावें तो भी फैल नहीं सकते, और कभी २ तो नष्ट ही हो

जाते हैं, परन्तु स्मरण रहे कि यह हो सकता है कि प्रवेश किए हुए कीटों की अधिकता हो, और मनुष्य के शरीर में विष भी उन का नाश करने के समर्थ न हो, और इस समय मनुष्य प्लेग का ग्रास बन परलोकगामी बन जावे ॥

मलिकवाल में टीका लगवाए हुए सब मनुष्यों की टीके से ही मृत्यु होजाने के कारण इसकी उन्नति में और भी बाधा पड़ गई है, वर्णन किया जाता है कि सीरम जो भेजा गया था उस में जीवित कीटाणु अधिक थे, परन्तु कौन कह सकता है कि आगे ऐसा न होगा, जब कि इस की परीक्षा के समय जब कि इस की सहायता करने वाले इस की पूर्ण तौर से सावधानता करते होंगे, ऐसा दृष्टि गोचर हुआ ॥

डाक्टर टरनर साहिब आफिसर बम्बई ने गवर्नमेन्ट को लिखा, कि गवर्नमेन्ट यह उपाय करे कि यदि कोई टीका लगवाने वाला मनुष्य मर जावेगा, तो उसके सम्बंधियों को १००) रुपया दिया जावेगा, हमें यह पढ़ कर अत्यन्त शोक हुआ, परन्तु फिर हमें यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि गवर्नमेन्ट ने इसे स्वीकार नहीं किया, क्यूं न डाक्टर साहिब कोई ऐसा अत्युत्तम इलाज मालूम करें, जो स्वयम् लोगों को अपनी ओर खींच लेवें, सौ रुपया का लोभ देकर टीका को शुरू करना क्या अच्छा मालूम होता है ॥

रिसाला इण्डियन पब्लिक हैल्थ मई १९०५ में सम्पादक जी लिखते हैं कि "हम कोई कारण नहीं देखते कि गवर्नमेन्ट ने इस रीति को क्यूं ना पसन्द किया, परीक्षा करनी चाहिए थी

सम्भव था कि टीका इस तरह उन्नति पाता"। अभिप्राय यह है कि चाहे कैसे ही तरीकों को वर्ता जावे, टीका की उन्नति हो ॥

इस लम्बे चौडे विवाद का सार यह है, कि ताऊन का टीका बिलकुल सन्तोष जनक सिद्ध नहीं हुआ है, इस लिए गवर्नमेन्ट का कर्तव्य है कि यह कह कर फैसला न करदे, कि ताऊन काबू से निकल गया है, बल्कि पूर्ण रूप से अनुसन्धान कर के भारतवर्ष को इस कष्ट से बचा दे। हम यह कहने के लिए बिलकुल प्रस्तुत हैं, कि गवर्नमेन्ट बहुत से भेदों को अभी तक नहीं प्रगट कर सकी जो कि ताऊन के विषय में हैं, इस समय तक जो मनुष्य अनुसन्धान के लिए नियत हुए हैं उनके परिणाम विश्वास योग्य नहीं हैं। हम निवेदन करना चाहते हैं, कि वैद्यक में इस प्रकार की चिकित्सा और उपाय लिखे हैं जिनको प्रयोग में लाने से अवश्य प्लेग का मूल नाश होने की आशा है, इस लिए जहां डाक्टरों की बातों को सुना जाता है, वहां वैद्यों के अनुसन्धान की ओर भी ध्यान देना चाहिए जो दावा करते हैं, उन के दावे की परीक्षा करने, अथवा सुनने में क्या हानि है ॥

वैद्यक चिकित्सा सब की माता है, माता को छोड़ देना भला मालूम नहीं होता है ॥

(2) Disinfection अर्थात शुद्धि या सफाई, दूसरा रोग से बचने का उपाय है, जिसको डाक्टर बड़े बल के साथ पेश करते हैं ॥

Disinfection अर्थात् रोग जन्तुओं का नाश करने वाली औषधियों से गृह आदि को शुद्ध करना, गृह को रोग जन्तुओं के नाश करने वाली औषधियों के द्वारा शुद्ध करने से रोग का भय बहुत न्यून होता है, यद्यपि हम मानते हैं, कि इस विधि से अधिक उपयोगी अपनी प्राचीन रीति थी जिसका वर्णन हम आगे करेंगे, परन्तु इसके गुणदायक होने में भी कोई सन्देह नहीं है, हम उच्च स्वर से इस के व्यवहार की प्रार्थना करते हैं ॥

अंग्रेजी प्रचलित डिस इन्फैक्टैंट निम्न लिखित हैं :—

(१) पांच भाग कारबालिक एसिड और सौ भाग जल रोग जन्तुओं को शीघ्र ही मारने की शक्ति रखता है ॥

(२) १/४ भाग फिनायल और १०० भाग जल पांच मिण्ट के अन्दर कीटाणुओं का नाश कर देती है, यदि इस की शक्ति को और बढाना चाहें तो एक भाग फिनायल तक कर सकते हैं ॥

(३) १/१००० मर्करी लोशन १ मिन्ट में कीटाणुओं का नाश कर सकता है, बनाने की रीति आगे लिखेंगे ॥

(४) १/१०००० कार्बालिक लोशन प्लेग के कीटों को ५ मिण्ट में नाश कर देता है। बनाने की रीति आगे लिखी जावेगी ॥

(५) क्लोराईड आफलाईम दस हज़ार भाग जल प्लेग के कीटों को ५ मिन्ट में नष्ट कर देता है ॥

(६) एक भाग सलफ्यूरिक एसिड (तेजाब गन्धक) दस हजार भाग जल पांच मिन्ट में नष्ट कर देता है ॥

(७) ५ फी सदी नीला थोथा का जल भी योग में लाया जाता है ॥

अधिकतर प्रचालित रीति मर्करी लोशन का वर्ताव है, नीले वर्ण का जल ताऊन के दिनों में सरकार की ओर से कई घरों को शुद्ध करने के लिए सेवन किया जाता है, वही मर्करी लोशन होता है, एक बडे पात्र में सवा सेर मर्करी पर क्लोराइड (दाराचिकना) डालो और चालीस छटांक हाईड्रो क्लोरिक एसिड (तेजाब नमक) से मिश्रित करो और लकड़ी से इतना हिलावो, कि इन में दारचिकना मिश्रित हो जावे फिर इस में १२ सेर जल मिला दो यह मर्करी लोशन साढे बारह सौ अर्थात् १० प्रतिशत का मर्करी लोशन बन जावे जब इसे वरतना हो तो २५० सेर जल में डाल दो यह एक हजार प्रतिशत मर्करी लोशन तैयार हुआ, इस में हरा रंग पानी में घोल कर डाल देना चाहिए ॥

हरे रंग का प्रयोजन केवल यह है कि दिवारों आदि पर फेरते समय यह ज्ञात हो जावे कि कोई जगह खाली तो नहीं रह गई ॥

मर्करी लोशन इस प्रकार भी बनाते हैं ॥

परक्लोराईड आफ मर्करी (दाराचिकना) १० छटांक क्लोराईड आफ अमोनिया (नोशादर) साढ़े सात छटांक, हाईड्रो क्लोरिक एसिड (तेजाब नमक) ५० छटांक नीला रंग १/२ छटांक जल १७० छटांक सब को मिश्रित कर के रख छोड़ो। इस में से साढे तीन छटांक १ सेर जल में डालने से १/१००० शक्ती का मर्करी लोशन तैयार होता है, यह मर्करी लोशन यूंही पृथिवी पर थोड़ा २ सा छिड़क देना काफी नहीं है किन्तु इतना अधिक डालना चाहिए कि बह निकले, दीवारों और छत्तों को ऐसी चतुराई से धोना चाहिए, कि कोई छेद खाली न रह जावे, डिसइन्फेक्ट किए गए, घरों में फिर फैल जाने का यहि कारण कहा जाता है, कि मर्करी लोशन से कई स्थान धोए नहीं गए और वहां के प्लेग के कीट वहीं स्थित रहे। चूहों और और जन्तुवों आदि के छेदों और बिलों में अच्छी प्रकार लोशन को डालो तहखाना को भी लोशन से भली भांति शुद्ध करवाना चाहिए यदि दीवारें और फर्श पक्का अथवा लकड़ी का हो, तो केवल धो डालना चाहिए, यदि यह मट्टी का हो तो लोशन को अच्छी तरह डालना चाहिए, जब वह उस में रच जावे और डाल देना चाहिए मर्करी लोशन को इस प्रकार तैयार कर के जिन्हें रखने की आवश्यक्ता नहीं वह तुरन्त ही इस प्रकार बना लिया करें:—

दारचिकना आधी छटांक तेजाब नमक १ छटांक जल ३० सेर नीला रंग ५ रत्ती। जो मनुष्य ग्रामों में रहते हैं वह शीघ्र निम्न लिखित लोशन तैयार कर सकते हैं, दारचिकना १ छटांक नवशादर १ छटांक जल साठ सेर नमक २ छटांक नीला रंग ५ रत्ती इस से सारे घर को भली प्रकार शुद्ध कर देना चाहिए इस पर व्यय भी कम होता है। स्मरण रहे कि दारचिकना टीन लोहे आदि को खा जाता है इस कारण से लोशन को मिट्टी अथवा लकड़ी के बरतन में रखना चाहिए। इस से भी थोडे व्यय का (परन्तु ऐसा गुण कारक नहीं) एक और लोशन है जो पांच भाग नीला थोथा १०० भाग जल में मिश्रित कर हल करने से तैयार होता है निर्धन मनुष्य इस ही से अपना काम निकाल सकते हैं ॥ ५ भाग कारबालिक एसिड और १०० भाग जल भी डिसइनफेकटेन्ट है परन्तु इस का व्यय भी इस से अधिक है। फीनायल (Phenyle) में १०० भाग जल मिलाने से उत्तम कीटाणु घातक तैयार होता है परन्तु इसे दीवारों व फर्श आदि साफ करने में न लाया जावे इस लिए कि इस के बरतने से अत्यन्त दुर्गन्धि आती है, और शिर पीडा आदि रोगों के हो जाने का भय है, इसे केवल टट्टी मोरी आदि में प्रति दिन डालना चाहिए, वस्त्र भी धोने हों तो मर्करी लोशन से ही धोने चाहिएं। फीनायल से दुर्गन्धि बहुत आती है इस का वर्णन आगे आवेगा ॥

क्लोराईड आफ लाईम से भी बहुत दुर्गन्धि आती है, जिस

का सहना कठिन है अतिरिक्त इस के इस पर व्यय अधिक होने के कारण इस का कोई सेवन भी नहीं करता, चूना कली एक साधारण कीटाणु घातक है, दिवारों पर सफेदी करवा छोड़नी चाहिए, यह भी लाभ दायक है ॥

अभिप्राय यह है कि सब से उपयोगी डिसइन्फेक्टेन्ट मर्करी लोशन ही समझा जाता है इस से दूसरी श्रेणी में तेजाब गन्धक, परमैंगेनेट आफ़ पोटाश और जल से एक लोशन तैयार होता है, परन्तु यह भी प्रचलित नहीं है कारण कि तेजाब एक भयानक वस्तु है इस लोशन में बार २ हाथ डालने से हानि का भय है ॥

आप अब तो जान गए होंगे, कि प्लेग के दिनों में घरों को किस प्रकार शुद्ध कर लेना चाहिए, इस समय घर की सब वस्तुएं बाहर रख देनी चाहिएं, साधारण वस्त्रों को ऊपर लिखित मर्करी लोशन से ही धोकर सुखा लेना चाहिए, इस प्रकार जो शुद्ध न हो सकें उन्हें कई दिन धूप में रखना चाहिए, इस प्रकार और वस्तुवों को भी धूप में रखना चाहिए. जब सब वस्तुएं शुद्ध हो जावें फिर उस घर में रहना चाहिए, फिर भी ध्यान रखना चाहिए, जब कभी सन्देह हो तुरन्त घर को डिसइनफेकटेंट करना चाहिए ॥

कपड़ों को शुद्ध करने के वास्ते गन्धक की धूनी का सेवन किया जाता है, हमें इस बात के मानने में कुछ भी सन्देह नहीं कि गंधक का धुवां ऐसे कीटाणुओं के घात करने का एक उत्तम

कारण है, परन्तु यह धुवां अत्यन्त दुर्गन्धियुक्त और भयानक है, गन्धक का धुवां श्वास की कमी उत्पन्न करता है और फेफड़ों के लिए अत्यन्त हानिकारक है, जिस घर को डिसइन्फेक्टेंट करना हो उस में भी गंधक जलाई जाती है, और फिर डाक्टरों की शिक्षा है, कि उस घर में उस समय तक प्रवेश न करना चाहिए जिस समय तक गन्धक का धुवां बिलकुल न निकल जावे. इस बात का पूर्ण निश्चय है कि गन्धक आरोग्यता के लिए हानिकारक है, इस के स्थान पर जैसा कि मैं आगे वर्णन करूंगा, सुगन्धित पदार्थ अग्नि में डालने चाहिए, एक घर की शुद्धता के समय तो यह चौकसी हो सकती है कि जब तक धुवां निकल न ले तब तक प्रवेश न करें परन्तु जब नगरों और ग्रामों को शुद्ध करना है वहां इस योग पर चलना ठीक मालूम नहीं होता, और इसी प्रकार यद्यपि सम्भव है कि रोग जन्तु नाश हो जावें, परन्तु साथ ही ग्राम वासियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने में कोई सन्देह नहीं है ॥

जिस दुर्गन्धि को हम सहन नहीं कर सकते और जिस के निकट से हो कर जाना कठिन होता है, वहां रोग के कीटाणु बड़ी शीघ्रता से वृद्धि पाते हैं, और कहा भी जाता है कि यह रोग मलीनता का रोग है और अपवित्रता और दुर्गन्धि में इस के जर्म बलपूर्वक बढ़ते हैं इस लिए यह परिणाम निकालना ठीक मालूम होता है कि जो हमारे लिए सुगन्धि है वह इन जरमों को नाश करती है। अस्तु बजाए दुर्गन्धि के सुगन्धित पदार्थों

को जलाया जावे, तो परिणाम बिलकुल ठीक रहेगा सुगन्धित पदार्थों का वर्णन आगे किया जावेगा ॥

फिनायल भी एक उत्तम कीटाणु घातक है, परन्तु शोक की बात है कि यह भी गन्धक की तरह मनुष्य की स्वास्थ्यता पर बुरा प्रभाव डालने से खाली नहीं मालूम होता ॥

वज़ीराबाद में जब प्लेग पड़ी, तो फिनायल का खूब सेवन किया गया मोरियों के रास्ते फीनायल एक बड़े तालाब में पड़ती थी कहते हैं कि मछली आदि जीव थोड़े दिनों पीछे निर्जीव हो कर जल पर तैरने लगे, फीनायल का हाथ यदि मुंह को लग जावे तो चित्त सारा दिन घबराता रहता है, मुंह खुश्क हो जाता है, कंठ रुक जाता है कभी २ छाले भी पड़ जाते हैं इस लिए स्मरण रखना चाहिए कि सावधानता से इस का सेवन किया जावे ॥

फिनायल की ऐसी दुर्गन्धि होती है कि थोड़े समय में दिमाग चकराने लगता है, मुझे आश्चर्य है, कि किस प्रकार लोग इसे घरों में हर स्थान पर छिड़कते हैं, और पास रखते हैं, शायद आदी हो गए होंगे एक दुर्गन्धि को दूर करने के लिए दूसरी दुर्गन्धि को पैदा करना कोई उत्तम रीती सफाई की मालूम नहीं होती, मेरे विचार में शौचागार और मलीन मोरियों के अतिरिक्त और किसी स्थान पर फिनायल से काम न लेना चाहिए क्योंकि हर समय की इस की दुर्गन्धि दिल दिमाग को बहुत बुरी प्रतीत होती है इस के स्थान में यदि देशी फिनायल तैयार

किया जावे तो अत्युत्तम होगा, यह देशी फिनायल छिड़कने से कीटाणुओं का नाश करता है अधिकता यह है खाने से पाचन शक्ति को बढ़ाता है और कीटाणु घातक है, वह देशी फिनायल १ सेर उत्तम तीक्ष्ण सिरका में १ तोला असली हींग मिश्रित करने से फिनायल का काम देगा, हींग और सिरका दोनों कीटाणु घातक हैं यद्यपि हींग की गन्ध भी कई मनुष्यों को बुरी मालूम होती है परन्तु वह फिनायल के पासंग भी नहीं ॥

भोजन पाने के पीछे इस देशी फिनायल को १ से ३ माशे तक खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है, और रोग के कीटाणु नष्ट होते हैं, सिरका हींग के गुण भी आगे आवेंगे। काजलशमकन खलाफत अबासिया का प्रसिद्ध वैद्य लिखता है कि मकान में सिरका और हींग को छिड़कना रोगों से बचाता है ॥

(२) डिसइन्फैक्शन अग्नि द्वारा ॥

अब मैं उस शुद्धता की रीती का कुछ वर्णन करना चाहता हूं जो हमारे विद्वानों ने रोगों को दूर करने के लिए बनाई थी, इस को भारत वर्ष की बोल चाल में "हवन यज्ञ" कहते हैं इस को उन ऋषियों ने न केवल एक नगर के वास्ते किन्तु हर घर के वास्ते, बरन मनुष्य मात्र के लिए, न केवल रोग अवस्था में बलकि स्वास्थता में, न केवल नियत समय के लिए किन्तु सम्पूर्ण आयु के लिए नित्य कर्म्म नियत किया था, और यही कारण है कि पहिले समय में इस प्रकार के रोग कदाचित ही होते होंगे,

नवीन से नवीन भयानक रोगों का उत्पन्न होते जाना केवल इसी नियम के उठ जाने का फल है, हवन यज्ञ सुगन्धित पदार्थों को अग्नि में जलाने का नाम है, मर्करी लोशन कीटाणु घातक है, परन्तु इस से एक गांव नगर तो एक ओर रहा एक घर का भी पूर्ण रीती से शुद्ध होना अति कठिन बलकि असम्भव है, क्योंकि यह भी कदापि विश्वास नहीं किया जा सकता, कि कोई भी छेद या स्थान मर्करी लोशन से खाली नहीं रह गया, घरों दीवारों और फरशों में कई भाग धोने से रह सकते हैं, सम्भव है कि किटाणु उसी भाग में हों, जब धोना मजदूरों के आधीन होता है कब सम्भव है कि कई भाग विना धोए हुए न रह जाते हों, जितनी प्राकृतिक वस्तुएं देखने में आती हैं वायु व अग्नि सब से सूक्ष्म हैं वायु सुगमता से रूप धारण करने और सुगमता से त्याग करने का गुण रखती है जहां आकाश होने से खाली स्थान प्रतीत होता है वहां भी वायु स्थित है हर गृह के कोने २ छिद्र २ व छोटे २ सूराखों में भी विना परिश्रम पहुंच सकती है, जो वस्तु जलाई जाती है उस के प्रमाणु सूक्ष्म रूप में वायु में स्थित होते हैं फिर हम यदि ऐसे पदार्थों को जो सुगन्धित हैं (इस वास्ते जैसा कि पीछे लिखा जा चुका है कीटाणु घातक हैं) अग्नि में जलावें तो वह घर के हर कोने में पूर्ण हो कर सब कीटाणुओं को घात कर सकते हैं, यही एक रीती है जिस से पूर्ण शुद्धि की आशा की जा सकती है यदि इस के साथ शेष शुद्धियों के नियमों को भी वरता जावे तो रोग के आक्रमण का भय कदापि

नहीं रहता, जब प्लेग रोग युनान में आरम्भ हुआ, तो वहां के लोग भय भीत हो कर बुकरात की सेवा में उस का उपाय पूछने के लिए आए, बुकरात ने कहा कि सब नगर वासी अपने २ घरों से निकल कर मैदान में चले जावो, और नगर की चारों ओर सुगन्धित पदार्थ एकत्र कर के अग्नि लगा दो इतिहास बताता है, कि ऐसा ही किया गया और मरी वहां से दूर होगई। मेरा विश्वास है कि जिस गांव में प्लेग पड़े वहां ऐसा ही किया जावे, फिर प्रत्येक गृह में प्रत्येक मनुष्य अपनी सामर्थानुसार नित्य सुगन्धित पदार्थ जलाने आरम्भ करें, तो प्लेग का मूल नाश होजावे। गवर्म्मेन्ट से हम प्रार्थना करते हैं, कि वह इस प्रकार किसी एक स्थान में परीक्षा करके देख ले जहां और छोटी २ बातों का इतना अनुसन्धान किया जाता है, वहां इसकी परीक्षा में क्या हानि है,

मगर कौन सुनता है तूती की नक्कार खाना में ॥

मित्रवर आवो, हम सब मिलकर ऐसा करने का उद्योग करें जहां कहीं मन्द भाग से प्लेग पड़े वहां के मनुष्यों को चन्दा एकत्र करके बुकरात् हकीम की आज्ञानुसार कार्य्य करना चाहिए, फिर अमूल्य जीवन बच जाने की आशा है। कहते हैं, कि सन १६६६ में लण्डन में जो प्लेग उत्पन्न हुई थी, वह दैव योग से आग लग जाने के पीछे दूर हो गई थी, स्वयम् अङ्गरेज डाक्टरी के ज्ञाता इस विचार में सम्मिलत हैं, प्लेग के समय पर अग्नि से शुद्धि ही अत्युत्तम साधन है, यदि मैं भूल नहीं करता हूं, तो डाक्टर हाफकिन साहिब वर्तमान टीका ताऊन के अधिष्ठाता ने स्वयम किसी

स्थान पर लिखा है, कि हिन्दुओं की हवन की रीति इस रोग के लिए अति हितकर है, प्रायः रोग का उपाय डाक्टर लोग आज कल (Fumigation) अर्थात् धूनी की रीति प्रचलित कर रहे हैं, श्री मान्यवर डाक्टर भक्तराम जी ने एक अंगीठी निर्माण की है, जिसमें कोएले भर दिये जाते हैं, इसमें से तीक्ष्ण गरमी निकलती है, कहते हैं कि ११२ दर्जे की गरमी ताऊन उत्पादक कीटों का नाश कर देती है ॥

हम इस निर्माणित विचार के विरुद्ध नहीं हैं, निसन्देह यह रीति अत्युत्तम है, यदि इस के साथ ही सुगन्धित पदार्थ भी अग्नि में डाल दिये जावें तो और भी अच्छा हो। शुद्ध वायु सुगन्धित पदार्थों के परमाणुओं को लेकर कोने २ और छेद २ में होती हुई सूक्ष्म होने के कारण ऊपर को बढ़ेगी, और ऊपर की शुद्ध वायु उसका स्थान लेने के लिए नीचे आवेगी, इस प्रकार जबकि गरमी और सुगन्धित वस्तुऐं कीटाणुओं का नाश करेंगी, वहां आगे के लिये ग्रह में स्वच्छ पवन स्थित होगी। यदि यह रीति घर २ गांव २ में प्रचलित हो जावे, तो कोई वजह नहीं, कि प्लेग रोग का मूल नाश न हो जावे ॥

इस प्रकार वस्त्रों आदि को धूनी देकर शुद्ध कर सकते हैं, यह बात अवश्य स्मरण रखने योग्य है, कि अग्नि जब इस प्रयोजन से जलाई जावे, अती तीक्ष्ण होनी चाहिए ॥

औषधियें जो अग्नि में जलाने से कीटाणुओं का नाश करती हैं ॥

कपूर, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, गिलोय, नीम के पत्ते, निमोली नीम, फूल नीम, अगर, कुंदर, सिरस के वृक्ष की छाल, सरसों श्वेत, बायबिडंग, नाग केसर, चिरायता, शाहतरा, धनिया खुश्क, खस, गुग्गल, धूप की छाल, अस्पन्द (हरमल) हींग, कपास के बिनौले, नागरमोथा, मुश्क वाला, आक के फूल, बकायन की छाल, नयाज़बो, तुलसी की जड़, नीलोफर, फूल गुलाब, दूब पतवाड़, चम्बेली के पत्ते, कमलगट्टा, नगन्दबूरी, नीलकण्ठी, कस्तूरी केशर, अम्बर, जायफल, लवंग, जावित्री, लोबान कोड़िया, निरवसी, पेठा, बेदमुश्क, किशमिश, छुहारा, बुड्ढा बुढ्ढी, ब्रह्मी, कोलटार, आदि २ इन में से जितनी वस्तुऐं मिलें लेकर कूट रक्खें और नित्य जलाया करें, परन्तु काफूर चन्दन नीम की पंचाग गुग्गल शहतरा धूप लकड़ी मुश्क वाला, अगर नागरमोथा, श्वेत सरसों, बायबिडंग लोबान के प्रकार की वस्तुऐं अवश्य मिश्रित करनी चाहिऐं ॥

यहां इतनी और प्रार्थना कर देनी आवश्यक समझी जाती है, कि इन सब से बढ़कर रोग कीटाणु घातक, पवन शोधक विष नाशक घी है, कोई विष हो घी दूध पिलाना एक उत्तम उपाय कहा जाता है, अस्तु इन सब वस्तुओं में घी को भली भान्ति मिश्रित करना चाहिए, ताकि जहां अग्नि की गरमी अधिक हो,

वहां दुर्गन्धि को दूर करने वाली वस्तुवें भी अधिक हो जावें ॥

इस के अतिरिक्त यथासामर्थ्य घी डालना चाहिए और इसे धन का व्यर्थ जाना न समझना चाहिए, किन्तु एक उत्तम कार्य्य समझना चाहिए, जिस से स्वास्थ्य स्थिर रहे और अपना ही नहीं किन्तु सब सम्बन्धियों का, तो क्यों इस वस्तु का प्रयोग न किया जावे ॥

डिस इन्फेक्शन की एक नई रीति ॥

बम्बई में डाक्टर इडलजी नामक एक पार्सी ने तजरुबा किया कि प्लेग के रोग से गृह को शुद्ध करने के लिए हाइड्रो कारबन एक अत्युत्तम वस्तु है, उजियाले के लिये कोयले से जो गैस बनाई जाती है, तो कोयले से उन भागों को निकालने के पीछे जो प्रकाश गैस के लिए काम में आता है, शेष जो फोक सा रह जाता है, उसमें बहुत अधिक हाइड्रो कारबन का भाग रहता है ॥

डाक्टर इडलजी इस शेष पदार्थ को गृह के फर्श पर विछा देते हैं, और चूहों के बिलों में भी डाल देते हैं, क्योंकि इसे जितना चाहो, बारीक पीसलो, उसके पीछे इसे अग्नि लगा देते हैं । एक तो इससे कमरे में गरमी अधिक होजाती है दूसरे उसका धूवां जो कीटाणुओं के लिए घोर विष है, कमरे की दिवारों के छोटे से छोटे छेदों में भी चला जाता है, धूवां भारी भी बहुत होता है । वर्णन किया गया है, कि बम्बई के जिन २ मकानों के अन्दर इस क्रिया से शुद्धि कीगई है, एक में भी फिर प्लेग का रोग नहीं हुवा, दूसरी रीतियों से प्लेग पड़े हुवे घरों में शुद्धता अच्छी तरह नहीं

हुई क्योंकि कलकत्ते के बारे में वहां के प्लेग डाक्टरों के तजरुबों से मालूम हुवा था कि जहां एक बार प्लेग हुई उस मकान को ६—६ बार भी शुद्ध करने के पश्चात प्लेग के फिर प्रगट होने का भय दूर नहीं हुवा, और फिर रोग उत्पन्न हुवा, परन्तु बम्बई में हाइड्रो कारबन से एक बार शुद्ध करने से फिर रोग उस मकान में नहीं देखा गया, यह तजरुबे बम्बई में डाक्टरों के सामने किए गए हैं ताकि किसी प्रकार का संशय न रहे ॥

प्लेग से बचने के लिए रुधिर को शुद्ध रक्खो क्योंकि रुधिर में रोग जन्तु घातक शक्ती है ॥

रुधिर में और पदार्थों के अतिरिक्त दो प्रकार के दाने पाए जाते हैं, जिनको अंग्रेजी में बलड कार्पस्लज़, (Blood corpuscles) कहते हैं। एक लाल दूसरे श्वेत, रुधिर के श्वेत परमाणु ईश्वर ने इस वास्ते उत्पन्न किये हैं कि यदि कोई मलीन पदार्थ या परमाणु शरीर में प्रवेश होजावे, यह उनका नाश करदें। जिस समय प्लेग के जर्म शरीर में प्रवेश करते हैं, तो श्वेत रक्त के परमाणु (White Blood Corpuscles) इनका सामना करते हैं, श्वेत परमाणु एक लेसदार पदार्थ से बने होते हैं, वह अपनी हरकत से लम्बे होकर कीटाणुओं के इधर उधर लिपट जाते हैं, और उन्हें चारों ओर से यहां तक दबाते हैं, कि वह नष्ट होजाते हैं, यह एक प्रकार का युद्ध होता है, यदि कीट बहुत संख्या में हैं,

और श्वेत परमाणु पूर्ण नहीं अथवा शक्तिमान नहीं हैं, तो जर्म प्रबल होजाते हैं, इसके विरुद्ध यदि परमाणु प्रबल होजावें तो जर्म नष्ट होते हैं, और रोग कोई नहीं होता, अंग्रेज़ों ने तजरबा करके यह सिद्ध किया है, कि अलकाहल और अफ़ीम खून के श्वेत परमाणुओं को बढ़ाते हैं, हमें आश्चर्य्य है, कि डाक्टर ऐसी बात क्यों विचारते हैं, जो कि एक ओर लाभ पहुंचा कर दूसरी ओर स्वास्थता को बिलकुल ही मिट्टी में मिला देती है ॥

साफ प्रगट है कि रुधिर जितना स्वच्छ और बलवान होगा उतने ही यह लाभ दायक परमाणु शक्ति वाले होंगे, फिर क्यों न श्वेत परमाणुओं को शक्तिमान और उचित संख्या में रखने के लिए रक्त शोधक औषधियों का सेवन किया जावे, संसार इस समय मान चुका है, कि रक्त शोधक औषधियों का सेवन करते रहना एक अति उपयोगी प्लेग से बचाने वाला साधन है ॥

यहां उचित मालूम होता है, कि कुछ रक्त शोधक औषधियों का वर्णन किया जावे, जो प्लेग के आक्रमण को रोकने के लिए लाभदायक सिद्ध हुई हैं ॥

(१) नीमकी नमोली, नीम के पत्ते, नीमकी छाल, नीम की टहनी, काली मिरच यह सब वस्तु समान भाग ले, कूट छान कर रख छोड़ो, और छः माशा ताजा पानी के साथ या असली शहद के साथ खावें ॥

(नोट आवश्यक)—जैसाकि ऊपर के लेख से प्रगट होता है, रुधिर के शुद्ध होने के साथ उसका अधिक होना भी आवश्यक

है, इस लिये इस औषधि के साथ २ दूध घी का सेवन करते रहना चाहिए, ताकि रुधिर उत्पन्न हो और साफ भी हो ॥

(२) नीम के तेल के विषय में एक डाक्टर की सम्मति है, कि यह greatest Blood purifier अर्थात् सब से अधिक रक्त शोधक है । इस तेल की दो बून्दों को प्लेग के दिनों में खा छोड़ना लाभदायक सिद्ध हुवा है ॥

(३) बूअली सीना का कथन है कि जहां इस प्रकार का रोग आरम्भ हो, जुलाब ले लेना चाहिए और सारक औषधियों से शरीर को सब रोग उत्पन्न करने वाले मवाद से पाक रखना चाहिए । इस विचार से निम्न लिखित योग उपर्युक्त नं० १ के स्थान पर उत्तम प्रतीत होता है ॥

नीम के ऊपर लिखित ५ भाग प्रत्येक तीन २ माशा, रक्त चन्दन २ माशा, आमला ४ माशा, हरड़ ४ माशा, बहेड़ा की छाल ४ माशा, चरायता ३ माशा, कमलगट्टा ३ माशा, आक के फूल १ माशा, फटकरी १ माशा, नीलकंठी व नगंदबौरी यदि मिल सकें तो २–२ माशा सब कूट पीस के रक्खें, खुराक २, ३ माशा जल के साथ अथवा शहद असली के साथ खावें, और दूध घी का सेवन अधिक रक्खें ॥

इसी प्रकार बीसीयों योग और लिखे जा सकते हैं । पुस्तक बढ़ने के भय से इतना ही लिखा गया है, इनका वृतान्त प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों में आया है ॥

(४) मन को दृढ रक्खो ॥

हैज़ा ताऊन आदि अधिक भयानक होने का एक कारण यह भी है, कि मन को दृढ़ नहीं रखते । रुधिर भ्रमण दिल पर निर्भर है, इस लिए दिल का दृढ़ रहना ऐसे रोगों से बचाए रखता है । दिलकी दुर्बलता से रुधिर भी दुर्बल होजाता है, और हर एक रोग शीघ्र ही प्रभाव कर जाताहै, क्योंकि रुधिर के श्वेत परमाणु अति निर्बल और सामना करने के योग्य नहीं रहते, दिल की शक्ति एक ऐसी पबल शक्ति है, कि जिसका सामना बीसियों औषधियां नहीं कर सकतीं । किसी मरी के दिनों में जिन्हों के दिल की शक्ति निर्बल होजाती है, वही रोगग्रस्त हुवा करते हैं, मेरे एक मित्र ने एक बार मुझ कहा था कि जिन दिनों में लाहौर में हैज़ा था, मैं दफ्तर से आ रहा था कि मेरा दिल खराब हुवा और मुझे यह भय उत्पन्न हुवा कि मेरे पर हैज़ा ने आक्रमण कर लिया है और अब मैं बच नहीं सकता सारी रात यह ख्याल मुझे आता रहा, डाक्टर बुलाए गए, घर के सब लोग सारी रात जागते रहे, प्रातः काल होने तक मेरा भय कुछ २ दूर हुआ परन्तु इसका यह परिणाम हुवा कि मैं छै मास तक रोग ग्रसित रहा । एक बार मुझे एक बृद्ध पुरुष ने कहा कि एक मनुष्य को सांप ही सांप दिखाई दिया करते थे, मुझ पर उसका विश्वास था, वह मेरे पास आया, मैंने एक कागज़ पर सर्प की मूर्ति बना दी, और बहुत कुछ उस पर कुरजी पढ़ने और धूनी देने के बाद कहा कि इसको चौरास्ता में जाकर जला दो, जो सर्प दिखाई देते हैं साथ

ही दग्ध हो जावेंगे उसने ऐसा ही किया, उस के पीछे उसे सांप न दिखाई दिए, इस लिए कि विश्वास ने उसके मन को दृढ़ कर दिया था, यंत्र मंत्र स्वयम कुछ शक्ति नहीं रखते और एक व्यर्थ लकीरों अथवा अंकों के आतिरिक्त इस में कुछ नहीं होता, जिनका दृढ़ विश्वास होता है, वह अपने विश्वास से ही स्वस्थता प्राप्त करते हैं ॥

अरबी में एक कहानी विख्यात है, कि एक मनुष्य काहरा से आ रहा था, इसे रास्ते में एक पथिक मिला जो काहरा को जाता था, पहिले मनुष्य ने पूछा कि आप कौन हैं और आप कहां जाते हैं, उसने कहा मैं 'हैजा' हूं, काहरा को जाता हूं। पहिले मनुष्य ने पूछा वहां क्यूं जाते हो? हैजा मियां ने उत्तर दिया कि तीनहजार मनुष्यों का घात करने के लिए। इसके थोड़े दिन बाद वही मनुष्य काहरा को जारहा था कि हैज़ मियां फिर रास्ते में मिले और पथिक ने पूछा कि आप फरमाते थे कि ३००० तीन हजार मनुष्य मारूंगा, आपने तो ३०००० तीस हजार मनुष्य मार डाले. सम्भव है कि यह एक कहावत ही हो, परन्तु इसका परिणाम सार्थक है, यदि हर एक मनुष्य इस पर विचार करे तो रोग कम होजावे, हैजा जी ने जो उत्तर दिया वह यह है:—

"मैंने तो केवल ३००० हजार ही मनुष्य मारे, शेष भय से ही मर गये", अस्तु, इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि प्लेग क्यों आवे यदि शरीर रक्षा के आवश्यक नियमों का पालन करते हुए स्वास्थ्य के नियमों पर चलतेहुए दिलको मजबूत रक्खें ॥

पपीता ॥

(५) पपीता भी प्लेग के भय से बचाने वाला उत्तम पदार्थ सिद्ध हुआ है । यह एक वृक्ष के फल का बीज होता है, बहुत सख्त और भूसले वर्ण का बड़े बेर के बराबर होता है. और नगर में पंसारियों से मिल सकता है, आजकल लोग प्रायः इसे पास रखने लग गए हैं । इस लिए नकली पपीता भी बिकने लगगया है । इस लिए अच्छी तरह देख भाल कर लेना चाहिए, अंगरेजी में इसे अगनाशया भी बोलते हैं. यह कुचले की किस्म का है, कहते हैं कि जो मनुष्य इसे शरीर पर धारण करता है, वह प्लेग से बचा रहता है, कलकत्ता के डाक्टर महीन्द्रो लाल सरकार स्वर्गवासी इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं, और डाक्टर महीन्द्रो लाल जी ने अपनी पुस्तक में एक वृतान्त दो भाईयों के विषय में लिखा है, जो इकठे रहते थे, इन में से जो पपीता का बरताव नहीं करता था उसे प्लेग होगई, दूसरा जो पपीता को अपने शरीर में धारण किए रहता था वह बचा रहा, इसके बीचों बीच बरमे से छेद करा लिया जाता है और फिर इसे कंठ या बाजू में बांध लिया जाता है, इस प्रकार कि शरीर से लगा रहे, यह भी हो सकता है कि एक २ कंठ और भुजा में और पांव में कलाई में धारण किया जावे । एक दो मास सेवन करने के पश्चात् बदलने की आवश्यकता होती है. इसके बांधने से कोई कष्ट नहीं होता, प्लेग का आक्रमण रोकने के लिए लाभदायक सिद्ध होचुका है, दो चावल के लगभग अर्क गुलाब

में रगड़ कर कभी २ पी लेना अत्यन्त लाभदायक है। पपीता प्लेग का अत्युत्तम उपाय सिद्ध होचुका है ॥

कड़ियांवाला ग्राम से एक भद्र पुरुष लिखते हैं:—

"कड़ियां वाला जिला गुजरात में प्लेग का बहुत वेग है, अगरचिह इस रोग के वास्ते सब प्रकार की औषधियें निष्फल सिद्ध हुई हैं, परन्तु जो मनुष्य पपीता का सेवन शरीर रक्षा के लिए करें वह अवश्य इस प्राणघातक रोग के पंजे से बच सकते हैं, मैंने इसकी परीक्षा कई रोगियों पर की जो ईश्वर की कृपा से निरोग होगए, प्रिय पाठक गणों के लिए इसका संक्षिप्त वृतान्त लिखना उपयोगी समझता हूं, और उम्मीद है कि प्रिय पाठक इसे पढ़कर इसका सेवन करेंगे, अर्थात् निर्धन मनुष्यों को पपीता (Papita) के सेवन की शिक्षा देंगे, पपीता (Papita) किसी वृक्ष का फल है जो शायद यूरोप देश में होता है, तोल प्रमाण २ माशे वर्ण स्याही मायल और अत्यन्त सख्त स्वादिस का स्वाद अत्यन्त कड़वा प्लेग के दिनों में इस में छिद्र निकलवा कर और धागा डलवाकर बाहु अथवा कंठ में धारण करलो, यदि कोई मनुष्य प्लेग के रोग में ग्रस्त हो जावे तो अर्क सौंफ में दो रत्ती रगड़ कर पिला देवें, और गिलटी पर लेप करें, इस प्रकार दिन में तीन चार बार करें, उलटी होजाने की अवस्था में शीघ्र ही फिर रगड़ कर दिया जावे, सूक्ष्म आहार दूध आदि देवें, तीक्ष्ण वस्तुओं से बचा कर रखना चाहिए। ईश्वर की कृपा से

आरोग्यता हो जावेगी, मेरे अपने तजरुबे से प्रति शत ९० स्वास्थ्य प्राप्त कर चुके हैं" ॥

वैद्यक की पुस्तकों में पपीता विषघातक लिखा है, हैजा, उल्टी, पेचश, दर्द मेदा, मूर्च्छा को दूर करता है। सर्प का विष और विषैले जीवों का विष अथवा रोग जन्तुओं को दूर करता है। मुख में रखने से छाती की कफ को दूर करता है। अखबार सतउपदेश के सम्पादक लिखते हैं, कि हम से आज तक सैंकड़ों मनुष्यों ने मंगवाए हैं जिनमें से सैंकड़ों मनुष्यों ने इतला दी कि पपीता से प्रायः रोगियों को स्वास्थ्य प्राप्त हुई"। पपीता एक अत्यन्त सस्ती वस्तु है और उपयोगी भी इस में विचित्र है, उचित है कि पाठक गण इसे परीक्षा में लाकर लाभ उठावें ॥

नीम ॥

(६) नीम भी प्लेग से रक्षा के लिए अति हितकर सिद्ध हुई है, इसका धूवां कीटाणुओं का नाश करने के लिए बड़ा ही लाभ दायक है। नीम के पञ्चांग का योग शरीर रक्षक लिखा जा चुका है, और यह भी लिखा जा चुका है, कि घर की शुद्धि इसके जलाने से खूब होजाती है, अखबार लेन्सिट में से एक लेख नीचे लिखा जाता है:--

" नवाद स्थान में प्लेग बहुत दिनों से फैल रही है, भिड़ोच कलक्टरी में अभी तक जारी है, नगर बड़ोदा एक बीच का स्थान है इस प्रकार कि भिड़ोच एक ओर वस्दूद (यहां भी प्लेग है) और नवाद दूसरी ओर स्थित हैं, इन प्लेग ग्रसित भागों से नित्यम्

प्रति सैंकड़ों की गणना में मनुष्य बड़ोदा नगर में आते हैं, तो भी बड़ोदा अभी तक प्लेग से बिलकुल बचा हुवा है, कुदरती तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है, कि अब तक बड़ोदा नगर प्लेग से किस प्रकार बचा हुवा है ? बड़ोदा में एक विशेष प्रबन्ध किया गया है, जिस घर में मृत्यु हुई हो, चाहे वह किसी रोग से हो उस घर में और उसके आस पास के घरों में नित्यम् प्रति दस दिन तक नये नीम के पत्ते खुश्क जलाते थे" ॥

रियासत बड़ोदा के इन भागों में जहां प्लेग फैली वहां यही प्रबन्ध किया गया, और ताऊन बिलकुल जाती रही, और साथ ही नीम की गोलियां खाने को दी जाती हैं, नीम को कूट छान कर शहद में मिला के जंगली बेर के समान गोलिएं बांध रक्खो, और प्लेग के दिनों में इसका सेवन किया करो, जैसा कि पीछे वर्णन हो चुका है, बहुत से डाक्टरों की यह राएं हुई हैं, कि पिस्सू, मच्छर, प्लेग को उत्पन्न करते हैं, उनके लिये भी यह कैसा उपयोगी है, क्योंकि नीम मच्छरों को बिलकुल दूर करता है ॥

मिस्टर आर० डी० सिंह, एल० टी० एम० एस० मैडिकल प्रोफैसर जोधपुर लैन्सट अखबार लेन्सिट को एक लेख में लिखते हैं, मेरे ग्राम में प्लेग का १९०१ में दौरा आरम्भ हुवा, और लगभग १०० मनुष्य प्लेग से मरे, ग्राम निवासियों ने अपने २ घरों के सब भागों और कोनों २ में अधिकता के साथ नीम के पत्तों का जलाना आरम्भ किया जिसका परिणाम यह हुवा कि प्लेग वहां से जाती रही, प्लेग वाले घरों के द्वारों पर और फरश

पर ताजा नीम की शाखाएं लटका दी गई व सजा दी गई, यह योग परीक्षा करने के योग्य है, क्योंकि न तो इसमें अधिक व्यय होता है और न किसी को इसमें जातीय विचार होसकता है, इस से सिद्ध हुवा है कि नीम न केवल शरीर रक्षा के लिए बल्कि विशेष कर प्लेग में भी अति लाभदायक है" ॥

नीम की नमोलियों का तेल खालिस या सरसों के तेल में मिलाकर स्नान से प्रथम शरीर पर मलने से प्लेग से बचाता है, ऐसे मनुष्यों से प्लेग के परिमणु छूते ही नष्ट होजाते हैं, और शरीर में प्रवेश करके रोग पैदा नहीं कर सकते ॥

जनाब ऐडवर्ड डारविंग साहिब ऐम० डी० फार्मेकोपिया आफ् इन्डिया में लिखते हैं, कि नीम की नमोलियों के तेल में यह गुण है कि वह कीटों को शीघ्र नष्ट कर देता है । इसके साथ यदि यह तेल नित्य प्रातः समय खाया भी जाय तो पूर्ण विश्वास है कि प्लेग आक्रमण न कर सके ॥

मालिश के लिए खालिस नीम के तेल के स्थान में निम्न लिखित तेल भी अत्यन्त गुण दायक है, वह तेल शरीर पर कोई फिन्सी, फोड़ा नहीं होने देता, और खाल को नर्म और शुद्ध रखता है, खुजली आदि किसी प्रकार का रोग ठहर नहीं सकता ॥

(ज) नीम के ताजा पत्तों का रस १ सेर, दही का जल एक सेर, (दही को सम जल में घोलकर थोड़ी सी राई और नमक मिला कर रक्खें, जल स्वयम् पृथक् होजावेगा) तेल सरसों ६ सेर, दूध १ सेर निम्न लिखित वस्तुओं का काढ़ा १ सेर, सब नरम

आंच पर पकावें जब तेल रह जावे उतार कर छान रक्खें, बस फिर सेवन किया करें ॥

काढ़े के लिए यह वस्तुएं हैं, गिलोय, मजीठ, हलदी, चिरायता, शहतरा, उनाब, बाबची, श्वेतचन्दन प्रत्येक वस्तु आठ २ तोला, रक्त चन्दन ४ तोला १० सेर जल में पकावें, जब सवा सेर रह जावें तब उतार लें, मल छानकर दूसरी वस्तुओं में डालें । संक्षिप्त यह कि प्लेग के दिनों में नीम के तेल की मालिश करनी चाहिए और नीम के पत्ते दो माशा, अथवा नीम का तेल दो बूंद, या नीम की नमोलियों का हरा छिलका, अथवा नीम का पंचांग ३ माशा, रोज़ खाने चाहिएं, इससे रुधिर में एक ऐसा गुण पैदा होगा, कि प्लेग के कीट कभी अपना प्रभाव न कर सकेंगे, बल्कि शरीर में प्रवेश होते ही नष्ट हो जावेंगे, हमारा विचार है कि यदि हर महीना के आठ दिन इसका सेवन किया जावे तो ईश्वर चाहे फिर प्लेग का आक्रमण कदापि न होगा ॥

आक (मन्दार)

७ आक अर्थात् मंदार जिसे फारसी में खरग अरबी में उशीर कहते हैं, किसी विद्वान् वैद्य का कथन है कि जिस देश में आक और नीम पाए जावें आश्चर्य्य हैं कि वहां के मनुष्य बीमार हों, तिब्बी दुनियां में आक एक अत्यन्त लाभकारी वस्तु है, बहुत से गांवों में जहां प्लेग से पीड़ित मनुष्यों ने आक का दूध दो बूंद खाया और पत्ते गिल्टी पर बांधे रोग का नाश हुवा ॥

सब रोगों के परमाणु नष्ट करने के लिए आक अमृत है। आक का फूल पाचक है, और रोग मेदा के लिए लाभदायक है, पेट के कीटों को नष्ट करता है, पञ्जाब में यह रीति है कि जब बालक उत्पन्न होता है तो प्रसूतगृह के ऊपर आक रक्खा जाता है, खियाल है कि यह प्रसूत और बालक को रोग से बचाए रखता है, और भूत आदि को नज़दीक नहीं आने देता। ताउन के विषय में किसी दूसरे रिसाले में सिद्ध करूंगा कि यह भूत किस का नाम है, यहां केवल इतना लिखना ही ठीक है, कि भूत वैद्यक शास्त्रों में जर्म्ज़ अर्थात् रोगों के उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को कहते हैं। आजकल भूत के व्यर्थ अर्थ सिद्ध हो रहे हैं, रोग के कीटाणुओं से बचने के लिए पहिले विद्वान आदमी ऐसा किया करते थे, और वही रीति अभी तक चली आती है, अस्तु प्लेग के दिनों में आक को उखाड़ कर छत पर फेंक छोड़ना चाहिए आक में कीटाणुओं के नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है, आक का घर में जलाना अत्युत्तम रोग का रक्षक है, खाने के भी इसमें कई योग बनते हैं, जो प्लेग से रक्षा करने का काम देते हैं, पुस्तक बढ़ने के भय से अधिक नहीं लिखे जा सकते। मिश्रिताध्याय में एक दो वर्णन किये जावेंगे॥

दरोनज अकरबी॥

दरोनज अकरबी युनानी दवा है, प्लेग के दिनों में दरोनज अकरबी को कई मनुष्यों ने सेवन किया, वह इसे बहुत गुण दायक बतलाते हैं। शेखुल रईस बूअली सेना के हृद्य औषधियों में इसका वर्णन किया है, इसके गुण दिल की शक्ति और चित की प्रसन्नता

के लिए बहुत उत्तम है, और सब विषों का नाशक है, और दरदों का जो कि गलीज मुवाद से हों नाश करने वाला है, जब गर्भिणी के शिर में बांधें सन्तान सुख से उत्पन्न होती है, ऐसा ही उसका पहनना गर्भिणी को गर्भपात और दूसरे रोगों से बचाए रखता है, विष को दूर करने वाला व बिच्छू के काटने में लाभ दायक है, और गर्भरक्षक है, पागलपन, उन्माद, मालीखोलिया, पक्षाघात व अर्दितवात (लकवा) के लिए लाभदायक है. इसे गृह के द्वार पर लटकाने से प्लेग आदि रोगों से बच सकते हैं, जो इसे कमर में बांधे उसे स्वप्न दोष नहीं होता. लोगों का तजरुबा इस बारे में यह है कि घर में कभी २ दरोनजअकरबी को रखना चाहिए यह प्लेग के कीटाणुओं का घातक है ॥

अन्य तजुरबा करने वाले लिखते हैं, कि याकूत (चूनियां) व मूंगा व दिरोनज को पास रखने से ताऊन नहीं होता ॥

निरबसी

निरबसी या जदवार में भी ईश्वर ने बहुत से रोगों के लिए आश्चर्य्य जनक शक्ति रक्खी है. यह एक जड़ी होती है, कड़वी स्वाद वाली, उत्तम वह है जो काले वर्ण की और अन्दर से बनफ्शा के रंग की हो। इसमें विषों को दूर करने की शक्ति इससे स्पष्ट प्रतीत होती है, कि यह प्रायः विष अथवा बच्छनाग के निकट उत्पन्न होती है, जब विष कि (जो बड़ा भयानक विष है) के निकट यह उगी हुई होती है, उसका जहर बहुत ही कम रह जाता है, शोक यह है

कि असली निरबसी भी पपीता व दिरोनजअकरबी की तरह कम मिलती है, कई उन जड़ों को जो निरबसी की तरह की होती हैं, रंग करके निर्बसी जदवार कहकर बेचते हैं, यह दिल दिमाग और जिगर को बल दायक होने के कारण प्लेग से रक्षा करने वाली है, सब विषों की (गरम हो या सरद) घातक लिखा है। उस के लाभ बहुत हैं यदि सब का वर्णन करें तो एक और इतना बड़ा रिसाला चाहिए, अत्यन्त आवश्यक बातें वर्णन करता हूं। निरबसी ३—४ रत्ती गाय के दूध में घिस कर पीना प्लेग से बचाने वाला है, निम्न लिखित योग भी अति उपयोगी है:—

कचूर, हलदी, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, गिलअर्मनी, निरबसी सम भाग बारीक पीस कर अर्क गुलाब में पीस चने प्रमाण गोलियां बांधे, नित्य अर्क गुलाब, लस्सी या दूध के साथ खा छोड़ें, ईश्वर चाहे प्लेग से बचे रहेंगे। स्मरण रहे कि यह गोलियां प्लेग के लिए भी बहुत हितकर हैं। जब रोग प्रगट हो, तीन २ घंटा बाद एक २ गोली खानी आरम्भ करो। निरबसी को घिस कर लगाना सब प्रकार के फोड़ा फुन्सी व प्लेग का भी नाशक है। युनानी पुस्तकों में निरबसी को बहुत हितकर लिखा है। सिरका और हींग के विषय में पीछे वर्णन किया गया है, कि यह अत्युत्तम रक्षक है, उत्तम अंगूरी सिरका को कभी २ पीना कुछ जरमों को नष्ट कर देता है, और इस प्रकार के रोगों से बचाए रखता है। सिरका और हींग को मिलाकर घर में छिड़कना फिनाईल से भी अधिक काम देता है॥

चूना व कोयला

चूना और कोयला में वायु को शुद्ध करने और दुर्गन्धि को दूर करने की शक्ति ईश्वर ने दी है, चूना दुर्गन्धित कीटों को मारता है और रोग के जन्तुओं को नष्ट करता है, यही कारण है के प्लेग के दिनों में अंग्रेजों की कोठियों की सीढ़ियों आदि पर आप चूना बिखरा हुआ देखेंगे। घर में चूनेसे जो सफेदी की जाती है, वह जहां कि सौन्दर्य्य बढ़ाती है, वहां उस का विशेष तात्पर्य्य दुर्गन्धि को दूर करना और वायु के अशुद्ध परिमाणुओं को नष्ट करना है, परन्तु यह मतलब जभी ठीक होसकता है, जब कि साल में दो तीन बार सफेदी करवाई जावे और उत्तम तो यह है कि पहिले चूना को खुरच कर उतार लेना चाहिए और दूसरी बार नई सफेदी की जावे, उतारी हुई सफेदी को बाहर फेंक दिया जावे॥

कोयला में दुर्गन्धि को दूर करने की अद्भुत शक्ति है। कोयला अपने से ९० हिस्से अधिक प्राण घातक वायु को शुद्ध कर सकता है। कोयला को टोकरी में (फैला कर) पाखाना, मोरी आदि दुर्गन्धि युक्त स्थानों में रख छोड़ना दुर्गन्धि नाशक है। मुरदे को कोयलों के मध्य में रखने से दुर्गन्धि शीघ्र उत्पन्न नहीं होती। स्मरण रहे कि पाखाना में जो कोयले रक्खे जावें, वह पन्दरह बीस दिन के पीछे बदल देने चाहिएं। कोयलों को पहले जला देना अच्छा है। यह दोनों वस्तु कितने थोड़े मूल्य की हैं, यदि इस पर भी लोग लाभ न उठावें, तो उन की कितनी मूर्खता है, रोग के दिनों में इन दोनों वस्तुओं से बड़ा लाभ होसकता है॥

जहर मोहरा

ज़हर मोहरा पत्थर आद है। इस में बड़ा गुण यह है कि सब प्रकृतियों के मुवाफिक है, वीर्य बढ़ाता है, दिल और शरीर के अंगों व पट्ठों को बल देता है, प्लेग रक्षक है, और मरी रोगों का नाश कर्ता है। माशा डेढ़ माशा जल में घिस कर दूध के साथ प्रातःकाल खा लेना चाहिए, दिल को बल देने व विष को नाश करने के लिए अत्युत्तम है, और शरीर को रोगों से बचाने के लिए बहुत अच्छा है। प्लेग पर भी सेवन किया जा सकता है, परीक्षा इस की यह है कि हल्दी को पत्थर के ऊपर पीसें और इस के पीछे ज़हरमोहरा को घिसें, यदि यह लाल वर्ण होजावे तो अत्युत्तम है॥

सर्प, बिच्छू आदि के विष को दूर करता है, कहते हैं कि यदि जल में घिस घोल कर सांप के मुंह में डाला जावे तो सांप मर जाता है, किसी रिसाले में फिर इस का वर्णन करूंगा, कि सर्प का विष और प्लेग का विष मिलते जुलते हैं, जो सांप के विष के दूर करने वाली औषधि है, वह प्लेग के वास्ते भी गुण कारक है। पस ज़हरमोहरा खताई प्लेग का नाश करता है, और इस को आगामी प्लेग के रोकने के लिए ईश्वर ने भेजा है, निम्न लिखित योग भी अति हितकर है॥

ज़हरमोहरा खताई ३ माशा, गुलाब के फूल २ माशा, धनिया खुश्क ७ माशा, खुरफा पिसा हुआ ७ माशा, श्वेत चन्दन ७ माशा, गावज़बान ३ माशा, तबाशीर ३ माशा, कस्तूरी डेढ़

माशा, पहले ज़हरमोहरा को अर्क केवड़ा में खरल करें और औषधियें मिला कर मिश्री ७ तोला, और शहद ५ तोला, सब को मिला लें, मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक, नीम अथवा गुलाब के अर्क में प्लेग के दिनों में खाने से आक्रमण से बचा रहता है और अव्वल दरजे का दिल को बल देने वाला है ॥

कर्पूर

काफ़ूर की जितनी प्रशंसा की जावे, थोड़ी है । अव्वल दर्जे का चित्त प्रसन्न रखने वाला होने के कारण प्लेग से बचाने वाला है, इसमें बड़ा गुण यह है कि इस के परमाणु भिन्न२ होकर वायु में प्रवेश करते हैं । वायु में प्रवेश करते ही जरमों का नाश करते हैं, इस का जलाना भी लाभदायक है और पास रखना भी उपयोगी है । बीमारी के दिनों में काफ़ूर को हर समय अपने पास रखना चाहिये, और उसे हवा लगते रहना चाहिए । काफ़ूर, श्वेत चन्दन, धनियां खुश्क पीस कर एक शीशी में डाल लें, और इस में अर्क गुलाब डाल लें, फिर काक से बन्द करके अपने पास रक्खें और कभी २ सूंघते रहें ॥

निम्नलिखित योग और भी उपयोगी है ॥

बनफशा, गुलाब, नीलोफर, श्वेत चन्दन, धनियां खुश्क, रक्त चन्दन, काफ़ूर, अर्क केवड़ा, या वेदमुश्क, सब वस्तुओं को कूट छान कर अर्क केवड़ा और बेदमुश्क में मिला रक्खो, कभी २ इस की सुगन्धि लेते रहो, जब दिल खराब हो इसे सूंघ

लो, इस से दिल की शक्ति बढ़ती है, रक्त शुद्ध होता है, कीटाणु आदि यदि प्रवेश भी करें तो मर जाते हैं ॥

कर्पूर की माला पहनना एक पंथ दो काज है, माला बनाने की मेशीन १॥) पर हम से मंगवा लें ॥

ऐसा भी कर सकते हैं कि रुमाल को सुगन्धियों से तर कर लिया करें और नासिका के आगे रखना चाहिये ॥

ऊपर लिखित—

औषधियों के अतिरिक्त और भी औषधियें यतः केशर, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, कस्तूरी, नख, आमला, लीमूं, मूंगा, याकूत, अम्बर, यशब आदि प्लेग से बचने के लिए लाभदायक हैं । यहां आवश्यक २ औषधियों का वर्णन किया गया है, जो एक या दूसरी जगह पर लाभदायक सिद्ध होचुकी हैं । अब प्लेग से बचने के लिए कुछ शरीर रक्षा के नियम कहते हैं ॥

भोजन ॥

सम्पूर्ण शरीर भोजन से बनता है, भोजन में लापरवाही करने से सारा शरीर खराब होजाता है । आमाशय को एक भोजन शाला कहा जाता है । जहां से कि सम्पूर्ण गृह (शरीर) को भोजन पहुंचता है । भोजन शाला को खराब करना सारे शरीर को खराब करना है । अस्तु, ऐसा भोजन किया चाहिये, जिस से आमाशय शक्तिवान बनता जावे ॥

(१) महामरी के दिनों में आहार बलदायक सूक्ष्म जलदी

पचने वाला खाना चाहिये, कच्चा अन्न, सड़े हुए फल और बासी खाना कदापि न खाना चाहिए ॥

(२) पका हुआ भोजन फल, सबजियां और खाने की और वस्तुएं पृथिवी पर न रखनी चाहिएं, खुली भी नहीं रखनी चाहिएं, किन्तु ऊंचे स्थान पर भली प्रकार ढक कर रखनी चाहिएं ॥

(३) ३ घंटे से अधिक काल का पका हुआ भोजन नहीं खाना चाहिए। दोनों समय भोजन बनावें, रात्रि के बासी भोजन का कदापि सेवन न करें, बाजार मे अचार चटनी आदि मंगवाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह पृथिवी पर रखते हैं और कई महीना खुला मुंह छोड़ देते हैं और बहुत समय की इन के पास यह वस्तुएं होती हैं ॥

(४) मिठाई और उन में विशेष कर अंग्रेजी खांड की बनी हुई मिठाई का सेवन कदापि न करें, खट्टी चीजें, प्याज, सिरका आदि वस्तुएं कीटाणु घातक हैं, विलायती खांड प्लेग को उत्पन्न करती है। पुस्तक बहुत बढ़ रही है, इस लिए नोट ही देता जाता हूं किसी और रिसाले में इस का वर्णन किया जावेगा ॥

(५) अन्न आटा दाल आदि ढक कर ऐसी चौकसी से रक्खें ताकि वहां चूहे न जा सकें। सप्ताह में कम से कम एक बार सुखा लिया करें ॥

(६) मीठी वस्तुएं थोड़ी और नमकीन वस्तुएं बहुत खानी चाहिएं। डाक्टर अब्बाजी किलकारी का ख्याल है, कि जो जातियें लवण अधिक खाती हैं उन पर प्लेग का प्रभाव नहीं होता, यदि

आक्रमण करे तो लवण से ही इस का उपाय हो सकता है। शरीर रक्षा के लिए लवण के जल का सेवन किया जा सकता है। लवण में कीटाणु नाशक शक्ति है, प्रातःकाल उठ कर एक ग्लास जल में नमक को घोल कर पीना पाचन शक्ति को ऐसा बढ़ाता है, जो कई प्रकार की औषधियें, और चूर्ण आदि भी नहीं बढ़ा सकते ॥

(७) जो मनुष्य मांसभक्षी हैं उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि पकने के पीछे शीघ्र ही खा लेवें। बुरा तो है ही देर से और बुरा होगा ॥

(८) फल आदि को शुद्ध टोकरियों में अथवा थैलियों में रखना चाहिए, खाने से पहिले लवण के जल अथवा शुद्ध जल में धो लिया करें ॥

(९) घुन लगे हुए अन्न का सेवन न करें ॥

(१०) भोजन चबा २ कर खाना चाहिए ॥

(११) सदैव एक ही प्रकार का भोजन न खावें बदल २ कर कभी कोई सब्जी कभी कोई सब्जी, ऐसा करने से शरीर शुद्ध होता है ॥

(१२) एक दिन में दो बार या अधिक से अधिक तीन बार भोजन खाना चाहिए । जब थोड़ी सी इच्छा शेष रहे तो भोजन पर से उठ जाना चाहिए। भोजन के मध्य में जल पीना चाहिए, खाने के पीछे यदि एक आध घूंट पी लिया जावे तो लाभ दायक है ॥

(१३) पुराने अन्न और दानों को भक्षण न करें ॥

(१४) दूध गरम होजाने के पीछे ठंढा करके पीवें (थोड़ा गरम) धारोष्ण दूध भी उत्तम है, घूंट २ चुसकी लगा कर पीवें इस लिए कि शीघ्र पचे ॥

(१५) दूध को अधिक समय तक कच्चा न रहने दें, यदि अधिक समय के लिए रखना हो तो दूध को एक उबाल देकर बोतल में डाल काक से बन्द करके रक्खें, दूध वाले पात्र भली प्रकार शुद्ध कर लेने चाहिएं ॥

(१६) तांबे के पात्र में जो खट्टी वस्तुएं रक्खी रहें वह न खावें ॥

(१७) चाय, काफी, मद्य से न तो शरीर का कोई भाग बनता है, न जठराग्नि पैदा होती है, अच्छा है यदि बाहर जाने से पहिले कुछ खा लिया जावे। प्लेग के दिनों में खाली पेट बाहर जाना अच्छा नहीं है ॥

(१८) जल पूर्ण पात्रों को अच्छी तरह ढक कर रक्खें, क्योंकि मरी के दिनों में चूहों में एक प्रकार की गरमी होजाती है जिसे दूर करने के लिए वह जल की खोज में फिरते हैं ॥

(१९) जल ताजा सेवन करना चाहिए ॥

(२०) जल को ऊंचे स्थान पर घड़ोंची आदि पर रखना चाहिए, उस स्थान पर लवण मिश्रित सिरका छिड़कना चाहिए ॥

(२१) अधिक भय की दशा में जल को गरम करके शीतल होने पर पीवें तो अच्छा है, क्योंकि इस तरह से सब प्रकार के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं ॥

(२२) अनार खट्टा का शरबत, शर्बत नारंगी, अर्क गुलाब, बेदमुश्क, केवड़ा, गावजबान आदि २ लाभदायक हैं ॥

(२३) यदि रुचि के अनुकूल हो तो सिरका भी कभी २ जल में मिश्रित करके पी सकते हैं ॥

(२४) ऐसे महल्लों से जल भी न मंगवाओ जहां प्लेग फैली हुई हो ॥

(२५) निम्नलिखित पदार्थ हितकर हैं:—यव, गीहूं, कंगनी, सठ्ठी के चावल, मूंग, मसूर, चने, अरहर, मक्खन, घी, दाख, अनार, करेला, आंवला, नागकेशर, सब कटु पदार्थ, बासमती के चावल, मटर, बैंगन, प्याज, चुलाई, चौपत्ती, लस्सन, हरड़, कत्था, देशी खांड, सेंधा नमक, शहत, केशर, श्वेत चन्दन, कस्तूरी, नागरमोथा, अखरोट, बादाम, पिस्ता, चिरोंजी, चिलगोजा, नारियल, कद्दू, काहू, मुरब्बा हरड़, आंमला, बिही, सेब, अमरूद, हरड़ आदि, उशबा, बहमन श्वेत व लाल, निरबसी, दालचीनी, नीलोफर के फूल इत्यादि ॥

निम्नलिखित वस्तुओं का सेवन नहीं करे तो अच्छा है ॥

लगभग हर प्रकार के शाक, देर में पचने वाली वस्तुएं, अधिक खट्ठी वस्तुएं, तेल की वस्तुएं, अलसी, कच्चा फल, सड़े हुए फल तूत आदि २ जो दिल के लिए हानिकारक वस्तुएं हैं ॥

शुद्धता ॥

डाक्टर ऐस. कोलेस कहते हैं कि बिना शरीर वस्त्र व गृह आदि की शुद्धता के मनुष्य का स्वस्थ रहना असम्भव है, प्लेग से बचने

के लिए अति आवश्यक बात शुद्धि है, डाक्टरों ने अनुभव करने के पीछे सिद्ध किया है, कि गंदगी और मल में प्लेग के कीटाणु प्रसन्न रहते हैं और अति शीघ्र फलते फूलते हैं, यहां शुद्धि से शरीर, पहनने के वस्त्र, और बिछौने, गृह और सब सामान आदि की शुद्धि का तात्पर्य्य है ॥

शरीर की शुद्धि के लिए तैल मल कर नित्य प्रातः स्नान करना अति उपयोगी है, विशेष कर नीम का तेल बड़ा लाभदायक है, जिस का वर्णन पीछे आ चुका है। और कपूर को तेल में मिश्रित करके मालिश करना भी उपयोगी है। शिर, कान, नाक, पांव, छाती, मुख, हाथ पर तो अवश्य मल लेना चाहिए, मलने के पीछे शीघ्र स्नान नहीं करना चाहिए, किन्तु थोड़ा सा समय ठहर कर, ताकि वह शरीर की गरमी साधारण होजावे। सर्जन मेजर मुकरजी, डाक्टर ह्वाइट, मिस्टर जार्ज वालडून आदि बहुत से विद्वान डाक्टरों की सम्मति है कि जैतून का तेल या मीठा तेल शरीर पर मलना प्लेग से बचने की अति उपयोगी रीति है ॥

रात्रि को शयन करने के समय मुंह हाथ धोकर सोना चाहिए, यदि अधिक भय हो तो देशीय फिनायल अथवा लवण या सुहागा के जल से स्नान करना चाहिए और जहां प्लेग अधिक हो वहां जिस समय बाहर से आवें आते ही वस्त्रों को गरम जल अथवा जलमें दारचिकना डाल कर उस जल से शुद्ध कर ले (दारचिकना के जल का वर्णन पीछे हो चुका है) और आप भी देशी फिनायल से स्नान कर लें, फिर अपने काम में लगें, यह उत्तम होगा यदि

प्रवेश करने से पूर्व ही द्वार पर यह शुद्धता की जावे ॥

वस्त्रों की शुद्धता के लिए यह जरूरी नहीं है कि वस्त्र बहु मूल्यवान् हों किन्तु यह कि चाहे वस्त्र साधारण ही हों, परन्तु मैले न हों, दूसरे तीसरे दिन धोए जावें, पहरने के वस्त्रों के दो शुद्ध जोड़े रखने चाहियें, जिसे आज पहने कल धूप में सुखा लें, किन्तु जब धोबी से वापस आवें, उन्हें भी धूप में सुखा लेना चाहिए, यदि दरजी से कपड़े आवें, उन्हें भी धूप में सुखा लो, हमें क्या मालूम कि धोबी और दरजी कहां २ फिरते हैं, मोटे वस्त्र पहनो ताकि आपके शरीर के साथ बुरी वायु स्पर्श न करे और पसीना आने से अशुद्ध मल निकलता रहे, पांव नंगे न रखने चाहिएं क्योंकि यह सिद्ध होचुका है, कि प्लेग के जन्तु पृथ्वी से १ गज से ऊपर नहीं चढ़ सकते, प्लेग का प्रभाव भी पृथ्वी से होता है, इस लिए जूता के अतिरिक्त जुराबें भी पहने रहो, हमारे देश की स्त्रियां बहुधा नंगे पाओं रहती हैं यह हानि कारक है। कपड़े के सलीपर बहुत से बाजारों में बिकते हैं, उन्हें पहिनकर घर का काम काज भी किया जासकता है, बाहर जावें तो जुराब व जूता पहिन कर जावें, मनुष्य तो फुल बूट और घुटनों तक पट्टी बान्धकर जावें तो और भी लाभदायक है, ऋतु के अनुसार थोड़े वस्त्र पहिनना अथवा भीगे वस्त्र पहिरना स्वास्थ्य नाशक हैं, प्लेग के रोगी के वस्त्रों को कदापि न छूवें, यदि हो सके तो जला देवें। वरना मर्करी लोशन, फिनायल आदि से धो डालें (जिनका वर्णन पीछे आचुका है) और कई दिन धूप में सुखा लें,

प्लेग पड़े हुवे स्थान से एक लेडी ने दूसरी लेडी को वस्त्र भेजे थे, जो धोबी को दिए गए जो कपड़ों से मिलकर वहां प्लेग फैलाने का कारण हुवे इस लिए वस्त्र धारण करने में पूरी सावधानता होनी चाहिए, इसी प्रकार शयन के बिस्तरों का स्वच्छ रखना भी जरूरी है, उन्हें शीघ्र धुलाना धूप में सुखाना चाहिए, और सुगन्धित जलाने योग्य वस्तु उदाहरणतः नीम आदि जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है, जलाई जावें और इनका धुवां पहरने के वस्त्रों और शैय्या के वस्त्रों को पहुंचाया जावे तो अति हितकर है ॥

शयन के समय एक नीचे और एक ऊपर जो शरीर में लगते रहें इस प्रकार के दो वस्त्र जिन्हें रोज नहीं तो दूसरे तीसरे दिन धो लिया करें, जैसे कि लट्ठे की चादर एक ऊपर ओढ़ने के वस्त्र के नीचे ओढ़ लें और एक बिस्तरे पर बिछा लें। गृह शुद्धि के लिए बड़ी २ बातों का वर्णन हो चुका है, अग्नि से शुद्धि का पूरा वर्णन हो चुका है, यहां इस विषय की अन्य बातें संक्षेप से लिखी जाती हैं ॥

ऐसे घर में निवास करना चाहिए जहां वायु और उजियाला काफी आ जावे। गृह ऐसा हो कि दूसरे गृह की छत्त से छत्त न मिली हो, तो बहुत ही अच्छा है, मकान में दूसरे तीसरे महीने कली करवानी चाहिए, आवश्यक्तानुसार मर्करी लोशन मिला लेना चाहिए, सफेदी करने से पहिले पहिली सफेदी को खुर्चकर उतरवा देना चाहिए, मकान में अधिक जल बहाना न चाहिए, मकान में सील कदापि न रहनी चाहिए, यदि हो तो अग्नि जलाकर उसे

खुश्क करना चाहिए, और गृह के इतस्ततः अन्न, अथवा रोटी के टुकड़े और इस प्रकार की अन्य वस्तु जो कि अधिकांश फेंकी जाती है, तुरन्त ही दूर करनी चाहिएं। नाली परनाल और भोजन स्थान स्वच्छ रहने चाहिएं, दुर्गन्धि के होने से यह रोग बहुत शीघ्र वृद्धि पाता है, पृथ्वी पर बैठना और शयन करना बिल्कुल छोड़ देना चाहिएं, कुरसियें, चारपाइएं, चौकिएं, चारपायें काम में लानी चाहिएं, रात्रि को ऐसे बिस्तरे पर कदापि शयन न करें जो पृथ्वी पर हो, यदि किसी गृह में प्लेग का कोई केस हो चुका हो, अथवा मृत मूषक निकले हों, तो ऐसे गृह में पांव न रखें जिस समय तक मर्करी लोशन आदि से अथवा सफ़ेदी, अग्नि से गृह की शुद्धि और कीटाणु के नष्ट होने का विश्वास न आजावे, गृह के द्वारों को खोल देना चाहिए, कहते हैं कि एक मनुष्य के रहने के लिए १० फुट मुरब्बा स्थान होना चाहिए॥

प्लेग के रोग से यदि कोई मनुष्य मर जावे और रोगी सामान्य झोंपड़ी में रहता हो तो इसे जला देना चाहिए, यदि मकान कच्चा हो तो फर्श की मिट्टी खुदवा कर बाहिर फेंकवानी चाहिए, पहिले कही हुई रीतियों से गृह को भली भान्ति स्वच्छ करवा देना चाहिए। और कम से कम १० दिन इस में न रहना चाहिए, किन्तु अग्नि आदि से शुद्ध करते रहना चाहिए। कच्चे मकानों को खुदवाने के पीछे बाकी वही सावधानता करनी चाहिए। एक भाग तूतिया अर्थात् नीलाथोथा १००० भाग जल इस रीति से अर्क तैयार करके मोरी आदि दुर्गन्धि युक्त स्थानों में डालने से दुर्गन्धि दूर हो जाती है,

और बहुत से रोगों के उत्पादक परिमाणु नष्ट होजाते हैं। गृह में पूर्ण शुद्धता का होना अत्यावश्यक है जिस में सारा दिन और रात्रि व्यतीत करनी है वही यदि मलीन रहे तो मनुष्य कैसे बच सकता है। गृह के अन्दर जो वस्तुऐं हों वही यदि मलीन हों तो घर मलीन ही समझना चाहिए। मलीन, जीर्ण, और दुर्गन्धि युक्त वस्त्रों या अन्य वस्तुओं को गृह में नहीं रखना चाहिए, भोजन-शाला के पात्र और वस्त्र बड़े शुद्ध रखने चाहियें। भारतवर्ष में भोजन शाला का प्रबन्ध बहुत खराब है, यद्यपि गृह के सब मनुष्यों का स्वास्थ्य भोजन शाला पर ही निर्भर है, बड़े २ धनाढ्यों के यहां भी जिनका कि दिवानखाना (ड्राइंग रूम) देख कर चित्त प्रसन्न होजाता है, और जहां विविध प्रकार की सुन्दर वस्तुऐं रखी होती हैं, उनकी भोजन शाला भी बहुत बुरी होती है, भोजन शाला का पोना या तौलिया इस प्रकार का होता है कि जिसे देख कर ही घृणा उत्पन्न होती है, भोजन रखने के पात्र बहुत अशुद्ध होते हैं, भोजन शाला के इतस्ततः मलीनता एकत्रित रहती है, इन बातों से सावधान रहना चाहिए, स्त्रियों के चित्त पर यह बात बिठा देनी चाहिए कि सारे घर का स्वास्थ्य शुद्धि पर है, इस वास्ते सारे कुटम्ब के लिए वह कृपया मकान की शुद्धि रक्खें॥

नीचे के भाग की अपेक्षा ऊपर की छत्त में रहना लाभकारी है, लण्डन की सोसाईटी आफ़ आर्टस के सन्मुख डाक्टर कारटेन ने अपने एक लेक्चर प्लेग के विषय में एक थ्यूरी प्रस्तुत की, आपने भारतवर्ष का तजरुबा वर्णन करने के पश्चात् सब थ्यूरियों

को जो अब तक पेश की गई हैं, एक के पीछे एक के रद्द करने पीछे कहा कि मरी पृथ्वी से उत्पन्न होती है, पृथ्वी से निकल कर लोगों को चिमटती है, डाक्टर करीटीन ने अपने पक्ष की सिद्धि के विषय में यह प्रमाण प्रस्तुत किया है कि जो मनुष्य पक्के फ़र्श पर रहते हैं वह बहुत न्यून प्लेग ग्रसित होते हैं, ऊपर के मकान में जो लोग रहते हैं वह भी बहुत कुछ इस रोग से बचे रहते हैं ॥

नाई भी रोग फैलाने का एक कारण हैं

यह बात सिद्ध हो चुकी है कि नाई भी संगर्गिक रोग फैलाने का एक कारण हैं. वह एक ही उस्तरे से व एक ही कैंची से व एक ही साबुन से सैंकड़ों ही हजामतें करते चले जाते हैं, हमारा अभिप्राय यह नहीं है कि हर एक क्षौर के वास्ते वह सब अस्त्र नए बनावें, किन्तु यह कि वह दूसरे मनुष्य का क्षौर करने के पहिले उस्तरा आदि को अच्छी तरह शुद्ध कर लें ॥

चिकागू (अमरीका) के सब नाईयों को आज्ञा दी गई है, कि एक क्षौर करने के बाद उस्तरा, कैंची आदि अस्त्रों को डिसइन्फेक्ट करके भली भान्ति शुद्ध कर लें, और अपने हाथों को साबुन से खूब धोवें, तब दूसरे का क्षौर करें, ऐसा न करने से कठिन दंड दिया जावेगा, यद्यपि वहां के सब नाई इस बात पर क्रुद्ध हैं तथापि इनकी क्रुद्धता पर पब्लिक की हानि नहीं की जा सकती ॥

हमारे भारतवर्षी नाई हजारों सिर मूंड कर भी उस्तरे को साफ़ नहीं करते, आश्चर्य तो यह है, कि यह सब देशों के नाईयों

से भी अशुद्ध होते हैं, परन्तु हमारे यहां इस प्रकार का नियम नहीं है, इस से नाई भी नहीं मानेंगे, तो इस समय हमें यह करना चाहिए कि एक उस्तरा, एक कैंची, और अन्य उचित अस्त्र लेकर अपने पास रक्खें, नाई जब क्षौर करने आवे तब अपने स्त्र उसे दे दें और उस के हाथ भी अच्छी तरह शुद्ध करवा लें, इस प्रकार हम आज कल की दशा में जब कि प्लेग फैल रही है, नाईयों से बहुत बच सकते हैं ॥

यहां एक और विषय वर्णन करने योग्य है, कि जहां अपने गृह की शुद्धी रक्खें वहां अपने पड़ोस की शुद्धता की भी जरूरत है, नहीं तो उसकी गंदगी कभी न कभी कष्टदायक सिद्ध होगी, मोहल्ला निवासी जो निर्धन पुरुष हैं, उनकी शुद्धि मोहल्ले के धनी पुरुषों को करनी चाहिए अथवा बिरादरी को करनी चाहिए, यह भलाई और परोपकार का काम है, और इसमें अपनी भी भलाई है गृहके इतस्ततः की दिवारें, गलिऐं, सड़कें, मोरियां भी शुद्ध होनी चाहिऐं। इस प्रकार की सफाई करवाना हमारी कृपालु गवर्नमेंट का फर्ज है, यदि इससे गाफिल हों और परस्पर प्रेम को भी भूल जावें तो इन्हें जगाना चाहिए, क्योंकि सफाई भारत वर्ष से इस रोग के मूल नाश होना अति कठिन है ॥

प्लेग रोग क्या छूत रोग है या नहीं

इस समय जब कि बच्चा२ प्लेग से भयभीत हैं, भाई बहिन को पुत्र पिता को माता पुत्र को स्त्रियें पति को मित्र मित्र को प्लेग

ग्रसित देख त्याग देता है यह बहस इससे कि प्लेग छूत रोग है या अछूत रोग है अनुचित प्रतीत होता है ॥

परन्तु मैंने विद्वान युनानी हकीमों की पुस्तकें देखी हैं जिन में यह सिद्ध करने का यत्न किया जारहा है कि प्लेग छूत का रोग नहीं है, चुनांचे एक योग्य युनानी हकीम लिखते हैं:—

"प्लेग केवल अशुद्ध वायु में उत्पन्न होता है, अतः यह रोग वायु की दुष्टता से हुवा न कि छूत से, क्योंकि प्रायः ऐसा देखा गया है, जब वबा किसी मोहल्ले में या घर या गृह में किसी मनुष्य पर असर करता है तो यह नहीं होता कि सब घर के मनुष्य रोग ग्रसित हो जावें, केवल यह होता है कि जिसमें माद्दा इस योग्य हो कि जो वायु दोष ग्रहण करने की शक्ति रखता हो, वही इसमें ग्रसित होता है, यदि छूत का रोग होता तो नगर की एक ओर से आरम्भ होकर दर्जा बदर्जा एक के पीछे दूसरे घर में नगर निवासी इस में ग्रसित हो जाते, रास्ते में किसी कूचा मोहल्ला को बिना आक्रमण किये न छोड़ती, परन्तु इसके विरुद्ध देखा गया है, तीसरे प्लेग यदि छूत का रोग होता तो चिकित्सकों और रक्षा करने वालों पर प्रभाव करता, और संसार का कुछ दिनों में ही नाश हो जाता, इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि अग्रती वैद्य इस रोग के घर तक को भी जला देते हैं, परन्तु फिर भी दुष्ट अपनी दुष्टता से नहीं हटता अपना प्रभाव किये बिना नहीं रहता, यदि यह रोग भला मानस व छूत से लगने वाला होता तो ऐसा करने से मान भी जाता और आश्चर्य यह

है कि अंग्रेज़ वैद्य इस का कारण एक कीटाणु मानते हैं अस्तु अब ध्यान देने का स्थान है कि जब इस का कारण पृथ्वी से पैदा हुवे २ कीटाणु ही फ़रमाते हैं, तो इससे सिद्ध हुवा कि यह रोग छूत का नहीं है, इस का कारण वही पार्थिव कीट हैं उसी को हम वबा, कहते हैं, वबा का असर केवल उसके ग्रहण करने योग्य को होता है न कि हरएक मनुष्य उस में फंस जाता है" ॥

इस प्रकार के लेख पढ़ कर डर लगता है कि कहीं इसे छूत की रोग न समझ कर लोग इससे निडर न हो जावें, और प्लेग भी खूब बढ़ने लगे, पहले पहल प्लेग जब बम्बई से आरम्भ हुवा, तो सरकार की ओर से इसके निवार्ण के लिए यह यत्न किया गया की प्लेग पीड़ित स्थानों में जो मनुष्य एक स्थान से दूसरे जाना चाहें उन्हें डाक्टर देखते थे कि कहीं वह रोग को साथ न ले जाते हों, अगरचे यह काफ़ी नहीं था तथापि इस में कोई शंका नहीं कि उस समय प्लेग की गति बहुत धीमी पड़ गई थी, कुछ कारणों से भारत वासियों ने गवर्नमैन्ट को मजबूर किया कि वह तजवीज़ एकान्त के नियम के बारे में थी, चल न सकी, परन्तु कौन मनुष्य है जो सही बात से इनकार करे कि ज्यूं ही इस विषय को गवर्मेन्ट ने तोड़ा, त्यूंही प्लेग बड़े वेग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा फैला और थोड़े ही समय में भारत वर्ष के हर भाग में जा फैला। कोई नगर ग्राम पूर्णतया इससे बचा नज़र नहीं आता, इतिहास बताता है कि जज़ीरा माल्टा में इसकंदरया से जहां उन दिनों में वबा फैली हुई थी एक रोगी

जहाज़ पर वहां चला गया उससे वहां मरी शुरू हो गई, मास्कू में १५ वर्ष तक रोग का नाम तक नहीं था एक कर्नेल और दो सिपाहियों की कृपा से जो की प्लेग ग्रसित थे वह नगर इस रोग के चक्र में आगया। सन् १७४४ में एक जहाज़ लेवान्ट से तीन प्लेग ग्रसितों को लेकर सयना पहुंचा, वहां इनसे ऐसी वबा फैली कि ३०००० तीस हज़ार मनुष्यों का नाश किए बिना न टल सकी ॥

सन् १८७८ अथवा ७९ की मरी में एक रोगनी का बृतान्त लिखा है, जो इस प्रकार ग्रसित हुई थी की किसी प्लेग ग्रसित के घर से इसके घर में एक सन्दूक आया और दो महीना तक रक्खा रहा, पश्चात् उस नगर से रोग बिलकुल दूर हो गया तो एक दिन वह वही सन्दूक खोल कर उस में वस्त्र सीने लगी उसे रोग ने शीघ्र ही ग्रस लिया, डा० चकावाली ने तजरुबा किया है कि मरी के दिनों में जिन रस्सों से लाशों को कबरों में उतारे जाने का काम लिया जाता था, मरी के पश्चात् वह बहुत दिनों तक पड़े रहे, अन्त में एक मनुष्य उनके छूने से रोग ग्रसित होगया, मुझे भय होता है कि ताऊन को युनानी इस प्रकार फैलने वाली नहीं कहते, तो युनानी पुस्तकों में प्लेग के वास्ते कोई और नाम ढूंढना पड़ेगा, क्योंकि इस बात के पूर्ण प्रमाण मिल रहे हैं कि प्लेग छूत (सम्सर्गिक) का रोग है ॥

सन् १६०३ ईस्वी की मरी लंडन के जिस गृह में प्रवेश हुई एक के पीछे दूसरा दूसरे के पीछे तीसरा इसी प्रकार घर के सब मनुष्यों को परलोकगामी कर दिया। माना कि कुछ मनुष्यों

में रोग ग्रहण करने की योग्यता ही नहीं होती, और उन्हें प्लेग ग्रसित रोगियों को छूने से प्लेग नहीं होती परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि प्लेग छूत रोग नहीं है, एक बीज के उत्पन्न होने के वास्ते उसके योग्य स्थान की आवश्यकता होती है, प्लेग के असर के वास्ते शुद्धता का न होना दिल का निर्बल होना रुधिर का दूषित होना, इत्यादि कई बातें आवश्यक हैं, पस वैद्य व चिकित्सक यदि अपने आप को इस योग्य बनाए रखते हों कि मरी उन पर आक्रमण न कर सके तो इनका प्लेग से बचे रहना प्लेग को अछूत रोग सिद्ध नहीं करता, स्पर्श रोगों के लिए यह भी आवश्यक नहीं है की वह एक ओर से दूसरी ओर एक गृह से दूसरे गृह तक पहुंचें, नगर के एक कोने में रोग ग्रसित के पास दूसरे कोने के मित्र और सम्बन्धी उस के पास आकर प्लेग को अपने घर में ले जाते हैं और तरतीब बदल सकते हैं। इस समय जब कि पूर्ण अनुसंधान के पाश्चात् प्लेग के कीटाणु सिद्ध हो चुके हैं, प्लेग को स्पर्श रोग मानने में कुछ संदेह नहीं रहता, प्लेग रोगी की हर एक वस्तु में से रोगजन्तु निकलते हैं और वह दूसरे मनुष्यों के रोग ग्रसित कर सकते हैं। इस पर अधिक बहस मेरे विचार में व्यर्थ होगी; प्लेग रोग ने इस समय हर एक के चित में अपने आप को स्पर्श रोग भी सिद्ध कर दिया है और इस समय यह आवश्यकता होरही है कि लेख लिखे जावें कि अपने सम्बन्धियों को लोग मानुषीय प्रेम से ही न छोड़ें, प्लेग को स्पर्श रोग सिद्ध करने के पश्चात् जरूरी मालूम होता है कि—

एकान्त के नियमों

का कुछ न कुछ वर्णन किया जावे। स्पर्श रोग से बचने के लिए एकान्त वास एक अत्युत्तम उपाय है, प्रत्येक मनुष्य को अपने २ बाल बच्चों और शेष कुटम्बियों का जीवन प्रिय होता है, अस्तु क्यों कोई ऐसा काम किया जावे जो भय में डालने वाला हो, जो मनुष्य एकान्त नियम के बन्धन में रहेंगे वह न केवल अपने आप को किन्तु ईश्वर चाहे तो औरों को भी बचावेंग पहिले पहल जब प्लेग फैली और जहां कहीं कोई केस हुवा वहां गवर्नमेन्ट की ओर से आज्ञा होती थी कि इन्हें कुआरिनटिन में रक्खा जावे कर्म्मचारी लोगों ने खराबियें करनी आरम्भ कीं अथवा यूं कहो कि भारतवासी भारत वासियों के नाश का कारण हुवे, लोग इस के विरुद्ध हुवे और आपस में लड़ाईयां झगड़े हुवे, गवर्मेन्ट को इस कारण भारत वासियों को छोड़ना पड़ा, अब भी जहां प्लेग फैलता है। गवर्मेन्ट की ओर से एक मकान नियत किया जाता है यद्यपि इस में रोगी को लेजाना इसके सम्बन्धियों की इच्छा पर होता है, इन कारन्टीनों में सफाई का अच्छा प्रबन्ध होता है, और वायु भी खुली होती है वहां इलाज जिसकी इच्छा हो करा सक्ते हैं, फिर क्यों ना बाकी घर किन्तु मोहल्ला नगर अथवा गांव के लोगों की भलाई के लिए प्लेग ग्रसित को वहां लेजाकर उसका इलाज करावें, कारनटीन योग्य डाक्टरों के आधीन होता है, वहां भली भान्ति ऐसे उपाय किये जा सकते हैं, जो घरों में होने कठिन हैं। हां यह भी होसक्ता है कि मोहल्ला वाले मिलकर एक घर इस लिये

नियत रक्खें अथवा रोगी को गृह के एक ओर रक्खा जा सकता है परन्तु यह पूर्ण एकान्त नहीं है इस लिये अच्छा यही प्रतीत होता है, कि उसकी और औरों की भलाई के लिये रोगी एकान्त में रक्खा जावे ॥

नगर के जिस मोहल्ला में प्लेग पड़े उस मोहल्ला में नगर निवासियों का आना जाना बन्द कर दिया जावे तो बहुत अच्छा है, इस मोहल्ला के निवासी यदि खुली वायु में कुछ समय के वास्ते निवास करें तो बहुत अच्छा है, क्योंकि यह सिद्ध हो चुका है कि शुद्ध पवित्र वायु में रहने से इस रोग का भय बहुत कम होता है, यह बड़ी मूर्खता है, कि यदि एक मोहल्ला में प्लेग आरम्भ हो तो उसके आरोग्य मनुष्य दूसरे मोहल्ला में चले जावें, अथवा किसी नगर या ग्राम में प्लेग आरम्भ हो तो वहां के निवासी यदि दूसरे नगर में चले जावें तो इस प्रकार का रोग बढ़ता है, भारतवर्ष में शीघ्र प्लेग के उन्नति करने का एक कारण यह भी है। घरों से निकल बाहर खुली वायु में चले जाना चाहिए, वहां जाने से यदि प्लेग के कीटाणुओं ने कुछ प्रभाव भी किया होगा तो वह भी दूर हो जावेगा। यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि बहुधा इस रोग का प्रभाव कुछ समय के पश्चात् होता है, प्लेग पीड़ित मोहल्लों में से जिन मनुष्यों को स्वस्थ देख कर शरण दीगई चूंकि उनके अन्दर प्लेग का प्रभाव प्रवेश कर चुका था इस लिए वह दूसरे मोहल्ला में जाकर प्लेग फैलाने का कारण हुवे ॥

यदि कोई मनुष्य प्लेग पीड़त गृह में से दूसरे गृह में जावे, तो प्रवेश करने से प्रथम अपनी शुद्धी करनी चाहिए अर्थात् वस्त्रों को डिसइन्फैक्ट करें, स्वयम् कीटाणु घातक औषधियों से स्नान करे यदि हो सके तो दो दिन बाहर रहे। एक साहिब लिखते हैं कि "प्लेग पीड़त मनुष्यों के साथ विशेष सावधानता को दृष्टि गोचर रखे बिना मेल मिलाप करना और एक नगर के अन्दर प्लेग पीड़त भागों में आना जाना और लगाव रखना और ऐसे मनुष्य जिन के निकट प्लेग की मृत्युएं होती रही हो अथवा जिनका प्लेग पीड़त भागों में बेधड़क आना जाना और मिलने जुलने का काम रहा हो प्लेग से बचे हुवे नगरों और उसी नगर के दूसरे भागों में पूर्ण शुद्धि के बिना जाकर निवास करना इस रोग की उन्नति करने के बड़े भारी कारण हैं और बने रहेंगे यदि इनके इन्हें रोकने की ओर नगर निवासी ध्यान न देंगे" ॥

हर एक बात में अति बुरा होता है, हमने देखा है, कि एक मनुष्य वैद्य को बुला कर ले गया और स्वयम् द्वार पर खड़ा हो गया और वैद्य को कहा कि अन्दर मेरी स्त्री है, कृपा पूर्वक देखिए कि उसे प्लेग तो नहीं है दूसरी ओर यह भी देखा कि बाल बच्चों तक घर के सब मनुष्य रोगी से छूते हैं, यह दोनों बातें बुरी हैं, प्लेग के रोगी के पास मनुष्य का भी न रहना उसे शीघ्र मार देता है, वैद्य भी तो सैंकड़ों रोगियों को देखते हैं परन्तु ऐसे कम अवसर हुवे हैं कि डाक्टर हकीम वैद्य अधिक रोग

ग्रस्त हों, इस का कारण केवल यह है, कि वह सावधानी से रहते हैं, इस वास्ते उस मनुष्य को रोगी के पास रखना चाहिए जो पूर्ण सावधानी रख सकता हो, रोगी को अकेले छोड़ देना मानुषीय प्रेम का नाश करना है, वह मनुष्य नहीं जिसको अपने कुटम्बियों से भी प्रेम नहीं है ॥

इस समय रोगी सेवा को वर्णन करने से प्रथम यह ज़रूरी मालूम होता है किः—

रोग की छूत लगने की रीतियां

लिखी जावें, ताकि उनसे बचे रहने का ख़याल रक्खा जावे। इसका वर्णन करना ही रोगी सेवा की बहुत सी रीतियें समझा देगा, एक लेख डाक्टर मित्रा एल. आर. सी. पी. एल. आर. सी. एस. चीफ़ मेडिकल ओफिसर कश्मीर जो कि उन्होंने इण्डियन लेनासिट नामी अंग्रेज़ी समाचार पत्र में छपवाया था लिखा जाता है ॥

"रोग की छूत लगने की रीतियां

प्रथम—व्रणों और छिले हुवे स्थानों द्वारा, खाल पर जो (म्यूकस मेम्बरेन) लुवाब दार झिल्ली पर सदैव कीटों आदि के काटने और चोट आदि के लगने का भय रहता है, और प्लेग कीटाणु खाल के घाव द्वारा शरीर के अन्दर प्रवेश कर सकता है। उन मनुष्यों को जो नग्न पांव फिरते हैं, उन्हें रगड़ों द्वारा जो प्रायः इन के पांव में उत्पन्न हो जाती है, रोग का असर होने

का भय होता है। न्योबोनिक प्रकार की प्लेग के वह रोगी जिन्हें इस रोग की दशा में कोई उपद्रव उत्पन्न नहीं होता, वह बहुत कम छूत पहुंचाने की शक्ति रखते हैं, परन्तु न्युमानिक और सैप्टी सीमक प्रकार की प्लेग के रोगी छूत फैलाने में अधिक समर्थ होते हैं। कठोर रोगों से उनके प्रकाश होने से पहिले ही अनगिणत जर्म इधर उधर फैल जाते हैं, प्लेग की छूत अधिकतया घरों के अन्दर स्थित होती है, जहां कि यह कीट कुछ समय तक गुप्त स्थित रहते हैं फिर अपनी उत्पन्न होने वाली हालतों में उत्पन्न होते हैं॥

"(२) नासिका या कंठ की म्यूकस मेम्बरेन (एक प्रकार की झिल्ली जो इन स्थानों पर लगी होती है) के द्वारा और किसी २ समय नेत्र, लिंगेन्द्रिय के म्यूकस मेम्बरेन के द्वारा भी छूत लग जाती है॥

अधिक समूह या छोटे घरों में यह रोग वायु द्वारा, श्वास द्वारा, छूत वाले कपड़ों और मलों अथवा रोगी के श्वास, मनुष्य के मुख पर छींकने अथवा खांसने से यह रोग लग जाता है। एक बार (न्यूमानिक) प्रकार की प्लेग के एक रोगी के कफ़ का एक परमाणु एक दाया के नेत्रों में पड़ गया दूसरे दिन उसकी आंखें बहुत दुखने लग गईं, कनपेड़े हो गये और उसके पीछे ग्रीवा की अन्त्रीय गिलटियां सूज गईं और वह प्लेग से मर गई॥

"(३) यह रोग कभी २ मेदा या अंतड़ियों के द्वारा भी

असर करता है ॥

"(४) न्यूमानक प्रकार की प्लेग में कफ, और बाहर निकला हुवा श्वास भी रोग उत्पन्न कर सक्ता है, एक स्वस्थ्य मनुष्य जब कि वह सीधा रोगी के पास जाता हो, तो कीटाणुवों से लिप्त वायु प्लेग के रोगियों की श्वास द्वारा अन्दर जाती है, इस प्रकार वह फेफड़ों के अन्दर प्रवेश हो सकते हैं। प्लेग से असर की हुई वस्तुवों की आस पास की वायु में देर तक रहने से भी फेफड़ों के द्वारा असर होता है। खुश्क होजाने पर कीटाणु जीवित नहीं रह सकते, इस लिए वायु अथवा मट्टी के द्वारा इनके असर करने का अधिक भय नहीं है, स्मरण रखने योग्य और काम में आने वाली बात यह है, कि प्लेग का वायु द्वारा असर करना तो तभी सम्भव है, जब कि वायु में अधिक कीटाणु हों क्योंकि शुद्ध वायु से यह कीट शीघ्र नष्ट हो जाते हैं ॥

"(५) सब से मुख्य रोग फैलाने का मूषक एक बड़ा भारी कारण है, मूषक पर प्लेग का प्रभाव अधिक होता है ॥

"मूषकों को छूत लगने की रीतियें

यह बहुधा खाल के प्राकृतिक छिद्रों और व्रणों की राह से पिस्सुवों द्वारा, और इनके भोजन में अधिक कीटाणु होने से अंतड़ियों द्वारा इनका प्रभाव होता है ॥

मूषकों की मृत्यु मनुष्यों की मृत्यु की भविष्य बाणी होती है, चूहे एक गृह से दूसरे गृह में, और एक गांव से दूसरे गांव में विष ले जाते हैं, जो मूषक प्लेग रोग में

ग्रस्त हो जाता है, वह आहार नहीं खाता, और इसकी त्वचा की चमक जाती रहती है, और आस पास की दशाओं से अनभिज्ञ हो जाता है, सांस शीघ्रता से लेता है, और अपने एक कर्वट पर गिर पड़ता है और अन्त में काल ग्रस्त हो जाता है ॥

"चूहे प्लेग पीड़ित प्रान्त से अपने बचाव की जातीय बुद्धि के अनुसार उस गृह को त्याग कर दूसरे गृह का आश्रय लेते हैं, मूषक मनुष्यों के खाने के पदार्थों को विषैला बना सकते हैं, परन्तु तासीर उन पिस्सुवों द्वारा होती है, जिन्हों ने कि पहिले इन मूषकों को काटा हो, मूषकों की त्वचा पर जो और कीट होते हैं वह प्लेग के जर्म से प्रभावित हो जाते हैं, पिस्सू मूषकों की मृत्यु के पश्चात् उन्हें त्याग देते हैं, मनुष्यों को काट कर छूत के चक्र को पूर्ण करते हैं । लाभ दायक शिक्षा यह है, कि जूंही मृत मूषक गृह में अथवा इसके निकट पाये जावें, अथवा मूषक अपने विलों को छोड़ कर भागते दिखाई देवें, अथवा तीक्ष्ण ज्योति से रोशनी से घबराए हुये दिखाई देवें, तो आप समझ लें, कि प्लेग के कीट निकट ही स्थित हैं, और हमारी सब से उपयोगी शिक्षा यह है, कि उस गृह को छोड़ दो, अथवा यदि हो सके तो ऐसे पड़ोस से निकल कर दूर जा रहो ॥

"(६) और कीड़े मकोड़े, माखियां, च्यूंटियां, खटमल, प्लेग के कीटों को बृद्धि पाने के लिए सहायता देते हैं, और छूत के फैलाने का कारण हो सकते हैं ॥

"(७) कपड़े से बनी हुई सब वस्तुवों द्वारा भी जिन में कि कीटाणु हो छूत लग सकती है ॥

"(८) प्लेग के कीट प्लेग से मरे हुवे मनुष्य और पशुवों के मल में भी प्रायः देखे गए हैं, और जब इस प्रकार के मल पृथिवी पर फेंके जाते हैं, तो मिट्टी में मिलकर अपने अनकूल पदार्थ की सहायता से अधिक बृद्धि पाते चले जाते हैं, जब यह और मल व गंदगी से मिल जाते हैं तो बहुत बृद्धि करते हैं ॥

"(९) मूषकों, गलहरियों, बंदरों, खर्गोशों, और बिल्लियों, कुत्तों को प्लेग का रोग हो सकता है, और कभी २ अश्वों और भेड़ों में भी प्लेग देखी जाती है। कहते हैं कि पक्षियों को रोग नहीं होता, और उन कुत्तों के मल में जिन्होंने कि प्लेग के विष से मिला भोजन खाया हो उसमें यह कीट बहुत होते हैं, कई बुद्धिमानों की यह सम्मति है, कि मोरों, मुरगों, वछड़ों, भैंसों पर भी यह रोग आक्रमण कर सकता है ॥

"(१० प्लेग की छूत निम्न लिखित कारणों से भी लग सकती है:—

(१) एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को ॥

(क) न्यूमोनिक प्रकार के प्लेग के रोगियों से सीधे सांस द्वारा ॥

(ख) न्यूमानिक और ब्योबानिक दोनों प्रकार के प्लेग के रोगियों में आपस में मिलने के कारण छूत के अन्दर चले जाने से, फिर पुनः घरों में रहने सहने और छूत वाले वस्त्र

धारण करने से, सांस के द्वारा, इस प्रकार मिलने जुलने से फिर यह रोग लग जाता है ॥

(२) मूषकों से मनुष्यों को छूत लगने की रीतिः—

(क) सीधे इन कीटाणुवों द्वारा जो प्लेग में ग्रस्त हों छोड़ जाते हैं ॥

(ख) चूहों के उन पिस्सुवों से जो प्लेग से मरे हुवे चूहों को छोड़ कर मनुष्यों को काटते हैं, प्यूलेक्सपेली डस, प्यूलेक्स अरीटेन्स, यह पिस्सु मूषकों से पकड़ कर देखे गए हैं, और हिन्दुस्तान में मनुष्यों को काटते हैं ॥

(३) काटने वाले कीड़े मकौड़े और माखियों से भी मनुष्यों को छूत लग सकती है ॥

(क) सीधा विष का रच जाना ॥

(ख) कफ और पीप आदि के द्वारा विष का सम्मिलित होना। चूहों के मलों में यह कीट बहुत देर तक रह सकते हैं, यदि यह मल किसी २ गीले स्थान में विशेष कर अनाज की बोरियों में पाए जावें जहां कारबोनिक एसिड गैस नमी और खमीर से फैली हुई होती है" ॥

ऊपर लिखित लेख को पढ़ कर रोगी सेवा के विषय में पूर्ण नियम मिल सकते हैं, अब संक्षेप से इशारे के तौर पर कुछ और भी लिखे जाते हैं ॥

रोगी को स्वस्थों से दूर अकेले गृह में रखना चाहिए, वहां बाल बच्चों का निवास न होना चाहिए, एक दो या

तीन होशियार मनुष्य रोगी की सेवा के वास्ते नियत हों, वैद्य और सेवक के अतिरिक्त और कोई मनुष्य रोगी के पास न जावे, रोगी के मल मूत्र थूक कफ अथवा गिल्टियों के रुधिर पीप आदि पर शीघ्र ही राख चूना डालकर उसी समय धूप में फेकवा दें, अथवा जला देवें, ऐसे ही गिल्टी पर से जो पट्टियां आदि उतरें उन्हें भी भस्म कर देना, अथवा पृथ्वी में दबा देना उचित है, रात दिन रोगी का सेवक एक ही होने से घबराने का भय है, इस लिए दो तीन नियत करने चाहिऐं। रोगी के सेवकों को शरीर रक्षा के सब नियमों को पालन करना चाहिए और रोगी से पृथक बैठें, आवश्यकता के बिना स्पर्श न करें, जब स्पर्श करें तब हाथों को मर्करी लोशन या दारचिकना जल जिस का कि वर्णन हो चुका है, या डिस-इन्फैक्टैन्ट औषधियों के साथ गरम जल से भली भांति शुद्ध करना चाहिए, दिल को दृढ़ रखना चाहिए, नींम आदि के तेल की मालिश करनी चाहिए, हाथ जब धोवें, मालिश करें। प्लेग से रक्षा के जो उपाय लिखे हैं, इन का सेवन करना चाहिए, जब एक की डयूटी सम्पूर्ण हो जावे, तो इसे वह वस्त्र वहीं उतार कर मर्करी लोशन, अथवा गरम जल में डाल देने चाहिऐं और आप गरम जल, सिरका, हींग, फनायल से स्नान करना चाहिए, शुद्ध होकर बाहर आकर वस्त्र पहिन खुली वायु में सैर करना चाहिए, दूसरे मनुष्यों से स्पर्श करने की आवश्यकता नहीं, जिस मनुष्य के हाथ पांव या शरीर कहीं

पर खुजली हो या घाव हो, या जो दुर्बल दिल का हो ऐसे को रोगी का सेवक नहीं बनाना चाहिए। रोगी के सेवक को यदि शिर दर्द, शरीर का भारीपन, तबीयत में बेचैनी आदि २ लक्षण प्रगट हों, तो उसे शीघ्र ही उस स्थान से पृथक् करके इलाज करा देना चाहिए, क्योंकि इन लक्षणों से प्रगट होता है, कि प्लेग जन्तुवों का प्रवेश अवश्य होगया है ॥

रोगी के सेवक को रोगी की खाट पर बैठने, रोगी के सेवन किये हुवे पात्रों को अपने सेवन में लाने से बचना चाहिये। रोगी के अन्दर से जो मल आदि निकले इसे फर्श पर न गिरने देना चाहिए, एक पात्र नीचे रक्खें जिस में चूना बिछाया जावे, जब ही मल गिरे और चूना डाल कर इसे बाहर फेंकदें। शरीर के किसी भाग पर वस्त्र पर उसे न लगने देवें, चूना के स्थान में सिरका अथवा हींग डाल दें तो डाल सकते हैं ॥

रुमाल आदि जो रोगी के मुख व नाक आदि के साफ करने के काम में आवें उसे फिनायल, या सिरका हींग में भिगोकर सुखा कर जला देना चाहिए, पात्र जो बारंबार रोगी के सेवन में आवे उसे थोड़े समय के लिए उबलते हुवे जल में डाल कर निकाल कर साफ कर लेना चाहिये, और प्लेग के रोगी के वर्तनों में जो शैया के वस्त्र आते हैं उन्हें और और वस्त्रों को यदि जला न सकें तो सिर्को हींग या फिनायल अथवा मर्क्युरी लोशन से भली भांति शुद्ध करके आध घंटा के लिए गरम जल में डाल कर निचोड़ लें, और फिर दो तीन दिन धूप में

सुखालेवें, चारपाई को तो जला देना ही अच्छा है, अथवा सिर्फ हींग से धोकर कई दिन तक धूप में रखना चाहिए, रोगी के कमरे में हर समय सुगन्धित धूप आदि जलते रहने चाहिए, रोगी जब निरोग होजावे, तो मर्करी लोशन या सिरका व हींग से सारे शरीर को धोवें, तत्पश्चात् नीम के तेल से मालिश करें और गर्म जल से स्नान करवा देवें,और नवीन वस्त्र पहिना कर प्रसन्नता पूर्वक घर लावें। परन्तु ईश्वर न करे,यदि रोगी बच न सके, तो जलाने अथवा दबाने में बड़ी सावधानता रखनी चाहिए, स्त्री बच्चों को साथ लेजाने की आवश्यक्ता नहीं है, यदि जावें तो बहुत दूर रहें, लाश को फिनायल व मर्करीलो-शन आदि से धो डालना चाहिए, स्नान गरम जल से करना चाहिए, शव वस्त्र को भी मर्करी लोशन, कारबोलिक लोशन, फिनायल,सिरका,हींग से भिगोकर ऊपर देना चाहिए। जलाते, दबाते समय जो कफनादि रोगी से स्पर्श करता रहा हो जला देना चाहिए, घर को फिर न लावें॥

यदि मुसलमान हो तो कबर ७ फुट गहरी बनावें,और कबर में कुछ चूना भी डाला जावे और लाश के नाक मुंह और दूसरे छिद्रों को मर्करी लोशन से तर की हुई रूई से बन्द करदें, तो अच्छा है॥

जो मनुष्य मुरदे के साथ जावें वह ऊपर लिखी रीतियों के अनुसार शुद्ध होकर घरों को आवें। मृतक से छूने वाले जो दो चार मनुष्य हों उन्हें सारा दिन बाहर रहना चाहिए और मर्करी पर क्लोराइड,सिर्का हींग या गरम जल से शुद्ध होकर आवें॥

सम्पूर्ण विकृत वायु के रोग और विषैले रोगों को दूर करने के लिए सुश्रुत का अद्भुत योग ॥

सुश्रुत वैद्यक का एक बड़ा प्राचीन और माननीय ग्रन्थ है, यह इसकी उत्तमता का कारण है, कि इसका अनुवाद यूनानी अरबी आदि भाषाओं में हो चुका है, युनानीयों ने वैद्यक सीखी तो इसी से सीखी, इसको श्री भगवान् धन्वन्तरी जी ने विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत जी को उपदेश किया था, इस में प्लेग और इस प्रकार के और विषैले रोगों का जिस भले प्रकार से वर्णन किया गया है और जैसा सम्पूर्ण है वह मैं किसी आगामी पुस्तक में लिखूंगा, यहां इस के अन्दर की एक विधी का वर्णन करता हूं, जिसे पढ़कर नई रौशनी के युवक तो वहम ही कह देगें, परन्तु मैं बड़े जोर से ऐसे महाशयों की सेवा में प्रार्थना करूंगा कि वह ऋषियों के विचारों तक अभी तक नहीं पहुंच सकते,मैक्समूलर जैसे फिलासफर यह मान चुके हैं कि जहां हमारी फिलास्फी सम्पूर्ण होती है,वहां आर्य्य हिन्दुओं की फिलास्फी आरम्भ होती है। मैं कहता हूं कि जहां इतनी योजनाएं की जाती हैं,वहां एक ऋषी की तजवीज़ को भी परीक्षा में लाना चाहिए। गवर्मेन्ट से प्रार्थना है कि वह इस ओर अवश्य ध्यान दे, हमारी इस युक्ती पूर्ण औषधि को धन्वन्तरी जी महाराज क्षारागद के नाम से पुकारते हैं, वह कहते हैं कि यदि इस नाम की औषधि रीती से बनाकर ढोल नगारा आदि

पर लेप करके बजवावें अर्थात जिस देश नगर में मरी पड़े, वहां एक कोने से दूसरे कोने तक बजाते हुए चले जावें, तो उस की ध्वनी से विष का वेग दूर हो जावेगा, और इस का वस्त्र पर लेपकर इसकी झंडियां बनाली जावें, वह झंडियां जिस स्थान पर लगाई जावें वहां इन को देखने से और इन से जो वायु स्पर्श होकर आती है इस वायु से वहां के सब प्रकार के विषैले रोग दूर होजाते हैं, जहां यह क्षारागद नामक औषधि विधि से बनी हुई होती है वहां से सर्प भाग जाते हैं कीट, बिच्छू, विषधर मूषक, छछुन्दर, आदि का वर्णन ही क्या। वह सब दूर हो जावेंगे, यदि वहां रहें भी तो उनका विष अवश्य दूर हो जाता है। गृह की शुद्धता के लिये मकान के हर कोने में पोटलियां बांधकर या झंडियां लटकाई जावें या सफेदी में मिश्रित करके दीवारों पर लेपकर दिया जावे, तो प्लेग का भय दूर होजाता है॥

इस औषधी में एक योग्यता यह है कि यदि यह औषधी कहीं लग जावे या भक्षण करली जावे, तो फिनायल की तरह प्राण का भय नहीं होता, और इस क्षारागद का गुण लिखा है कि इस का सेवन पत्थरी, शक्कर का जाना, बवासीर, गोला, खांसी, पेटदर्द, अरुचि, संग्रहणी, आदि रोगों के लिए अति हित कर है, और सारे शरीर के वायु रोगों के लिए इसे खाना और लटकाना लाभदायक है, प्लेग ग्रसित को दूध, घी, अदरक, शहद आदि से खिलावें, और इसका गिल्टी पर लेप करना भी अतिहितकर है॥

तारागद के बनाने की रीति।

बाबा, महासर्ज, तिनश, ढाक (पलाश), नीम, पाढ़ा, पारिभद्र, आम, गूलर, करहाटक (मैनफल), अर्जुन, राल का वृक्ष, कपीतन, लसुआ, अंकोट, आमला, प्रग्रह, कुढ़ा, जान्ट, कैथ, आक, अश्मन्तक, करंज, थोहर, भिलावा, श्योनाक, मुलहटी, सहंजना, शाक, गोजिह्वा, मूर्वा, लोध, तालमखाना, गोपीघण्टा, अरिमेद इन सब औषधियों की जड़ें, पत्र, छाल, फल, फूल अर्थात इनका पञ्चाङ्ग जलाकर इन की विभूती करलें और गोमूत्र में घोलकर दो तीन दिन रखाकर फिर निथार लेवें, निथरी गोमूत्र को कढ़ाही में डाल अग्नि पर रक्खें और यदि सब वस्तुवें १.५ सेर हों तो नीचे लिखी वस्तुएं १-१ तोला और लोह चूर्ण इन सब औषधियों के सम भाग मिला देवें, और नरम आंच पर रक्खें, जब गाढ़ासा लेप होजावे तो उसे उतार कर घड़ों में भर रख छोड़ें, और आवश्यक्तानुसार ढोल आदि पर लेप करें, अथवा दीवारों पर सफेदी में डालकर लेप करें, जिस गृह में यह होगी वहां के मनुष्य सब प्रकार के विषैले रोगों से बचे रहेंगे, वह वस्तुएं यह हैं :—

पीपलामूल, चुलाई, दार चीनी, तज, मजीठ, करंजुवा, गजपीपल, कालीमिर्च, कमल, मारिवा, वायविडंग, घर का धुवां, अनन्ता, सोमवल्ली, सरला, बाल्हीक, गुहा, कोशाम्र, श्वेत सरसों, वरना, नमक, पिलखन, जलबेत, वर्धमान, वंजुल, पत्रश्रेणी, एलुवालुक, नाग दन्ती (इन्द्र बारुणी), अतीस, हरड़, देवदार, कूठ, हल्दी, और बच ॥

नोट—यदि सब वस्तुओं के पंचांग मिल जावें तो अच्छा है, नहीं तो जिस वस्तु का जो अंग मिले लेलें, न होने से कुछ होना अच्छा है ॥

औषधिएं जिन का वर्णन हुआ इन के दूसरे नाम

पूर्वलिखित नाम	हिन्दी नाम	फ़ारसी	अरबी	अंग्रेज़ी या लातीनी
धावा	धावे के फूल	गुलधावा	... ...	Anogisus Latifolia एनोगीसस लैटीफोलिया
महासर्ज	माषपर्णी या जंगलीउर्द	... ...	... ...	Crangea Madrus Patana करेनगिया मेडरूस पेटोना
ढाक	पलास, छिछरा	पलास	... ...	Downy Branch Butea डाउनी ब्रांच बूटिया
नीम	नीम	नीब	... .	Nimb tree निम्ब टरी
पाढा	पाढा	... ...	... ...	Cisoampelospararera सीसाम्पीलास परोरिरा
पारिभद्र	कूट, या कुठ	कोश्ना	किस्त	Costusroot कोस्टस रूट

पूर्व वर्णित नाम	हिन्दी नाम	फ़ारसी	अरबी	अंग्रेजी या लातीनी
आम	अम्ब	अम्बा	अम्बज	Mangoe tree मैंगो टरी
गूलर	गूलर	अंजीर	जमीज	Keg tree कैग टरी
करमाटक	मैनफल, राढ़ा	... ...	जोज़उलकी	Bushy Gardinia बुशीगारडिनिया
अर्जुन	काह	... ...	... ...	Sterculiaurens सटरक्यूलियायूरेन्स
राल का दरख़्त	चीढ़	दरख़्त लाल मग़रबी	शजर कीकहर	Resin tree रिसिन टरी
कपीतन	सिरस	दरख़्त ज़कारिया	सुलतान उल अशजार	albizzialebbek अलबीजिया लेबेक
लहमूढ़ा	लहमोड़ा	दरख़्त मपिस्तान	शजर दबक	Narrow leaved sepistun नैरो लीवड सेपिस्टन

पूर्व वर्णित नाम	हिन्दी नाम	फ़ारसी	अरबी	अंग्रेजी या लातीनी
अंकोट	टेरा, अंकोल	... ...	... ...	Alanguins Lamarckii एलेनूजेयं लेमार्कि आई ।
आमला	आमला का वृक्ष	दरख्त आमला	शजर आमलज	Emblic Myrobalan एंब्लि मिरोबेलन् ।
प्रग्रह	अमलतास या किरमाला	... ...	शजर खयार शम्बर	Cassiafistula केसीयाफिसटुला
कुड़ा	कुड़ा, कुरैया, गोगड़	... ...	तिबाज	Oval leaved rose bay ओवल लीवड रोज बे
जान्ट	शमी, जन्डी	... ...	... ...	
कैत्थ	बिल्ल के वृक्ष की तरह एक वृक्ष है, जिसे शायद पंजाबी में कैंथ कहते हैं ॥	... ...	... ...	Elephant apple एलीफेन्ट एपिल
अश्मन्तक	साल, अश्व कर्ण, या- पाखान भेद ॥	... ...	... ...	साल ट्री Sal tree Gigantic swallow wort जाइगेंटिक स्वोलो वर्ट्
आक	आग, आख, मदार	मदार, खरग	उशार	

करंज	करंज	....	....	Smooth leaved Pongamia स्मूथ लीवूड पोनगेमिया
थोहर	थोहर	....	जक्कूम	Miiks hedge Prickly pear मिल्क्स हेड्ज प्रिक्की पीयर
भलावा	भिलावां	दरखत बलादर	शजरउलकलब	Marking nut tree मार्किंग नट टरी
श्योनाक	सोना पाठा, अरलू	वृक्ष जिसको पंजाबी टागन लांगा कहते हैं।		Orocylumindicum आरोकिल्यूमिंडीकम
मुलट्ठी	मुलट्ठी का वृक्ष	महक	मूस	Liquorice लिकोरिस
सहंजना	सुहांजना	विख्यात पंजाबी नाम है	....	Horse radish tree हौरस रेडिश टरी
माल	मागून	फिलफोम	....	Indian teak tree इंडियन टीक टरी
गेजिह्वा	गोजिया, गोभी	कल्बमरूमी	....	Elophuntopus Scabar एलोफरोटोपस सकाबर
मूर्वा	चूरनहार, मरोरी लद्धू पर्णी	....	....	Clomatistriloba कलोमेटिसट्रीलोबा
लोध	लोधपठानी	लो	लोध	Syjmplocosraumosa

पूर्व वर्णित नाम	हिन्दी नाम	फारसी	अरबी	अंग्रेजी वा लातानी
तालमखाना	तालमखाना	....	....	Long leaved barlaries
डोपघोंटा	ग्लोंडरा	....	....	... ...
अरिमेद	कत्थे के वृक्ष की तरह का नाम दुर्गन्ध खैर भी	का है इसमें से दुर्गन्धि है, न मिले तो कत्थे का वृक्ष लेवें	आती है इस वास्ते इस	Sponge tree स्पंज ट्री
पिपलामूल	पिपलामूल	फिल फिल मोया	असलउलफिफिल	Pepper root पाइपर रूट
चुकाई	चुकाई का साग	सफेद मर्ज़	बकला यमानिया	Hermaphrodite amaranth
दारचीनी	दाल चीनी	दारचीनी	सलीखा	Cinnamun bark सिनेमिन बार्क
तज	तज	तज	किरफा सक़ीका	... ...
मजीठ	मजीठ	रूनाश	ज़कउलसवा	Madder root मेडर रूट
करंजुवा	करंजुवा	खाया अबलीस	अकत मकत	Banduc nut बंडुक नट
गजपीपल	गजपीपल	... ...	... ...	Plantago Amplexicaulis Seandapaus officinalis.

पूर्व वर्णित नाम	हिन्दी नाम	फारसी	अरबी	अंग्रेजी या लातानी
मिरच स्याह	काली मिरच	फिलफिल अस्वद	फिलफिलगर्द	Black pepper
कंवलसारिवा	कमलकेशर	गुलनीलोफरकाकेशर	....	Lotus
बायाविड़ङ्ग	बायबिड़ंग	बरंगकाबली	बरंजकाबली	Babreng बाबरंग
परकाधुवां	छत्तोंपर	जो पाक शाला में	धुवां लग जाता है	उसी से अभिप्राय है
अनन्ता	जवाहां, चालसा, सारिवा	....	....	Indian sarsaparill इंडियन सारसापरेला
सोम	सोमवल्ली	थोहर की एक प्रकार है में एक २ करके लगते झड़ते हैं ॥	जिस में पत्ते १५ दिन हैं और इसी प्रकार	Sarcostemma Brevistigna
सरला	निशोथ, तिरवी	निसोथ	तुरबद	Turbith Root टरबिथ रूट
वालहीक	हीङ्ग	अंगोज़ा	हलतीत	Ferula Narthese फेरूला नारथीज़

पूर्व वर्णित नाम	हिन्दी नाम	फारसी	अरबी	अंग्रेजी या लातानी
मोहा....	शालपर्णी	एक बूटी होती है, एक पत्ते और बहुत छोटी	एक दंडी में तीनतीन फलियां होती हैं	Desmodium Yangeticum डैसमोडियम, यंगैटीकम
कोषाम्र	केवड़ा, जलपाई,	जंगली आमको कहते हैं	आमड़ज	
सरसों सफेद	श्वेत सरसों	शरशफ सफेद	खरसफ अबियज़	White Sinapisalba ह्वाइट सिनेपी सलबा
बरना	बरना	बेल की तरह का गोल गोल बिल की फल लेना चाहिये	एक वृक्ष है फल भी तरह होता है वह	Crateava Rox Burghii
नमक	नमक, लवण	नमक	मलह	Salt साल्ट
पाखन	पाकर, पाखर	छाया दार बड़ा जिस के पत्ते आम	वृक्ष होता है जैसे होते हैं।	Ficurs Vereince
जलबेंत	बेंत	खरान बेंत	खरान	Water cane वाटर केन
वर्द्धमान	एरंड	बेद अंजीर	खरीह	Castor seed केस्टर सीड
बंजल	अशोक	हिन्दुस्तान में इसका	बड़ा वृक्ष होता है।	Jonesia Asoka

पूर्व वर्णित नाम	हिन्दी नाम	फारसी	अरबी	अंगरेजी या लातानी
पय श्रेनी	दंती, जमालगोटा	बेद अंजीर	हब्बुलमलूक	Parging Croton पार्जिग क्रोटन
सप्त पर्णी	सातला, छिकरा	पीछे वर्णन हुआ	....	
दंडक	श्योनाक का पीछे	वर्णन होचुका है यदि	यह न मिले तो गंगेरन	की छाल लेवे
				Cardomo कारडोमू
एकबालुक	छोटी एलायची	हील बवा	काकला सगार	Colocynth कोलो सिन्थ
नागदन्ती	इन्द्रवारुणि,इन्द्रायन	खरबूज़ातलख	हञ्ज़ल	Acconitum Heterophylum
अतीस	अतीस	....	....	एकोनीटम हेटरोफीलम
				Myrobalons माई रुबेलैज़
हरड़	हलीला ज़रद	हलीलाज़रद	अहलीलज	
देवदार	देवदार	....		Cedrus Deodara सेडरस दियोदारा
कूट	कुट	कोश्ना	किस्त	Costus Root
हल्दी	हल्दी, हरदल	ज़रद चोबसोसन ज़र्द	अरूकउल सफर	Turmeric टरमेरिक
बच	बच, वचं	अगर तुरकी	वज	Sweet Flog Root स्वीट फ्लौग रूट

मिश्रित ॥

मट्टी का तैल भी प्लेग को रोकने में विचित्र गुण रखता है ॥

पैसा अखबार में एक बार एक तत्ववेत्ता ने यह लेख भेजा थाः-

"प्लेग को रोकने की विचित्र रीति मट्टी का तैल

जिस घर में प्लेग हो, वरन् सब घरों में जिन में प्लेग न भी हो, उनका सब असबाब निकाल कर और जो कुछ कूड़ा आदि हो उसे जलाकर घर की सारी भूमी को मट्टी के तैल से तर कर देवें, जो निर्धन मनुष्य तर न कर सकें, वह एक या दो बोतल मिट्टी के तैल से भी छिड़काव कर सकते हैं, किन्तु इसका छिड़काव दिवारों पर भी करना चाहिए, इस प्रकार तर किए हुवे घरों की एक दो रोज यदि मट्टी के तैल की दुर्गन्ध को न सहन किया जासके, तो दो तीन दिन के लिए घर को छोड़ दें, फिर घर में रहें, हर एक मनुष्य को योग्य है, कि मास में एक दो बार छिड़काव कर दे ॥

श्रीमान् सी. जे-हेली फेक्स साहिब डिप्टी कमिश्नर लाहौर ने कुछ उत्तम बातें जो कि उन्होंने प्लेग से रक्षा के लिए लाहौर में विज्ञापन की थीं, यह कहना व्यर्थ नहीं है, कि यह डाक्टरों के समग्र अनुसंधान का सार है और साहिब बहादुर ने बड़े अनुसंधान के पश्चात् सब डाक्टरों की सम्मति से उनको छपवाया होगा, अस्तु हमें यह अच्छा मालूम होता है, कि उनको अक्षर बअक्षर अंकित कर दिया जाय, स्मरण रहे कि साहिब बहादुर मिशन ताऊन के साथ सेक्रेटरी के तौर पर भी काम कर चुके हैं ॥

प्लेग प्रति बंधन विषयक श्रीमान् सी-जे-हेली-फैक्स साहिब डिप्टी कमिश्नर लाहौर के आदेश ॥

प्लेग के लक्षण

(१) जब चूहों की अधिक मृत्यु होने लगे तो लोगों को शीघ्र ही प्लेग से बचने के लिए प्रबन्ध आरम्भ करना चाहिए ॥

(२) चूहों को दूर करदो—चूहों को वध करने, या उन के बिल बन्द करने, या इन्हें अपने घरों से भगा देने का यत्न करो, मृतक मूषकों को जहां देखो, बिना स्पर्श किए शीघ्र भस्म करदो, अर्थात् कुछ उपले मट्टी के तैल में भिगोकर उनको भस्म करदो ॥

(३) शीघ्र सूचनादो—जब मृतक चूहे पाए जावें, या तुम्हारे घर में या उसके निकट प्लेग की कोई घटना हो तो तुरन्त हेल्थआफिसर (प्लेग डाक्टर) को खबर दें ॥

(४) गुप्त रखने की हानियें—प्लेग की घटना या चूहों की मृत्यु को गुप्त मत रक्खो, यदि तुम इस बात की सूचना दोगे, तो तुम्हें या तुम्हारे माल को कोई हानि नहीं पहुंचेगी, तुम पर कोई अत्याचार नहीं किया जावेगा, परन्तु इन शिक्षाओं पर जो इस विज्ञापन में लिखी गई हैं, तुम्हें अवश्य चलना चाहिये ॥

(५) छूत से बचो—जहां तक सम्भव हो ऐसे स्थान या घरों में जाने से बचो जहां प्लेग है या हुई हो, और

पड़ोसियों और सम्बन्धियों की स्त्रियों को ऐसे कमरों या कोठरियों में मत जाने दो, जहां प्लेग से मृत्यु हुई हो, मृतक के साथ जाने या पीछे जाने या स्यापा की रीति में सम्मिलित होने से बचो। बहुधा प्लेग की छूत लग जाती है ॥

प्लेग युक्त स्थानों से आए हुए लोगों को अपने मध्य में मत आने दो ॥

इस आवश्यक्ता की पूर्ती के लिए लाहौर में यह नियम प्रचलित है कि यदि एक मोहल्ला में पांच से अधिक मनुष्य पड़ोसियों की आम सम्मति के अनुसार डिप्टी कमिश्नर साहिब की सेवामें प्रार्थना करें, तो साहिब बहादुर शीघ्र ही प्लेग पीड़ित स्थानों से आए हुए लोगों को बाहर निकाल देने का हुक्म देंगे, जब किसी सराय में कोई प्लेग पीड़ित मनुष्य आ जावे तो सराय वालों के लिए ज़रूरी है कि वह दरवाज़े पर एक नोटिस और निशान लगा देवें, ताकि दूसरे पथिक सावधान हो जावें ॥

७ प्लेग के रोगी ॥

प्लेग के रोगी को एक गृह से दूसरे गृह तक ले जाने से प्लेग का असर फैल जाता है, इस से उसे शीघ्र हस्पताल में ले जावो ॥

यदि यह न हो सके तो रोगी का उचित इलाज कराओ और जहां तक हो सके रोगी को उसी गृह के एकान्त स्थान में रक्खा जावे, जहां कि वह रोगी हुवा था, और वहां केवल वही लोग जावें जिन्हें रोगी की सेवा करनी हो, घर के मनुष्य और

बच्चे अलग रक्खे जावें, और बहुत ही अच्छा हो, यदि वह नगर से बाहर कुछ दिन के लिए चले जावें, जो स्थान इस मतलब के लिए हाकिम लोग नियत करेंगे ॥

(८) रोगियों के मल आदि—प्लेग के रोगी का मल, मूत्र, थूक, गिल्टी का रुधिर आदि बड़े भयानक हैं ॥

जोंकें जो प्लेग के रोगी पर लगाई गई हों उन का दुबारा लगवाना भी भयानक है, यदि हो सके तो रोगी अपने मल, मूत्र, थूक को किसी ऐसे पात्र में डाले, जिसमें फिनायल हो, और इस मतलब के लिये ऐसा पात्र पहिले से ही तैयार रखना चाहिये, यदि किसी अवस्था में मल मूत्र ऐसे पात्र में न हो सके तो जहां किया जावे वहां पर फिनायल छिड़क देनी चाहिये, और फिर उस मल को फिनायल वाले पात्र में जमा करदो, और जहां मल पड़ा हुआ था, वहां फिनायल या जलते हुए अंगारे डाल दो, छूत वाले वस्त्र अथवा चीथड़े बाहर मत फेंको, जिन कपड़ों या चीथड़ों पर यह गंदगी लगी हो, उन्हें या तो जला दो, या तुरन्त फिनायल वाले या उबलते हुये जल में डाल दो, और उस मल को फर्श पर से झाड़ू देकर दूर न करो और न फिनायल मिलाने से पहिले उसे किसी नालि आदि में फैंको ॥

घरों और असबाब को डिसइन्फेक्ट करना—

अपने गृह और उस के पड़ोस की शुद्धी का ध्यान रक्खो, और ऐसा प्रबन्ध करो, कि उस में स्वच्छ वायु फिरती रहे । जिस समय घर में चूहे मरने लगें, अथवा प्लेग का कोई केस हो जावे, तो गृह को पूरे तौर पर डिसइन्फैक्ट करना चाहिए,

रोग कीटों का नाश करने के लिये अर्थात् जब किसी रोगी को घर से निकाला जावे, या रोगी निरोग हो जावे तो गृह को एक बार फिर डिसइन्फैक्ट करलेना चाहिये, तुम डेसीकेटर बनाने वाली अंगीठी और औषधियों से उन घरों का जिन में प्लेग हुई हो डिसइन्फैक्ट करा सकते हो, इस प्रकार की डिसीकेटर अंगीठी को वर्ता करो, जिस का सरकार ने तजवीज किया है, या उन औषधियों का सेवन करो जिन में से फिनायल सब से बढ़ कर लाभकारी है, या वस्त्रों और छोटी वस्तुओं के लिये उबलते हुए जल को काम में लाओ ॥

तुम अपने गृह के वस्त्रों को तपा सकते हो, और खूब अपने शरीर के सब वस्त्रों शय्या के वस्त्रों को भली भांति शुद्ध कर सकते हो, अथवा डिसइन्फेक्ट की रीतिअनुसार अंगीठी में तपा सकते हो, या उबलते हुये जल में शुद्ध कर सकते हो, और जो वस्त्र तुम्हारे शरीर पर हैं, जिन वस्त्रों को धारण किये हुए हो इन्हें भी डिसइन्फैक्ट किए बिना न छोड़ो, रजाइयों और लिहाफों को जला देना अच्छा है, यदि आप के नगर में (स्टीम डिसइन्फैक्ट) अर्थात भाप से शुद्ध करने वाली कल वर्त्तमान हो तो इस से साफ करना चाहिए, इसी प्रकार औषधियों से या डेसीकेटर अंगीठी से डिसइन्फैक्ट करने से आप के गृह को और उस में उपास्थित वस्तुओं को कुछ हानि नहीं पहुंचेगी, और प्लेग का विष नष्ट हो जावेगा, जब तुम्हारे घरों में या उस के अति निकट गृहों में मृतक मूषक पाए जावें या इन में कोई प्लेग की घटना हो जावे तो म्युनीसिपैलटी के मजदूर बिना कुछ मजदूरी लिये शुद्ध करदेंगे, यदि तुम अपने वस्त्र अथवा गृह की और

वस्तुएं भी डिसइन्फैक्ट करवालो यदि इन में कोई ऐसे वस्त्र भी हों जिन्हें अधिक गर्मी या औषधियों के प्रभाव से हानि पहुंचने का भय हो तो उन्हें केवल धूप में रखकर डिसइन्फैक्ट कर सकते हो ॥

१०—गृह का खाली करना ॥

घर औषधियों से या डेसीकेटर अंगीठी मे जैसी अच्छी तरह चाहिए डिसइन्फैक्ट नहीं हो सकता, जबतक कुछ घंटों के लिये गृह वाले उसे खाली न करदें, हां यदि किसी घर में कोई रोगी हो और उसे पूर्ण रीति से खाली करना असंभव हो तो ऐसी दशा में उस कमरे के अतिरिक्त जो कि रोगी वाला हो, शेष कमरों को खाली करदें, छूत वाले कमरों को खाली करवाने या और किसी प्रयोजन से खाली करने के लिए देखो ऊपर लिखी हुई दफा ७, नगर के इन स्थानों में जहां प्लेग हो मत जावो ॥

११—गृह में फिनायल रक्खें—इस डिसइन्फेक्शन के अतिरिक्त जो कि म्युनिसिपेलिटी के मजदूर औषधि आदि से गृहों की करेंगे, अपने घरों पाखानों नालियों और अन्य स्थानों में फिनायल जल में मिलाकर छिड़कना लाभदायक है, लाहौर के निर्धन पुरूषों को इस काम के लिए फिनायल बिना मूल्य दी जाती है,फिनायल हर शहर में मिल सकती है ॥

१२—फिनायल का पूर्ण प्रभाव केवल इस के छिड़कने से ही नहीं होता, किन्तु इसका आवेकता से भली प्रकार वर्ताव करना उचित है, इस को केवल कहीं २

मत फेंको, बलकि फर्श और दीवारों के नीचे के भागों और पाखानों में खूब छिड़को, जब कि प्लेग आप के गृह में अथवा उसके निकट, हो तो तीसरे चौथे दिन, और जब कि तुम्हारे घर में हो तो नित्य इसे इस प्रकार काम में लाया करो, गृह की वस्तुओं को भी कभी २ फिनायल से धो लिया करो, और कभी २ अपने सब वस्त्र विशेष कर वह वस्त्र जो तुम्हारे गृह के लोगों के सेवन में आते हों इन्हें भिगो लिया करो। बहु मूल्य वस्त्रों को फिनायल में लिप्त करना जरूरी नहीं है, हां उन वस्त्रों को कभी २ कुछ घंटों के लिए धूप में डाल दिया करो, एक बोतल फिनायल में १०० बोतल जल मिला लिया करो, अथवा यूं कहें कि फिनायल की साधारण बोतल के चौथाई भाग को एक कनस्तर भर पानी में मिला लिया करो, जब प्लेग आरम्भ हो तो बिना इस की बाट जोहने के तुम्हारे घर में प्लेग कब प्रगट होती है, शीघ्र ही फिनायल का वर्ताव करना आरम्भ करदो, और जब तक कि प्लेग आप के पड़ोस में है, उस समय तक इस का वर्ताव करना मत छोड़ो, सब कुटुम्बियों के लिये जल में थोड़ी सी फिनायल मिला कर कभी २ स्नान करना अच्छी बात है, यदि किसी मनुष्य को प्लेग के रोगी के पास जाना पड़े और उस से स्पर्श करना पड़े, या ऐसी वस्तुओं को स्पर्श करना पड़े जिस से कि प्लेग ग्रसित होने का भय हो तो उसे बारम्बार अपने हाथ फिनायल से धो लेना चाहिए, अन्त में ऐसे मनुष्य को जो किसी प्लेग से मृतक मनुष्य की अरथी के साथ गया हो अपने घर को लौटने से प्रथम अपने वस्त्रों और शरीर को फ़िनायल से धोना चाहिए, और मरघट

या कबरस्तान के निकट भी फिनायल पहुंचाने का प्रबन्ध किया जावेगा ॥

(१३) प्लेग के रोगियों के वस्त्र आदि—कोई मनुष्य जिसकी मृत्यु प्लेग से हुई हो अथवा प्लेग से स्वस्थ हो चुका हो, उसके वस्त्र शय्या आदि या वह वस्त्र और चारपाई जो कि प्लेग की लाशों की अरथी में काम आचुकी हो, उन्हें कभी काम में न लाना चाहिए और यह वस्तुयें कदापि किसी को न दें, क्योंकि इनसे सीधी प्लेग फैल जाती है, इस से यही उत्तम है की इन चीज़ों को जला दिया जावे, यदि आप इन्हें पुनः काम में लाना चाहें तो काम में लाने से पहले इन्हें डिसइन्फैक्ट करा लो ॥

(१४) जूते हर समय पहने रक्खो—जब ताऊन तुम्हारे निकट हो तो गृह के अन्दर और बाहर जब जाओ, जूते या खड़ांवें पहने रहो। प्रायः ऐसे स्थान में प्लेग हो जाती है, कि जहां पर प्लेग के विष के कीटाणु हों, और नंगे पांव फिरें ॥

(१५) टीका करा लो—तुम्हें यह सम्मति बड़े जोर से दी जाती है कि ताउनी टीका लगवा लो क्योंकि इससे प्लेग का बड़ा बचाव होता है, विशेषकर जब कि प्लेग आरंभ होने से प्रथम टीका करवा लिया जावे ॥

(१६) ऊपर लिखित शिक्षाओं में से किसी एक शिक्षा पर भरोसा नहीं रखना चाहिए, जब तक कि सब शिक्षाओं पर न चला जावे, इस लिए आप को उचित है कि

इन शिक्षाओं में से किसी की ओर से असावधानी न करो, और यह न समझो कि जब तुमने एक या दो शिक्षाओं का पालन किया है तो आप ने पूरी सावधानी करली है तुम्हें इन सब शिक्षाओं को भली भांति पालन करना चाहिए, न कि अर्द्ध रूप से ॥

श्रीयुत डाक्टर भक्तराम साहिब साहनी एम. बी. एम. आर. सी. एन. चीफ़-मेडीकल ऑफिसर जम्मू ॥

जो की अंगीठी के रचिता हैं, इन की सम्मती अग्नि से गरमी पहुंचाने के बारे में नीचे लिखी जाती है ॥

शुद्धता करने की सब से सुगम और थोड़े व्यय से होने वाली रीति अग्नी द्वारा है. मैंने यह विधि सन १९०० इस्वी में विषूचिका वाले कमरों के लिए आरंभ की थी और सब प्लेग युक्त मकानों की शुद्धी के लिये जारी की है, अग्नि से इस प्रकार गरमी पहुंचाने से किसी कमरा को १५० या १८० डिगरी तक गरमी पहुंचाने से अनुमान आध घंटा में प्लेग का प्रभाव दूर हो जाता है, परीक्षार्थ किसी कमरा के फ़र्श को इतना गरम करदो इससे अधिक गरम होतो और भी अच्छा है, जितना कि भूमी जून महीने की दोपहर की धूप से गरम होती है,

---

नोट—यह एक लोहे की बहुत बड़ी अंगीठी है, ऊपर से बन्द है परन्तु चारों ओर मुख खुले हुये हैं उस में कोयले जलाने से गृह की सम्पूर्ण वायु गर्म हो जाती है ॥

जिस कमरे में असबाब न हो और उसे खुश्क गर्म करना चाहो तो इसकी पृथिवी पर पांच ढेरियां उपलों की अथवा इससे अधिक लगवा दो और जलाने की लकड़ियां और पत्थर के कोयले भी इन ढेरीयों में लगा दो, और फिर अग्नि दे दो, फिर द्वारों को बन्द करदें, तीस अथवा चालीस मिनट में कमरे की गरमी १४० या १५० वरन् २१२ दरजे तक ईन्धन के मात्रा के अनुसार बढ़ जाती है, प्रोफ़ैसर डब्ल्यु. एम. हाफ़किन साहिब एफ़. आर. एस. सी. आई. ई. चीफ़ डाक्टर बम्बई रिसर्चलेबोरेटरी की सम्मति है, कि १५ मिन्ट तक, २१२ दर्जा की खुश्क प्लेग मरी के कीटाणु के नाश करने के लिये पर्याप्त है, एक मन लकड़ी से एक कमरा ४ गज़ चौड़ा ४ गज लम्बा व ५ गज ऊंचा ४० मिन्ट में १५० दर्जा तक गर्म हो जाता है, यदि किसी कमरे में सामान हो तो इतनी गरमी अंगीठी द्वारा पहुंचाई जा सकती है, जो कि मैं ने ईजाद की है, इस प्रकार कमरे में स्थित सामान भी कमरा के साथ ही भलि भान्ति शुद्ध हो जाता है ॥

* चरक संहिता में ।

अग्निवेश भगवान आत्रेय से पुछते हैं कि हे महाराज वायु अग्नि आदि में विकार होने का क्या कारण है, कि जिससे यह बिगड़ कर मरी रोग को उत्पन्न कर के देश का नाश करते हैं ॥

आत्रेय भगवान बोले, हे अग्निवेश ! इस मरी का मूल कारण अधर्म्म ही है, और इस अधर्म्म का मूल कारण पूर्व जन्म

---

* संसार की वैद्यक पुस्तकों में से सब में से प्राचीन ग्रंथ चरक है ॥

कृत कुकर्म्म ही है, और कुकर्म्मों का मूल कारण बुद्धि का विकार अर्थात् अविद्या है, जब देश के बड़े २ योग्य पुरुष धर्म को त्याग कर पाप में आयु व्यतीत करते हैं, तब इन के दासानुदास छोटे बड़े नगर और गांवों के मनुष्य व्यौपारी लोग भी इस अधर्म्म को बढ़ाते हैं, अथवा पाप शक्ति पकड़ते २ और बढ़ते २ धर्म्म को छुपा देता है, इस के पीछे उस पापी मनुष्यों को देवता भी छोड़ देते हैं, फिर ऋतुएं बिगड़ जाती हैं, इसी कारण से उचित समय पर कभी वर्षा होती है कभी नहीं, कभी न्यून, कभी अधिक, कभी बिना ऋतु वर्षा होती है, वायु ठीक नहीं चलती, पृथ्वी बिगड़ जाती है, जल शुष्क हो जाता है, औषधियें और जड़ी बूटियें अपने २ असली गुण छोड़ देती हैं, इसी प्रकार देश, काल, वायु, जल के अनुचित दोषों से व एक दूसरे के साथ इकट्ठा खाने पीने से, देशों के देश नष्ट हो जाते हैं॥ इस प्रकार भगवान आत्रेय जी प्लेग का मूल कारण हम लोगों का पापी हो जाना ही प्रगट करते हैं, मानो यह ईश्वर परमात्मा की ओर से धक्का है, जिसे हम ईश्वरीय कोप के नाम से पुकारते हैं, इस दशा में भगवान् आत्रेय जी स्वास्थ रक्षा के नियम इस प्रकार बताते हैं :—

"जिन लोगों में मृत्यु के चिन्ह नहीं पाए जाते और वह लोग जो मृत्यु के साधारण कारणों से घिरे हुए हैं, इन के लिए **वमन, विरेचन, वस्ती** अच्छी है, और उचित विधि से **रसायन औषधियों का सेवन करना भी लाभ** दायक है। देश को नष्ट करने वाली महामारी से पहिले उजाड़ कर

इकट्ठा करे, और इकट्ठी की हुई औषधियों के सेवन से शरीर को पालन और हृष्ट पुष्ट बनाना योग्य है, सत्य बोलना और हर एक पर दया करनी, सदाचारी रहना, हवन आदि करना, और इन्द्रियों को वश में रखना, शान्ति और सहन शीलता, आत्म-रक्षा, उचित है, कल्याणकारी और शान्ति दायक स्थानों में चले जाना अच्छा है, धर्म्म शास्त्रों और इन्द्रियों को वश में रखने वाले मनुष्यों का वर्णन करना, धर्मात्मा शान्ति चित्त उत्तम पुरुषों की संगति में बैठना, यह सब और इस के साथ औषधियां और युक्तियां देश को नाश करने वाले भयानक कालमें मनुष्यों की आयु को पालने वाली कही गई हैं" ॥

पैसा अखबार में एक लेख एकबार छपा था, इसका अन्तिम भाग यहां लिख देना उचित मालूम होता है :—

"इस के अतिरिक्त और क्या अवस्था हो सक्ती है कि रोगी की सुश्रूषा के नियमों में कुछ बदली की जावे, और उन्हें इस प्रकार ठीक किया जावे कि जिस से वह हानिकारक न रह जावें, यथा रोगी की कुशल पूंछने के लिए जो मनुष्य जावें, वह रोगी के निकट इसके कमरे में न जावें, किन्तु उस के निकट के सम्बन्धियों में से एक मनुष्य किसी और कमरा में बैठा रहे. क्षेम कुशल पूंछने वाले उस के पास जावें। आवश्यक्तानुसार क्षेम कुशल पूंछ कर चले जावें, यदि इस से भी अधिक रक्षा की आवश्यक्ता हो तो गृह के द्वार पर ही एक पात्र में थोड़ा सा फ़िनायल रख छोड़ें, क्षेम कुशल पूंछने वाले मनुष्य जब बाहर निकलें तो फिनायल को पृथिवी पर डालकर, उस पर जूतों के तले रगड़ लिया करें और घर पर

पंहुच कर वस्त्रों को उतार कर स्वच्छ वायु और धूप में डाल दें ॥
शोक की रीती भी सुधारने योग्य है, यादि हो सके तो शोक करने
वाले मनुष्य दूसरे गृह में चले जावें, और उसी स्थान पर अपनी
रीति पूरी करें, जिस गृह में प्लेग से मृत्यु हुई हो, वहां मनुष्यों
का एकत्र होना जलती हुई अग्नि में कूदने के बराबर है, विशेष
कर इस कारण से कि ऐसी रसमों में भूमि पर बैठना होता है, जहां
कीटाणुओं की फौज पहले से अधिक तय्यार होती है। कई कुलों में
तो यह रीती है कि उसी कमरा में रात को सोते हैं, और वह भी
पृथ्वी पर सोते हैं, यह रीती बहुत भयानक है, और इस को अवश्य
ठीक करना चाहिये। यादि दूसरे घर में जाकर मृत्यु शोक की रीतियें
पूरी करने के लिए जाना कठिन मालूम हो तो कमसे कम
इतना प्रबन्ध तो अवश्य करना चाहिए, कि बाहर शुद्ध वायु में
अथवा गृह के चौक में इन रीतियों को पूरा किया जावे, और वहीं
सब सम्बन्धी एकत्र हों, जिस स्थान पर मृत्यु हुई हो, इसे बन्द रक्खा
जावे और जिस समय तक वह भली भांति डिसइन्फैक्ट न हो जावे,
इस समय तक उसके अन्दर कोई न जावे और जो वस्तुयें उस कमरा
में पड़ी हों उस को भी डिसइन्फैक्ट करवा लिया जावे ॥

लाश के साथ कबरस्तान और श्मशान में जाना और अन्त
समय के संस्कारों का करना धार्मिक कर्तव्य है, इस लिए इस
में हस्ताक्षेप करना उचित नहीं है, परन्तु जो मनुष्य अधिक शरीर
रक्षा के चाहने वाले हैं, और हर बात में अपने लाभ को उत्तम
समझते हैं, उनको उचित है जब मरघट से वापिस आवें तो जूति-
यों के तलों को फिनायल मलकें और वस्त्रों को उतार कर धूप
में डाल दें, यादि हो सके तो फिनायल के जल से स्नान कर लें,

यह रक्षा की रीतियें न केवल उन की अपनी जाती के लिए लाभकारी होंगी, परन्तु इस का लाभ मित्रों, सम्बन्धियों व दूसरों तक भी पहुंचेगा" ॥

प्लेग आदि मरी रोगों के आने के पूर्व लक्षण

(१) तीक्ष्ण बुद्धि जीवों यथा अबाबील, हुदहुद, बगुला आदि का बच्चों को छोड़ कर घोंसलों से भाग जाना ॥

(२) भूमि के नीचे रहने वाले जीवों यथा सर्प, बिच्छू, कनखजूरा, मूषक, लोमड़ी आदि का अपने बिलों से निकल आना और पुनः उन में न जाना ॥

(३) नियत समय पर वर्षा का कम होना ॥

(४) किसी दिन वायु का स्वच्छ वहना, सूर्य्य का साफ प्रगट होना और किसी दिन वायु का गर्द भरी रहना और सूर्य्य का धुंधला प्रगट होना ॥

(५) मलीनता में उत्पन्न हुए और मलीनता में रहने वाले जीवों यथा मक्खी, मेंढक आदि का अधिक हो जाना ॥

(६) बादलों के बिना हलकी पवन थोड़ी चलना ।

(७) श्वास लेते समय वायु का अशुद्ध, अपवित्र और भारी मालूम होना ॥

(८) बुरी बनस्पतियों की अधिक उत्पत्ति ॥

(९) जाड़े के दिनों में अधिक शीत का पड़ना, और गरमियों में अधिक गरमी का पड़ना ॥

(१०) वायु का थोडी २ देरमें अपनी दिशा का बदल लेना ॥

दुर्बल और निर्धन मनुष्य प्लेग में अधिक ग्रसित होते हैं ॥

दुर्बल मनुष्य दुर्बलता के कारण मरी के प्रभाव वाली वायु को दूर नहीं कर सकता, और इसे सहन भी नहीं कर सकता, इसी लिए उसे रोग का प्रभाव हो जाता है, हस्त मैथुनी शीघ्र ही ऐसे रोग में फंस जाता है। निर्धन मनुष्य शरीर व मकान स्वच्छ रखने और खाने पीने की चीजों में पूरी चौकसी नहीं कर सक्ता, इस लिए रोग में फंस जाने का अधिक भय है, जिन बड़े नगरों में प्लेग फैली है उन में अधिकतर निर्धन और गरीब मनुष्य ही मरे हैं, मरी के दिनों में चाहिये कि धनाढ्य मनुष्य अपने निर्धन सहवासियों को शरीर रक्षा के नियमों के पालन करने में सहायता देवें ताकि दोनों को लाभ हो ॥

डिसइन्फैक्शन की एक और रीति ॥

मजिस्ट्रेट छावनी बरेली ने यह अयलान किया है, कि गन्ने के छिलकों और पत्तियों की तीन इंच मोटी तह भूमी पर जमा कर अग्नी से जलाने से गृह प्लेग के जन्तुओं से रहित, पवित्र व शुद्ध हो जाता है, इसकी चिनगारियें भड़कती नहीं, परन्तु गरमी तेज होती है, एक सौ रुपैया के व्यय करने से ४६ गृह शुद्ध हो सक्ते हैं ॥

निधन भारत वासियों के लिये यह युक्ति ठीक नहीं है ॥

डाक्टर पेरिस हेल्थ ओफिसर कलकत्ता सन् १९०३–४ की प्लेगकी रिपोर्ट में वर्णन करते हैं, कि तजरुबे से सिद्ध हुआ है, कि प्लेग प्रति वर्ष प्रायः एक ही भाग और एक ही गृहमें आता है, इस लिए गृह को डिसइन्फैक्ट करवा लेना जो कि आज कल प्रचलित है, लाभ दायक नहीं हैं। प्लेग को दूर करने का यह उपाय हो सक्ता है, कि गृह को बिलकुल छोड़ दिया जावे या उसे जला दिया जावे। परन्तु हम पूछते हैं, कि डाक्टर महाशय ही अपने तजरुबे, से क्यों न कोई ऐसी डिसइन्फैक्ट की रीती निकालें जो अधिक प्रभाव शाली हो, बजाय इसके कि दीन भारत वासियों को उन के घरों के जलाने की हिदायत की जावे, इस समय पुनः एक वार प्रार्थना करने के बिना नहीं रह सकते कि विद्वानों के कहे हुए अग्नि द्वारा डिसइन्फेक्ट रीतियों की परीक्षा करें ॥

गृह को मूषकों से रहित करने की युक्ति

लफटेंट कर्नल डब्ल्यू किंग, सैनीटरी कमिश्नर मद्रास प्रेजिडेन्सी प्लेग प्रबंध के विषय में अपनी रिपोर्ट में एक स्थान में अपने तजरुबों का वर्णन करते हैं, जो उन्होंने गृहों से मूषक निकालने के लिए किये थे। एक पात्र (चाटी) में टार और गन्धक का तेजाब मिलाकर उस में से एक चमचा से एक गृह के मूषकों के सब बिलों पर थोड़ा २ और इस गृह के इतस्ततः

जितनी बिलें नजर आई उनमें भी यह मिकश्चर लगा दिया, इस योग को किए छे मास हो चुके हैं, परन्तु इस गृह में आज तक कोई मूषक दृष्टि गोचर नहीं हुवा, केवल एक वार दो मूषक जो बिल्ली के बराबर के थे जिनको अंग्रेजी में (Musk Rat) कहते हैं, दृष्टि गोचर हुए थे, इस से पहले और पीछे कई प्रकार की विषैली औषधियें सेवन की गई और मूषकों को मारा भी जाता था परन्तु वह बराबर कष्ट देते, मिकश्चर लगाने के पीछे पहिले तो मूषक मरे हुवे पाए गए थे, ऐसा प्रतीत होता है कि इस के पीछे शेष मूषक वहां से भय भीत होकर अवश्य गृह को खाली कर गये होंगे ॥

(७) रंगून गज़ट का एक सम्वाददाता लिखता है, कि आज कल मूषकों और प्लेग का मसला बहुत आवश्यक है, मैं आप को विख्यात नैचरलिस्ट वाईरीन की जीवनी में से कुछ लिखकर भेजता हूं ॥

वाईरीन लिखता है कि जिस समय मैं दक्षणी अमरीका से लौटा मैंने देखा कि वालटन हाल में मूषकों की बहुत अधिकता है, इन्हें दूर करने के लिए मैंने एक मूषक को पकड़ा और तारकोल से काला कर के एक बिल में छोड दिया, इस मूषक ने तारकोल की इतनी दुर्गन्धि फैलाई कि सारे चूहों में हल चल मच गई, उस गृह के निकट एक झील थी, प्रातः होते २ सारे चूहे इस झील को पार कर गये और इसी प्रकार इन अपवित्र मूषकों से गृह खाली होगया ॥

१—कहते हैं कि यदि एक मूषक को पकड़ कर गाढे नील में रंगकर बिलों में छोड़ दिया जावे तो भी चुहे भाग जाते

हैं, और भी बहुत सी युक्तियें हैं जिन से मूषकों की मृत्यु हो जाती है, इस लिए उन्हें लिखा नहीं गया ॥

डिपटी कमिश्नरों व म्युन्सिपल कमिश्नरों से प्रार्थना ॥

जहां कहीं प्लेग फैले वहां के समाचार पत्रों के देखने से मालूम होता है, कि शुद्धता का प्रबन्ध पूरे तौर पर नहीं है, समाचार पत्रों वाले कहते हैं कि प्लेग पड़ी है और सफाई नहीं की जाती, म्युन्सिपल कमिश्नर प्लेग के भय से देखने नहीं आते, इत्यादि । मेरे हृदय में विचार आते हैं, कि यह कितना हल्ला मचावें. यदि इन्हें यह मालूम हो कि शुद्धता में बेपरवाही प्लेग के समय नहीं होती, बलाकि अशुद्धता का परिणाम यह रोग होते हैं, पहले हम भी ला परवाह रहते हैं, और उस वक्त के हाकिमों तक फारियाद नहीं पहुंचाते, अपने पक्षकी सिद्धि के लिए कुछ सम्मतियें भी लिखता हूं ॥

डाक्टर एडल जी नोशेरवां जी—फोर्ट भाग में मरी के आरंभ होने और फैलने के कारण इस प्रकार वर्णन करते हैं, कि फ्रेयररोड के अन्दर बदरौओं (गन्दी नालियें) जगह२ खुली हुई थीं । यूरोपियन हस्पताल से टकसाल के बाजार तक स्थान २ पर नालियों में छेद होरहे थे, और उन के निकट २ अग्नि जलाई जाती है, जिस समय तक नालियें खोली नहीं गईं, कभी २ इक्का दुक्का रोग से कोई मृत्यु होती थी, परन्तु नालियें खुले हुए, एक सप्ताह व्यतीत हुआ होगा कि रोग बला की

तरह टूट पड़ा, और शीघ्र ही सारे भाग में फैल गया, यह दशा देखकर बदरोएं बन्द करनी पड़ीं, कुछ समय के पीछे मिण्डारोड के उत्तरी सिरे की ओर दो तीन (मोरियां) खोली गईं, परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही समय में एक भाटिया युवक जो निकट ही रहता था प्लेग में ग्रसित हो गया, जिन २ प्रान्त मोहल्ला में मरी गई वहां पहले पहल यह मलीन दुर्गन्धिता ने छोटे स्थानों को प्रिय समझा, चाहे वह इसके पीछे शुद्ध घरों में जा पहुंची हो॥

वृटिश मैडिकल जर्नल—के समाचार दाता ने एक बार अत्युत्तम लेख लिखा था इसमें, वह लिखते हैं "कि मरी का कारण गंदगी है वहां गंदगी के ढेर कई वर्षों से स्थित चले आते थे। चुनांचि जो मनुष्य बम्बई स्वास्थ्य रक्षा के हालात को जानता है, वह मरी के हो जाने का कारण आश्चर्यजनक न समझेगा, नगर का वह भाग जिस में देशी निवास करते हैं बनावटी पृथ्वी का बना हुवा है, भूमी अशुद्ध व मलीन मादा से बनाई गई है, और बहुत अल्प समय के अन्दर बड़े २ गृह कई २ मंजिल के बनाए गए हैं, और इन गृहों से कोई नाली नहीं लगाई गई जिस से गंदगी गृह से निकल कर किसी बड़ी मोरी में शामिल हो सके, शरीर के मल (विष्ठा आदि) को भंगी आदि सिर पर उठा कर छकड़ों में एकत्र करते रहते हैं, इन छकड़ों को रात्रि के समय खाली किया जाता है, जल पृथ्वी पर गिरता है, और वहीं शुष्क हो जाता है, इस प्रकार वायु कैसे शुद्ध हो सक्ती है॥

यह विषय ऐसा स्फुट और सीधा है की वर्णन के योग्य नहीं, यदि कोई मनुष्य बाईकल्ला और विक्टोरिया टरमीनस के बीच

में रेलवे में यात्रा करे तो रेल में इतनी दुर्गन्धि आती है, कि वह साफ तौर से समझ जावेगा, कि ठीक मलीनता ही इस नगर में मरी का कारण हुई" ॥

टाइम्ज़आफ इण्डिया के एक सम्वाददाता ने इसी प्रकार का एक लेख लिखा था, जिस में उस ने यह सिद्ध किया था, कि बंबई में प्लेग का मूल कारण गंदगी है, वह एक स्थान पर लिखते हैं कि नगर में और कई रोग हुआ करते थे, जिनका मूल कारण भी गंदगी थी यह रोग हमें खबरदार करते थे, कि चैतन्य हो जाओ और अपनी दशा को संभालो इन बातों की ओर से हमने लापरवाही की जिसका परिणाम प्लेग है। यह ठीक है कि शुद्धता से मरी के कीटाणु जीवित नहीं रह सकते, इस लिए यदि किसी नगर में शुद्धता है. वहां यदि कोई की कीटाणुओं को ले भी जावें तो वह मर जावेंगे, अस्तु यहां के मनुष्यों का धर्म्म है कि स्वयम् शुद्ध पवित्र रहें, और अपने गृहों को शुद्ध रक्खें वहां गवर्मेन्ट का धर्म्म है कि बाजारों और नालियों की खूब शुद्धि करवावें, और प्रजा को भी गृह आदि शुद्ध रखने की हिदायत करे, और उन्हें ऐसा करने में सहायता देवें, डिपटी कमिश्नरों व म्युनिसपल कमिश्नरों का धर्म्म है कि अपने २ नगर की शुद्धता का प्रबन्ध करें, प्रजा के हित के लिए अपने सुख (आराम) को छोड़ देवें. इस प्रकार करने से उन्हें लोक परलोक में लाभ होगा ॥

एक और जरूरी नोट—सीली पृथ्वी प्रायःरोग फैलाने का कारण है, अनुसंधान करने वाले कहते हैं, कि प्लेग के कीटाणु सीली पृथ्वी में वृद्धि पाते हैं, ऐसी पृथ्वी से यह रोग

अधिक उत्पन्न होता है, अस्तु हर एक मनुष्य को पूरा ध्यान रखना चाहिये, कि वह नमदार जगह में तो नहीं रहता, नमदार जगह गीली वायु से अधिक हानि कारक है, यह भी स्मरण रहे कि इसे दूर करने का उपाय अग्नि है ॥

प्लेग प्रतिबन्धक कुछ प्रयोग ॥

यद्यपि कुछ योग लिखे भी जा चुके हैं तथापि इस स्थान पर कुछ विविध और परीक्षित योग लिखे जाने अच्छे मालूम होते हैं, हमारा विचार है कि एक पुस्तक प्लेग की चिकित्सा पर लिखी जावे और इस में सब योगों का वर्णन किया जावे, इसलिए यहां केवल मोटे २ और परीक्षित योग लिखे जाते हैं ॥

(१) शुद्ध पारा १६ तोला, थोहर का दूध १६ तोला, खारी नमक १६ तो० इन वस्तुओं को दो दिन खरल करके टिकियां बनावें और लोहे के पात्र (कुज्जी) में रख छोड़ें, इसके मुखपर खरिया मट्टी की डली देवें और इस प्रकार मट्टी आदि से मुख बंद करदे, और फिर टिकया के ऊपर नीचे नमक देकर मध्य में वह लोहे का पात्र रक्खे और एक २ दिन रात अग्नि उस के नीचे जलावे, श्वेत पारा का जौहर उड़ कर ऊपर जा लगेगा, इसे उतार रक्खें, जो मनुष्य १ माशा लवंग के साथ ३ रत्ती की मात्रा में खावे उसे दो घंटे के बाद दस्त शुरू हो जावेंगे, इस में ठंडा जल पीना चाहिए, इन दस्तों के आने के पीछे शरीर ऐसा शुद्ध हो जावेगा, ६ मास तक किसी विषेले रोग का प्रभाव न पड़ेगा टीका ताऊन का यदि कुछ गुण है तो वह केवल एक महीना तक का, हम ने एक वैद्यक योग लिख दिया है, पारे का

नाम ही इस योग की सत्यता का प्रमाण दे रहा है, प्लेग रागे हुए पर भी यह अत्यन्त लाभ दायक है, मूषक, बिच्छू, सर्प, सिंह, कानखजूरा आदि २ सब प्रकार के विषों को दूर करता है ॥

शिंगरफ से पारा निकालने की विधी ॥

शिंगरफ रूमी नींबू के रस में दिन भर खरल कर के बारीक टिकिया बनालें और एक हांडी के नीचे रक्खें और फिर इसके ऊपर दूसरी हांडी उल्टादें, और दोनों का मुख बहुत दृढ़ बांध दें, नीचे अग्नि जलावें, पारा उड़कर ऊपर की हांडी को जा लगेगा, ऊपर की हांडी पर कपड़ा भिगोकर रखना चाहिए, ताकि हांडी का पेंदा ठंडा रहे, और पारा वहां जम जावे, ठंडा होने पर पारा पूंछकर दो चार बार छान लें ॥

(३) शिंगरफ से निकाला या शुद्ध गन्धक आमलासार, फौलादभस्म, सोनामक्खी भस्म, कृष्णअभ्रक भस्म, सम भाग ले, पहले तो पारा और गन्धक को कजली (बारीक) करें पुनः और औषधियें मिलाकर ककोडा अफल की जड़ के पानी में तीन दिन खरल करें, और फिर इस की जड़ में गढ़ा सा कर के उस में खरल की हुई बारीक औषधियों को भली भांति सम्पुट करें, दस सेर उपलों के मध्य में रखकर अग्नि दें, ठंडा होने पर निकाल करके सब के १/१० भाग मीठा तेलिया मिला देवें, और (बारीक) खरल कर रक्खें, मात्रा १ रत्ती, प्लेग के रोगी के लिए राम बाण है, यदि शहद और अदरक के जल के साथ दिया जावे, यदि हर मास में ८ दिन जल से खा छोड़ें तो भी ठीक है, तपदिक वीर्य की निर्बलता आदि को भी लाभकारी है॥

(४) एक वृद्ध सय्यद मुरतजाहुसेन सीतापुर निवासी ने निम्न लिखत योग प्रसिद्ध किया था, जो कि वह कहते हैं, कि हमारे हज़रत रसूलिल्लाह साहिब ने स्वप्न में बताया था, वह भी अच्छा मालूम होता है, इस वास्ते दरज करते हैं, योग नीम के हरे पत्ते या फूल (हरे फूल या हरे पत्ते दोनों में से एक ले लो) चिरायता, शाहतरा, तीनों वस्तुएं सम भाग ले लो, परन्तु हर एक वस्तु को अलग २ लेकर जल में भिगो रक्खो प्रातःकाल नीम के पत्तों को, जो कि भिगोये गये थे, खूब बारीक पीस लो, चरायता, शाहतरा जितना चाहो लो खुश्क कर के छान कर इस में मिला लो और किसी पात्र में इतना पकाओ कि पाक की तरह हो जावे, अथवा खमीरा या पाक के समान चाशनी बनालो, इस के पीछे तोल कर के प्रति १००० खुराक में १० तोला केशर मिलालो, प्रति दिन मात्रा ३ माशा की है, और तीन दिन शक्कर के साथ खानी चाहिये, सहस्र मात्रा प्रति खुराक तीन माशे के हिसाब से तीन सहस्र माशा हुए अर्थात् २५० तोले होते हैं, १ तोला केशर २५ तोला तैयार औषधि में डाली जावे, नीम के पत्ते, चिरायता, शाहतरा, जितना चाहो लो परन्तु तैयार करने के पीछे तोल कर लिखे हुवे प्रमाण के अनुसार केशर मिलालो, अर्थात् २५ तोला औषधि में १ तोला केशर डालो ॥

(४) डाक्टरी में प्लेग से बचाने वाला विख्यात योग यह है, कर्पूर ½ ग्रेन, कुनीन सल्फास २ ग्रेन, कारबोलिक एसिड ¼ ग्रेन, सफूफ पटकाक ¼ ग्रेन, यह प्रमाण १ गोली का है, जितनी गोलियें चाहो बना लो, दिन में दो बार गाय के दूध के साथ सेवन करें ॥

(५) युनानी पुस्तकों में प्लेग के प्रतिन्धक उपाय निम्न लिखित पाक लिखा गया है:- (योग) बनफशा, गुलाब, फूल, पूदना, मरजंजोश, हर एक वस्तु पौने तीन तोले । गिल अर्मनी दरोजन, श्वेत चन्दन, बहिमन सफेद, धनियां जो सिरका में भिगोकर सुखाया हो, हर एक वस्तु १७॥ मासा, एलवा, केशर, गुलमखतुम, मस्तगी, तुरंज बीज पिसे हुए, मूंगा की जड़ हर एक वस्तु १४ मासा, अम्बर २ माशे, याकूतसुर्ख ४॥ माशे, सब औषधियें कूट छान कर १ पात्र अर्क गुलाब में जिसमें सात रत्ती जहरमोहरा हल किया हो तर करें, फिर सेब के शरबत में या बिही के शरबत में पाक तैयार करें,जो मनुष्य इस पाक का नित्य ४ रत्ती खावे और उसको बनफशा के रोगन में मिलाकर नाक पर मले तो इस रोग से बचा रहेगा ॥

(६) निम्न लिखित पाक भी युनानी पुस्तकों में उत्तम वर्णन किये गये हैं,बादरंजबोया, गुल सुरख, गावजबान,शाहतरा, पान के पत्ते, हर एक वस्तु तीन भाग, बहमन सुरख, बहमन श्वेत, प्रत्येक १½ भाग, लाजवर्द,तबाशीर ११ भाग,केशर १भाग,गिल-अर्मनी १ भाग,द्रोनज अकरबी १ भाग, जरशक १ भाग, कबाब चीनी, नरकचूर ११ भाग, हरड का छिलका १ भाग, अबरेशम ३ भाग, श्वेत चन्दन, पोस्त बेरोंपिस्ता, दाना इलायची छोटी, लाल मूंगा, याकूत सुर्ख, वर्क चान्दी, अनाविंध मोती, कहरवा, अगर, तेजपात, प्रत्येक ¾ भाग, मीठे अनार का पानी, अर्क, गुलाब, अर्क केवड़ा, और अर्क गावजबान प्रत्येक १०भाग। सबको पीस अर्क केवड़ा में मिलालें उस के पीछे मिश्री की चाश्नी में डालें और सम्भाल लें, चाश्नी अर्कों में करें। मात्रा

१ तोला से तीन तोला तक, इसको केवड़ा आदि अर्क के साथ सेवन करें। जहरमोहराखताई २ माशे, गुल गुलाब १ माशा, खुश्क धनियां ७ माशे, कुल्फा ७ माशा, श्वेत चंदन ७ माशा, गाव जवान ३ माशा, तवाशीर ३ माशा, कस्तूरी असल १½ माशा। पहिले जहरमोहरे को अर्क केवड़ा से मिलावें फिर श्वेत चन्दन और गुलाब अर्क में खरल कर के और औषधियों को मिला रक्खें, और मिश्री ७ तो० शहद ५ तो० में सबको मिलालें, इसकी मात्रा ३ माशे से ९ माशे क नीम के अर्क या गुलाब के अर्क के साथ है, सदैव अपने पास रक्खें, मरी के दिनों में इसका सेवन मरी से बचाता है, हमारी सम्मती में स्वर्णभस्म, चांदीभस्म, अकीकभस्म, मूंगाभस्म, याकूतभस्म, हड़ताल पीली भस्म, रसकपुरभस्म, संखियाभस्म, आदि २ सब प्लेग से बचाने वाली हैं, किसी वैद्य की सम्मति के अनुसार हर एक मनुष्य इनका सेवन कर सकता है, यह अति हितकर वस्तु हैं॥

अन्तिम प्रार्थना

यदि भूल चूक से अथवा टाईप आदि की भूल से कोई अशुद्ध रह गई हो तो विद्वान वैद्यों के सूचित कर देने पुनरावृत्ति में शुद्ध कर लिया जावेगा, यदि कोई ऐसी अशुद्धि हो तो विद्वान वैद्य क्षमा करें, क्योंकि मनुष्य अशुद्धियों से भरा हुवा है, मैने अपना कर्त्तव्य पूरा किया, सब मनुष्यों का कर्त्तव्य है, कि इसका अनुकरण करें, और औरों को करावें, ताकि प्लेग भारत वर्ष से नष्ट हो जावे, और प्लेग की चिकित्सा का रिसाला निकालने का जो विचार है वह प्रसन्नता से मुझे छोड़ना पड़े॥

ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य लाहौर॥

कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की आविष्कृत

अमृतधारा लोजिन्जज

अमृतधारा की मीठी टिकिया

जिस प्रकार विलायत से पेपरमेन्ट की टिकियां आती हैं, वैसी टिकियां अमृतधारा प्रविष्ट करके हमने बनवाई हैं, जिनको मुख में रख कर चूसते रहने से अमृतधारा का लाभ होता है, और दन्त दृढ होते हैं, दान्तों में कीड़ा नहीं लगता, मुख की दुर्गन्ध दूर होती है, कफ, खुरखुरी, खांसी आदि नहीं होती, बालक भी इनको खाकर रोगों से सुरक्षित रहते हैं। मूल्य १०० टिकियां केवल ।)

मूल्य प्रति बकस ३ टिकियां ॥=) } **अमृतधारा साबन** { मूल्य प्रति टिकिया -)

चर्मज रोगों के वास्ते खालिस अमृतधारा के स्थान में हमने अमृतधारा मिश्रित साबन तैय्यार करवाया है, जिसके बर्तने से न केवल चर्मज रोग दद्रु, चम्बल, फोड़ा, फुन्सी खाज, पित्ती आदि दूर होते हैं, बल्कि चेहरा पर मलने से चेहरे के कील छाईयां आदि को दूर करता है, त्वचा को सुन्दर और कोमल बनाता है, बालकों को मल कर नहलाने से उनको चर्मज रोग नहीं होते हैं। और डिसइन्फेक्टैंट है। रोगियों को देखने के पश्चात् इस से हाथ साफ करने से कीटाणु तुरन्त नष्ट होते हैं, और रोग का भय नहीं रहता। कोई औषधसाबन इसका सामना नहीं कर सकता। जितनी अमृतधारा इस में डाली जाती है, उसकी तुलना में मूल्य हमने कम रक्खा है॥

मिलने का पताः—

मैनजर कार्य्यालय अमृतधारा, अमृतधारा भवन,

अमृतधारा डाकखाना, अमृतधारा रोड लाहौर॥

देशोपकारक औषधालय की

किञ्चित आवश्यक औषधियों के नाम संक्षिप्त गुण और मूल्य ॥

अमृतधारा ॥

इसकी प्रशंशा पृथक् 'अमृत' नामक पुस्तक में अङ्कित है। और यह इतनी प्रसिद्ध है, कि सब जानते हैं, कि अमृतधारा न केवल लग भग सर्व मानुषी रोगों की जो साधारणतः घरों में बूढ़ों, बच्चों, जवानों, पुरुषों और स्त्रियों को होते रहते हैं अचूक इलाज है, प्रत्युत पशु पक्षी आदि के रोगों को भी दूर करती है। विचित्र प्रभाव ईश्वर ने भर रक्खा है। रोग नाम की शत्रु है। जहां रोग हो वहां ही जा पहुंचती है। हर ऋतु में, हर देश में, इसको अपने पास रखकर रोगों के भय से निर्भय रह सकते हैं॥

सब प्रकार का शिर दर्द, कबज, खांसी, पार्श्वशूल (न्योमोनिया), नज़ला जुकाम, विशूचिका, मन्दाग्नि, अरुचि, अफारा, गुड़गुड़ाहट, मरोड़ परिणामशूल, (दर्द कोलञ), अतिसार, आमातिसार, वमन, मृगी, दन्तपीड़ा व दाढपीड़ा दांतों से रक्त जाना, व पानी लगना, कर्णपीड़ा, कर्णघाव, कर्णखाज, कर्णशोथ, कर्णकृमि, नासिकार्श, नाक में फुन्सियां, नासिका में दुर्गन्ध, छींक नेत्रपीड़ा, फोड़ा, फुन्सी, सब प्रकार के घाव, कान का पकना, रान का लासना, दाद, चम्बल, गला बैठना, मुखशोथ, भिड़ का डंक, खील का डङ्क, बिच्छू का डङ्क, सर्प का डङ्क, बावले कुत्ते का विष, गले में दर्द, सर्व प्रकार के ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, उपदंश गिलटियां, वद्ध, संधिवात, सर्व प्रकार का शोथ, आन्तरिक व बाह्यिक पीड़ायें, चोट से दर्द, बवासीर, मस्तिष्क की निर्बलता, प्लेग, रक्तवमन, राजयक्ष्मा,

प्रसूत, हृद्रोग, कामला, वायगोला, आर्तव सम्बन्धी सर्व रोग, कण्ठमाला (हज़ारां), स्त्रियों का शिर दर्द, गुदभ्रंश, बालरोग, डब्बा रोग, बच्चा का दूध न पीना,, सन्निपात, शिर घूमना, सन्न्यास, कम्प रोग, लकवा, अर्द्धाङ्गवात, शिर की खाज, नेत्ररोग, फोळा, बह्मनी, नाखूना, कुकरे, पड़वाल, घ्राणनाश, नकसीर, जिह्वाशोथ, मुख में फुन्सियां, मुख का पकना, ओष्ठशोथ, ओष्ठफुन्सी, दन्तकृमि, मसूढ़ा शोथ, गले पड़ना, स्वरभंग रक्त थूकना, पीब थूकना, छाती का शोथ, फुफ्फुस शोथ, स्तन शोथ, स्तन पीड़ा, आमाशयवात, मतली, यकृत पीड़ा, यकृत बात, जलोदर, कठोदर, पाण्डुरोग, आमातिसार, प्लीहोदर, वृद्धोदर, वायगोला, उदरकृमि भगन्दर, वृक्कद्वैपीड़ा, वृक्कद्वै शोथ, मूत्राशय पीड़ा, मूत्राघात मूत्राशय, की शोथ, अण्डवृद्धि, प्रदररोग, गर्भाशय की शोथ, गर्भाशय की पीड़ा, योनि से पानी निकलना कटिपीड़ा, रिंधनवाय, घुटने का दर्द, एड़ी, पिंडुली, का फूलना, नितम्ब पीड़ा, पित्ता, सर्व प्रकार के रोग, नासूर, सर्व प्रकार की खाज, छपाकी, गुली अर्थात् ओष्ठ का सूजना, बहु स्वेद, अग्नि से जलना, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि दूर होते हैं ॥

आन्तरिक व वाह्यक दोनों प्रकार से सेवन की जाती है ॥ मात्रा २—३ बूंद है ॥

मूल्य २॥) फी शीशी दवाई ४ ड्राम। नमूना की छोटी शीशी ॥), २ औंस की शीशी मानो असल से चार गुणा ९), बूंद गिराने वाली शीशी जिससे जितने बूंद चाहो गिरा लो ४ ड्राम २॥।) मिलने का पताः—कारखाना 'अमृतधारा' लाहौर॥

आबेहयात—"अमृतधारा" की नक़ल है। प्रायः विज्ञापनवाज़ों ने नक़लें आरम्भ करदी है, और लोग अल्प मूल्य देख कर मंगवाते हैं। इस लिए यह नक़ल बनाकर रक्खी है, जो इन नक़ालों से फिर भी अच्छी होगी। असल व नक़ल का फ़र्क दिखा देगी॥

मूल्य फी शीशी ॥।) नमूना की छोटी शीशी ।)

पुरुषों के विशेष रोगों की औषधियां

अकसीर नं १ महत् वाजीकरण औषधि—बहुतसी वीर्य्य वर्द्धक, उत्तेजक औषधियों का संग्रह है। नपुंसकता की सम्पूर्ण अवस्थाओं में हितकर है, यह पुरुषों के गुप्त रोगों के वास्ते जनरल औषधि है। नपुंसकता के अतिरिक्त वातज रोग, कफ़ज रोग, खांसी, नज़ला, जुकाम, कटि पीडा, सन्धिवात को हितकर है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्न दोष को बहुत लाभदायक है। प्रभाव किञ्चित उष्ण है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥), मात्रा १ गोली सायम् प्रातः ॥

अकसीर नं. १०—बलवर्द्धक है, प्रत्येक जाड़े में एक मास खा छोडने से कभी बल कम न होगा। नामर्द भी मर्द होजाते हैं। बूढ़ों को युवा बनाती है। मात्रा १ गोली सायम् प्रातः। मूल्य जिसमें कस्तूरी पड़ी हुई है। ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥), जिसमें कस्तूरी नहीं पड़ी परन्तु धातुपुष्ट शेष सब औषधियां वही हैं ६४ गोली २), ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं ११—हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय, को पुष्टिदायक है। आनन्दवर्द्धक है। शीघ्रपतन, शुक्रमेह स्वप्न दोष को हितकर है। याकूती का भी काम देती है। ताऊन के दिनों में खाने से मानसिक बल स्थिर रहता है। और बड़ा गुण करती है। उत्तेजक है, अमीरों के खाने योग्य, प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल, इसका प्रधानांश स्वर्ण है, मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥), नमूना ४ गोली ॥=)

अकसीर नं. १५ मकरध्वज—वैद्यक औषधियों का यह राजा माना जाता है। इसका प्रधान अंश चन्द्रोदय है। जिसका बनाना नितान्त कठिन है। इसके खाने से ही असली जवानी आती है। वीर्य्य को सन्तानोत्पत्ति के योग्य बना देता है। वीर्य्यसम्बन्धी सर्व रोग पूर्णतयः दूर होजाते हैं। राजे

महाराजे सदैव इसको अपने पास रखते हैं, और प्रायः खाते हैं, जिसको खरीदने की सामर्थ्य है, उसको अन्य औषधि की आवश्यकता ही क्या है । मूल्य ५०) फी तोला, है । फी माशा ४।), मात्रा ४ रत्ती है । प्रतिवर्ष १ तोला खा छोड़े तो पूर्ण आयु बढावे और बली रखे ॥

अकसीर नं० १६ बृहद्बंगेश्वर रस—इसमें स्वर्ण भस्म, चांदी भस्म, मोतीभस्म, कस्तूरी, बंग भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, भीम सेनी कर्पूर, आदि सम्मिलित हैं । आनन्ददायक, पौष्टिक, और उत्तेजक है । शुक्रमेह तुरन्त दूर होता है । स्वप्नदोष, शीघ्रपतन को गुणकारी है । वीर्य्य गाढ़ा होता और उत्पन्न होता है । २० बीस प्रकार का प्रमेह और बारम्बार मूत्र आना, दूर होता है । जठराग्नि दीपन होती है । अग्नि, बर्ण, बल, वीर्य्य और तेज बढ़ता है । पुराने ज्वरों पर भी देते हैं । हृदय, मस्तिष्क, यकृत को बलदायक है । मूल्य ३२ गोली ४) नमूना ८ गोली १)

अकसीर नं. २० मनमथ रस—बूढ़ों को युवा, और युवा को मल्ल बनाने के वास्ते यह योग शिव जी महाराज का निर्म्माण कृत है । उत्तमता यह है, कि तीव्र नहीं है । चिरस्थाई लाभ धीरे २ करता है । सदैव खाने में कोई हानि नहीं है । शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेह को दूर करता है, और उत्तजक है। बम्बई के एक ७० वर्ष के वृद्ध २२ बच्चों के पिता ने मुझे लिखा था, कि युवावस्था के प्रारम्भ से प्रत्येक जाड़े में २ सप्ताह इसको सेवन करता है, और वह अब तक भी पूरी शक्ति रखता है । सन्तानोत्पत्ति के योग्य है । खांसी नज़ला, जुकाम, स्वास, पांडु, कामला, अपाचन को हितकर है । रक्त उत्पन्न करता है, पौष्टिक, उत्तेजिक, व स्तम्भक है । मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं०२३ दूध घृत पाचक—इसे १ चावल से १ रत्ती तक प्रकृति अनुकूल नित्य खाने से दूध घृत पचाने की शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती है। सेरों तक नौबत पहुंचती है। १४ दिन के भीतर पूरा प्रभाव प्रतीत होता है।

४० दिन के भीतर सेरों दूध पचने लगता है । ७० दिन के सेवन से सम्पूर्ण कफज व बातज रोगों को दूर करता है। घी दूध पचाने की शक्ति सदा के लिये बढ़ा देता है। मूल्य ५) रुपये तोला, नमूना ३ माशा १।)

अकसीर नं० २४, सुखकारक—स्तम्भक है, शीघ्रपतन रोग वालों को जब तक रोग दूर न हो, कभी २ आवश्यकता पड़ती है । तीसरे पहर दूध के साथ खावें पश्चात् कोई खट्टी, लवणयुक्त वस्तु न खावें, चौगुणा स्तम्भन होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

अकसीर नं· २७ (अब निर्बल न होंगे)—रति पश्चात् एक दो गोलियां खालीजिये, उदासी दूर, सुस्ती चकनाचूर, बल ज्यों का त्यों ॥ तीसरे पहर खावें तो स्तम्भन हो, नित्य दूध के साथ सायम् प्रात खावें, तो शुक्रमेह शीघ्रपतन को हितकर है। मूल्य ६० गोली १), नमूना ≈)

अकसीर नं· २८ तैल मालकंगिनी—कफज वातज रोग नाशक, नपुंसकता, मस्तिष्क की निर्बलता, अस्मृति, शीघ्रपतन, कटिपीड़ा, सर्वांगपीड़ आदि को दूर करता है ॥ करतल पर मलें तो दृष्टिशक्ति को बल देता है । स्तम्भन के वास्ते भी वर्तते हैं। हस्त मैथुन निर्बलों को तिला का काम देता है। नसें और पट्ठे दृढ़ होते हैं । मूल्य १) शीशी ४ डराम, नमूना ≈।

अकसीर नं· ३१, चन्द्रप्रभा वटी—यह एक वैद्यक योग है, जो विविध नामों से बड़े २ वैद्य बेच रहे हैं। यह मूत्र के साथ शुक्र (मनी आदि. जाने को रोकती है । २० प्रकार के प्रमेह, पथरी, अफारा, शूल, मदाग्नि, अण्डवृद्धि, पाण्डु, कामला, बवासीर, भगन्दर, नासूर, कटिपीड़ा, कास, श्वास, हिक्का, डकार, नजलादि को हितकर है । रज वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है । मात्रा २ गोली सायम् प्रातः । मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं· ३३ आयुर्वेदिक टानिक—रज वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है । जब कोइ विशेष कारण प्रतिबन्धक न

हो तो स्त्री पुरुष दोनों को गाय के दूध के साथ खिलाना आरम्भ करें । एक दो मास खावें, और प्रत्येक रजोधर्म्म के पश्चात् गर्भाधान करें तो ईश्वर कामना पूरी करे । कह गोलियां उत्तेजक, शुक्रमेह स्वप्नदोष, शीघ्रपात नाशक, शुद्धरक्तोत्पादक स्नायुबल वर्द्धक, सन्धिवात नाशक है, और कटि पीड़ा, गुल्फपीड़, पार्श्वशूल, रानपीड़ा, रींघनबाय, आदि सर्व वातज कफजरोग, प्रमेह, कामला, रक्तक्षीणता, शोथरोग, जलोदर, कठोदर, मूसे का विष, स्त्रियों के मासिक रज की कमी व अधिकता, अन्त्रवृद्धि को हितकर है । मधु व पानी के साथ स्थूलता को दूर करती है । अंग्रेजी टानिक औषधियों का इस का मुकाबला करो अव्वल दर्जे रहेगी । मात्रा १ गोली सायम् प्रातः प्रकृति अनुकूल न्यूनाधिक कर सकते हैं । मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमुना ८ गोली ॥)

अकसीर नं. ३४ (क)—शुक्रमेह (धात जाना) के वास्ते यह अद्वितीय औषधि है, स्वप्नदोष को बहुत शीघ्र दूर करता है । शीघ्रपतन को भी हितकर है। वीर्य्य को गाढ़ा करने में अनुपमेय है । प्राकृत स्तम्भन को बढ़ाती है । मात्रा १ गोली सायम् प्रातः । मूल्य ३२ गोली २), नमुना ८ गोली ॥)

अकसीर नं. ३४ (ख)—उपर्युक्त औषधि के भीतर केशर, कस्तूरी, अम्बर, मोती, शिलाजीत, स्वर्ण, चांदी अभ्रकादि भस्में और संयुक्त की जाती हैं, तो यह उपर्युक्त लिखित गुणों के अतिरिक्त हृदय मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय को बल देती है ! उत्तेजना बहुत करती है। अमीरों के खाने योग्य है । मूल्य ३२ गोली ५), १६ गोली २॥) नमूना ८ गोली १।)

अकसीर नं. ३६ (क)——सुस्त पट्ठों को पुष्ट करने में अद्वितीय है। जिनको केवल उत्तेजना की कमी हो, वह इसका सेवन करे । खाने और लगाने दोनों के काम आता है । उसे पट्ठे पुनर्जीवित होजाते हैं। एक तिनका से लगाकर मक्खन के साथ खाते हैं । जिनको केवल कमी उत्तेजना हो उनको दीजाती है। सुस्त इससे चुश्त होजाते हैं । प्रभाव उष्ण है । वातज कफज रोग, सन्धिवात, गुल्फ पीड़ा, रींघनवाय, श्वास, कफज, कास, स्नायु की निर्बलतादि को हितकर है। मूल्य ५) शीशी ४ डराम, आधी २॥), नमूना ॥।)

अकसीर नं. ३९—शुक्र जनक है, शीघ्रपतन व वीर्य्यस्राव को दूर करती है। मस्तिष्क के लिये अति लाभदायक है। वीर्य्य को खूब बढ़ाती है, और गाढा करती है। शारीरिक बल अधिक करती है। शीघ्रपतन के लिये विशेष रूप से हितकर है। शुक्रमेह को दूर करती है। लेसदार औषधि होने पर भी काविज़ नहीं है। इसके खाने से प्राकृत स्तम्भन बढ़ता है। मूल्य फी पाव २), आधपाव १), छटांक ॥)

अकसीर नं. ४० स्वप्नदोष नाशक—यह औषधि विशेष कर स्वप्नदोष ग्रस्तों के वास्ते है। शुक्रमेह व शीघ्रपतन नाशक है। स्तम्भक भी है। स्वप्नदोषाधिक्य १ मास के भीतरही नष्ट होता है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली।)

अकसीर नं. ४१ कामिनी वशीकरण—जो लोग कहते हैं, कि स्तम्भन की कोई औषधि उनको गुण नहीं करती, इसका सेवन करें। ६ गुणा बन्धेज होता है। यदि दैनिक यह गोलियां खाई जावें तो शीघ्रपतन दूर होकर सदैवा स्तम्भन उत्पन्न होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष का मूलच्छेद होता है। पट्ठों को पुष्ट और दृढ़ करती है। कस्तूरी, सोना, चांदी, मोती, केशरादि इसके प्रधान अंश हैं। ३० गोली २५), ६ गोली ५), १ गोली १)

अकसीर नं. १८, शिंगरफ भस्म—वाजीकरण में अनुपम मानी गई है। पट्ठों को असाधारण बल प्रदान करती है। नपुंसकता दूर करने की बलवान् औषधि है। बूढ़ों की लाठी है। वातज व कफज रोग यथा अर्द्धाङ्ग वात, आर्दितवात, सन्धिबात, शून्यवात, कफजखांसी, मन्दाग्नि आदि का रामबाण है। शुद्धरक्तोत्पन्न करके चेहरे को लाल करती है। मूल्य १ तोला १०), ३ माशा २॥), नमूना १ माशा १), शीतऋतु में अवश्य सेवन करें। दर्जा खास १००) तोला है॥

अकसीर नं. १९ वंगभस्म दर्जा अव्वल—यह सवासौ पुट से पहिले शुद्ध की जाती है, फिर भस्म की जाती है। चांदी भस्म भी इसके सामने

कुछ नहीं । शुक्रमेह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र सोजाक, करेह को हितकर है, उत्तजक है। 'मर्द को बंग और घोड़े को तंग' की उक्ति इसी पर ठीक आती है । मूल्य १ तोला १०), ६ माशा ५), नमूना १॥ माशा १।), मात्रा १ रत्ती ॥

बङ्गभस्म सामान्य—कलई को साधारण शुद्ध करके बनाया जाता है, गुण लगभग वही हैं जो ऊपर वर्णन किए गए हैं, परन्तु प्रभाव किञ्चित देर से होता है । मूल्य १ तोला २), ३ माशा ॥) मात्रा ३ रत्ती ॥

अकसीर नं. २५, त्रिधातु भस्म—यह कलई, सीसा व जस्त की मिश्रित अत्युत्तम पीत रंग की भस्म है । जो प्रदर सोम, शुक्रमेह, आदि को दूर करने, वीर्य्य को गाढा करके प्राकृत बन्धेज (स्तम्भन) उत्पन्न करने में विचित्र औषधि है । मूल्य केवल १ तोला ४), ६ माशा २), नमूना १॥ माशा ॥)

अकसीर नं. २६, स्वर्ण भस्म अव्वल दर्जा—पट्ठों को पुष्टि देती है, हृदय, मस्तिष्क, यकृत, वकर्द्व, मूत्राशय, जननेन्द्रिय सब को बल प्रदान करती है । वीर्य्यवर्द्धक और उत्तेजक है । घृत दूध पाचनकारी, अग्निरक्षक है । ३ माशा भी यदि एक बार खा लो, तो वर्षों की गई हुई शक्ति पुनः आजाय शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता, नपुंसकता, स्मरणशक्ति, तथा हृदय की निर्बलता सब दूर हों । मूल्य १ तोला ८०), ३ माशा २०), १॥ माशा १०), ४ रत्ती ४)

स्वर्णभस्म दर्जा दोयम—गुण वही हैं, परन्तु किंचित् देर में प्रभाव होता है । मूल्य १ तोला ४०), ६ माशा २०), १॥ माशा ५), ४ रत्ती २

मूंगाभस्म—पित्त प्रकृति वाले, धातु विकार में ग्रस्तों को दीजाती है । सस्ती किन्तु बड़ी उत्तम औषधि है पुरानी शिर पीड़ा, मस्तिष्क की निर्बलता, नज़ला, प्रतिश्याय, रक्तवमन, रक्तपित्त को हितकारक है । वीर्य्यकोष, मूत्राशय की गरमी को दूर करती है । मूत्रदाह को भी हितकर है । मूल्य १ तोला, ॥) छे माशा ।)

संखियाभस्म (दर्जा खास)—यह भस्म विशेष रूप से बल और उत्तेजना के लिए तैयार की गई है । १४ दिन के भीतर पर्य्याप्त बल आता है।

और ४० दिन के भीतर तो रुकना कठिन होता है, इस के अतिरिक्त सम्पूर्ण वातज कफज रोगों को रामबाण है। बूढ़ों की सहायक है, उनको युवा बनाती है। मूल्य ३ माशा १२), १ माशा ४), नमूना २ रत्ती १), मात्रा खशखाश से १ चावल तक ॥

संखियाभस्म—वातज, कफज, सन्धिवात, अर्दितवात, अर्द्धांगवात, कफज कास, श्वास, कटिपीडादि को हितकर है, उत्तेजक है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

चांदीभस्म—धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हृदय व मस्तिष्क आमाशय की निर्बलता, नपुंसकता, को हितकर है। प्रमेह, हृदय की धड़कन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ८), ३ माशा २), नमूना १॥ माशा १)

फौलादभस्म शिङ्गरफी—यह भस्म फौलाद की शिंगरफ के द्वारा की जाती है। धातुरोग यथा शीघ्रपतन, वीर्य्यस्राव, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढ़ाता है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत को बल देती है, रंग की श्वेतता को दूर करता है। मूल्य १ तोला ११), ३ माशा ।=)

फौलादभस्म, (दर्जा) खास—यह भस्म असली फौलाद की बड़े परिश्रम से २ वर्ष के भीतर तैयार होती है। सातहीं मात्रा में नामर्द को मर्द बनाने की शक्ति रखती है। बूढ़े और नपुन्सक भी इस के खाने से सन्तानोत्पत्ति के योग्य हुए हैं। ७ दिन खाकर रोकना कठिन होता है। सदैव तैयार नहीं रहती, क्योंकि एक बार बिक जाने से फिर देर में तैयार होती है। मूल्य ३ माशा १९२), रत्ती १६)

फौलादभस्म, (दर्जा अव्वल)—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों में तैयार होती है। बड़ी बाजीकरण है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को थोड़े ही दिनों में लाल करती है। पट्ठों को बल देती है, वीर्य्य सन्बन्धी रोगों को दूर करके नामर्द को मर्द बनाती है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

फ़ौलाद भस्म—धातु क्षीणता, नताकती, शीघ्रपतनादि को हितकर है, यकृत को बलदायक है, रंग को लाल करती है। मूल्य २॥) तोला, ३ माशा ॥≈)

मण्डूर भस्म—यकृत रोग, कामला, पाण्डु रोग, शोथ, जलोदर, मूत्राशय की निर्बलता का हितकर है, और शीघ्रपतन को भी जब कि रोकने वाली शक्ति की निर्बलता के कारण से हो बहुत गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

सीसाभस्म—मूत्रकृच्छ्र के वास्ते हितकर है। कुर्ह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।≈)

अनविधि मोतीभस्म, (मुरवारीद नासुफ़ता)—हृद, यकृत, मस्तिष्क को बलदायक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि निवारक हैं। मूल्य ३०) रु० तोला ३ माशा ७॥), ४ रत्ती १।)

रस सिन्धूर—वैद्यक की प्रसिद्ध औषध है। यह रसायन है, उत्तेजक है, इस की वैद्यक ग्रन्थों में बडी प्रशंसा लिखी है। विभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य २०) तोला है। और शुद्ध पारद से तैयार कृत का मूल्य १०) तोला, शिंगरफ से निकाला हुआ पारा से तैयार कृत ५) रु० तोला है॥

चन्द्रोदय—यह एक प्रकार का रस सिन्धूर सोना मिश्रित होता है। सर्व औषधियों का राजा है। न केवल धातु सम्बन्धी सर्व रोगों की सर्वोत्तम औषधि है। बरञ्च उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में वर्ता जात है। कई घर इस से बस गए हैं। विभुक्षित पारा से तैयार कृत मूल्य १००) रु० तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत २०) रु० तोला है॥

कौड़ीभस्म—कान के बहने, मन्दाग्नि, प्लीहा, कफज रोगों को हितकर है। उत्तेजक है, मूल्य ॥) आना तोला॥

कृष्णाभ्रकभस्म—सर्व प्रकार के ज्वरों के लिये रामवाण है। लाल रंग का मूल्य ५) रु० तोला, ३ माशा १।)

श्वेताभ्रकभस्म—ज्वरों के लिये गुणकारी है। मूल्य १ तोला १),

गोदन्तीहड़ताल भस्म—सर्व ज्वरों को हितकर है। बालक से लेकर वृद्ध तक सेवन कर सकते हैं। मूल्य ॥) आना तोला ॥

श्वेत सुरमा भस्म—पैत्तिक रोगों में हितकर है। मूल्य ॥) तोला ॥

संगजराहत भस्म—कास, राजयक्ष्मा, रक्तवमन, तप, मूत्रकृच्छ्र, और पित्तज रोगों को हितकर है। मूल्य ॥) तोला ॥

संगयश्बभस्म—हृद रोग, मदात्ययः उन्माद, और धड़कन को दूर करती है मूल्य १॥) रु० तोला, ६ माशा ॥।)

जस्तभस्म—सुरमा की न्यांई लगाने से पानी जाना, धुन्ध, तिमिर, और खाने से सन्धिवात, शीघ्रपतन कासादि को हितकर है। मूल्य १) रु० तोला ॥

मोतीसीपभस्म—सोजाक के लिये अनुपम है पुंसत्व वर्द्धक है। कास श्वास को दूर करती है। मूल्य १॥) तोला, ६ माशा ॥।)

बारहसिंहाभस्म—सर्व प्रकार की पीडाओं, वातवेदना, पार्श्वशूल, गुल्फ पीडा, संधिवात, वातज शूल को हितकर है। मूल्य १॥) ६ माशा ॥।)

संगयहूदभस्म—वृक्कद्वे व मूत्राशय के रोगों को हितकर है। पथरी को दूर करती है। वृक्कद्वे पीडा को नाश करती है। मूत्रकृच्छ्र को भी हितकर है। मूल्य १॥) तोला ॥

ज़हरमोहरा खताई भस्म—विषों को दूर करती है। पैत्तिक रोगों में वर्ती जाती है। हृदय को बल देती है, और बहुत से रोगों को हितकर है। मूल्य आठ आना तोला ॥

अक़ीक़ भस्म—जीर्णज्वर, यकृत व हृदय की ऊष्णता, धड़कन, पट्ठों की दर्द, हृदय, मस्तिष्क, वृक्कद्वे, मूत्राशय की निर्बलता, मधुमेह और धातुक्षीणता को हितकर है। मूल्य २) रु० तोला, दर्जा अव्वल १०) रु० तोला,

[अब पुरुषों के विशेष रोग सम्बन्धी तिला (लिङ्ग तैल) अंकित होते हैं ।]

तिला नं० १—कुछ सुगन्धी युक्त है । बूढ़ों को भी प्रबल बना देता है । उनको विशेष रूप से लाभकारी है । हस्तकारों को और जो शौकिया बल बढ़ाना चाहें, यह तैल हितकर है । नसों और पट्ठों को बल देता है । मूल्य ४ डराम ५) रुपये । एक डराम १।)

तिला नं० २—यह वही है जो अकसीर नं० ३६ (ख) में पीछे अंकित होचुका है । जोड़ों पर मर्दन करने से पीड़ा बन्द करता है । हस्तकारों (अर्थात् हस्त मैथुन से जिन की नसें कमजोर होगई हैं) को बिना उपाड़ (फुंसी को पूरा लाभ देता है । मूल्य २ डराम १), नमूना ।)

तिला नं० ३, तिलाय महत्—हस्तकारों को विशेष रूप से हितकर है । साधारण अवस्थाओं में बहुत गुण करता है । मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना ≈)

तिला नं० ४, तिलाय मायूसीन—यह बड़ा प्रचण्ड है । चर्म का एक परत उतार देता है । परन्तु हस्तकारों की नसों पट्ठों को बहुत शीघ्र ठीक करता है । ४ दिन सेवन से पर्य्याप्त बल आता है । किन्तु खाने की अच्छी औषधि भी साथ हो । क्योंकि तिलाओं के साथ पौष्टिक औषधि का सेवन होना आवश्यक है । निरास रोगियों को इस से लाभ हुआ है । शिथिलता, ध्वजभंग, नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है । मूल्य २ डराम ३), नमूना ।।।)

तिला नं० ८, आनन्द वर्द्धक शाही—इस की प्रशंसा क्या करें, जिस ने एक बार आज़माया इस पर मोहित हुआ । नितान्त आनन्ददायक नितान्त सुगन्धियुक्त, जहां हो महक जावे, एक चावल पर्य्याप्त है, पुरुष स्त्री के आनन्द की कोई सीमा नहीं । मूल्य १२) रु० तोला, ३ माशा ४), नमूना १ माशा १≈)

तिला नं० ११, (कामनी द्रावक)—नं० ८ के गुण हैं, वह अमीरों को है तो यह गरीबों को। एक आध माशा नं० ८ की तरह ले। करके कार्य्य में प्रवृत हों बहुत ही शीघ्र स्त्री...होगी। मूल्य १) है

सिंहवसा, (चरबी शेर)—पीड़ित अंगों पर और सुस्त स्थान पर मलते हैं। इस की मालिश......पर करने से नसें व पट्ठे सबल होते हैं। और मधु मिलाकर इस की मालिश १ घण्टा प्रथम करें, पौष्टिक व अनन्ददायक है। मूल्य १) तोला, ६ माशा ॥)

अब स्त्रियों के रोगों की औषधियां वर्णन करते हैं ॥

प्रदरान्तक लोह—किसी प्रकार का प्रदर हो, लाल, पीत, श्वेत, इस से दूर होता है। कटिपीड़ा, सोम रोग आदि को हितकर है। मासिक धर्म्म की अधिकता, पीड़ा, बेक़ायदगी सब दूर करता है। मूल्य ३२ गोली २) रुपया, नमूना ।)

आर्तव प्रवर्तक (अर्क मुदर हैज़)—ऋतुस्राव का कम होना, या न आना, वेदना सहित आना, और तत्सम्बन्धी सर्व रोगों को दूर करके ऋतु को खोलता है। और बल प्रदान करता है। स्त्रियों के लिए टानिक औषधि है। मूल्य ४ औंस २), नमूना १ औंस ॥)

श्वेत प्रदरौषधि—स्त्रियों को जो श्वेतपानी जाता है, जिस को ल्यूकोरिया, श्वेतप्रदर, जिरयानुलरहम, सेलानेरतूबतज़नां, सोमरोगादि भी कहते हैं। चाहे किसी प्रकार का और किसी दर्जा का हो, इस से आराम आजाता है। मूल्य २४ मात्रा २), नमूना ८ मात्रा ॥।), साधारणावस्थाओं में ८ मात्रा ही पर्य्याप्त हैं ॥

कुक्कटाण्डछिलका भस्म—शुक्रमेह, श्वेतप्रदर दोनों को हितकर है। बाज़ी स्त्रियों को विशेष समय पर पानी बहुत आता है, उस के वास्ते

विशेष रूप से हितकारी है ॥ थोड़े दिन स्त्री को खिलावें, तो अक्षत योनि के तुल्य करता है। मूल्य ३) रुपये तोले। ६ माशा १॥), नमूना १॥ माशा ।≈)

गर्भ चिन्तामणि—गर्भिणी के सर्व रोग, ज्वर, कास, अजीर्ण, शोथ, जी मचलाना, वमन, अतिसार, उदरशूल, शीतादि को लाभ करती है। गर्भिणी की कोई भी व्याधि हो इस से लाभ होता है। स्मरण रहे, कि गर्भ की वमन के वास्ते अमृतधारा भी अति हितकर है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

मोतीपाक (माजून मुरवारीद)—जिन स्त्रियों को गर्भपात होजाता है, उन को जब गर्भ का पता लगे तो उसी समय इसे आरम्भ करके प्रथम तो पूरे दिनों तक अन्यथा उस मास के अन्त तक जिस में गर्भ गिरता है इस औषधि को खाना चाहिये। अकसीर है, न केवल गर्भ रक्षा करती है, अपितु बालक व प्रसूतः को कई रोगों से सुरक्षित रखती है। मूल्य १ पाव १०) रुपया, आधपाव ५), इस से कम मंगाने का लाभ नहीं है ॥

मीठा फल, (चमत्कारिक निर्म्माण)—यह एक विचित्र, संसार को अचम्भे में डालने वाली औषधि है। जब गर्भ होजावे तो २ मास के पश्चात् तीसरे मास जबकि अंग बनते हैं। इस की केवल ३ दिन २ गोली दूध में खिलाई जाती हैं। अचिंत्य प्रभाव से यह ऐसा करती है, कि पुत्र ही उत्पन्न होता है। चाहे गर्भ के भीतर पुत्र हो वा पुत्री। जिन के पुत्रियां ही उत्पन्न होती हैं, उन के वास्ते विशेष रूप से ईश्वरीय दान है। इस के साथ यह प्रतिज्ञा होती है, कि यदि कन्या उत्पन्न हो तो मूल्य वापस कर दिया जाएगा। यह प्रतिज्ञा इस लिए है, कि नई बात होने से कई लोग विश्वास नहीं करते, और १०) व्यय करने से झिझकते हैं। मूल्य १०)

अठरा की औषधि, (ब्रह्मपुत्र रस)—कतिपय स्त्रियों के सन्तान होकर मर जाती है। जिस को अठरा वा सूखिया मसान कहते हैं।

गर्भाधान से लेकर पूरे दिनों तक और कुछ मास पश्चात् तक इन गोलियों को सायम् प्रातः खिलाया करें और ईश्वर की कृपा से बालक जीता रहता है। मूल्य ७०० गोली १०) रुपया।

शिक्षित धातृ—यह औषधि प्रसूत समय देने से स्त्री सुगमता से बालक जनती है। रक्त कम यथावश्यक जाता है। प्रसूत के पश्चात् होने वाले रोग दूर होते हैं। मूल्य १॥), नमूना ॥।

सुखजनाई—इस औषधि के केवल कटि पर बांधने से बालक सुगमता से उत्पन्न होता है। मूल्य १) रुपया, जो एक बार को पर्य्याप्त है॥

गर्भकारकवटी, (हबूबहमल)—जबकि पुरुष का वीर्य्य ठीक हो, यह गोलियां स्त्री को ऋतु स्नान पश्चात् खिलाई जावें, तो प्रथम ही मास अन्यथा अधिक से अधिक चौथ मास के भीतर ईश्वर की कृपा से गर्भ स्थित होजाता है। मूल्य २४ गोली जो ४ मास को पर्य्याप्त हैं ५) रुपया॥

अब बालकों के रोगों की औषधियों का वर्णन करते हैं॥

बालरोग चूर्ण—बालकों के प्रायः रोग यथा अजीर्ण, अतिसार, ज्वर, खांसी आदि को हितकर है। प्रत्येक बालकों वाले गृह में रखना चाहिए मूल्य १ औन्स ॥), नमूना ≈),

बालकों के डब्बा रोग की औषधि—बालकों के डब्बा अर्थात् पसली रोग के वास्ते यह औषधि रसायन अर्थात् अतीव गुणकारी है। मूल्य १ तोला ५) रुपये, नमूना २ माशा १)

शिशुरक्षक. (अकसीर बचगान)—यह बालकों के वास्ते टानिक औषधि है। मन्दाग्नि, कोष्टबद्धता, हरे, पीले, दस्तों का आना, ज्वर, तृषा कृशता, बालक का सूखत जाना, और सदैव रुग्ण रहना, पित्ताधिकता सब दूर होते हैं। ६४ गोली १), नमूना ८ गोली ≈)

फूलो फलो—यह सूखिया मसान की औषधि है। इस को केवल कटि पर मला जाता है, और वहां से महीन २ कृमि निकलते हैं, वही रोग का कारण होते हैं। तीन दिन के भीतर सब कृमि निकल जाते हैं, और वह बालक जो दिन प्रति दिन सूख रहा था, हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देती थी, अब प्रफुल्लित होता है। मूल्य धनवानों से १००), साधारण से ५), निर्धनों से १) रुपया ॥

अब विविध रोगों की औषधियों का वर्णन करते हैं ॥

उपदंश की औषधि—उपदंश कठिन रोग है! यदि बेपरवाही की जाय तो पीढ़ियों तक पीछा नहीं छोडता। उपदंश नर तथा मादीन के भेद से दो प्रकार का होता है। नर में गहरे घाव केवल लिंग पर होते हैं। मादीन का विष रक्त में प्रविष्ट होजाता और शरीर फूट पड़ता है। इसका पहला घाव साधारण होता है। इस के तीन दर्जे होते हैं। पहले दर्जे में घाव केवल लिंग पर होता है। दूसरे में शरीर पर काले दाग, ताम्र रंग की फुन्सियां, और छोटे २ घाव आदि निकलते हैं। तीसरे दर्जे में हड्डी तक प्रभाव चला जाता है। बड़े २ घाव कुष्टवत होते हैं। उपदंश के वास्ते कई औषधियां तैयार रहती हैं। साधारण रूप से यह हैं, अपनी अवस्थानुसार मंगवाले, या हम वृतान्त आने पर स्वयम् निश्चत करके भेज देते हैः-

उपदंश औषधि नं० २—यह उपदंश के तीनों दर्जों नर व मदीन के वास्ते हितकर है। पैतृक उपदंश के वास्ते भी हितकर है। मूल्य ४) रुपया, अर्द्ध औषधि २) रुपया।

उपदंशौषधि नं० ४—नर उपदंश के वास्ते और नवीन मादीन के वास्ते अकसीर हैं। सर्वथा हानि रहित गोलियां हैं, साधारण काष्टिक वस्तुओं से बनी है। दो गोली बासी पानी से खाई जाती है। मूल्य १२८ गोली ४), ६४ गोली २ रुपया ॥

उपदंशौषधि नं० ५—प्रायः १५ दिन में आराम आता है। दोनों प्रकार के उपदंश दर्जा अव्वल में अद्वितीयगुणकारी है। मूल्य २८ गोली ४) रुपया, १४ गोली २) रुपया ॥

उपदंशौषधि नं ८—यह औषधि भी सब प्रकार के उपदंश को विशेष कर प्रथम व तृतीय दर्जे को अकसीर है। मूल्य २८ गोली ४) रुपया, १४ गोली २) रुपया ॥

उपदंशौषधि नं० १३—उपदंश नर तथा मादीन को १४ दिन में आराम करती है। अव्वल दर्जे को अकसीर और दूसरे दर्जे में भी गुणकारी है। मूल्य ४) रु०, आधी २) रु० ॥

उपदंशौषधि नं० १४—इस से २० या अधिक से अधिक ४० दिन के भीतर आराम आता है। केवल एक बूटी है, दर्जा अव्वल में अद्वितीय है। मूल्य ४० गोली ४) रु०

उपदंशौषधि नं० १५, (धूम्रपान)—यह टिकिया है, दिन में तीन बार चिलम में रखकर हुक्का की तरह पीने से उपदंश नर, मादीन प्रथमावस्था के घाव चाहे कैसे ही गहरे हो अच्छे होजाते हैं। कण्ठमाला को भी हितकर है। आन्तरिक घाव किसी प्रकार का हो इस के पीने से अच्छा होजाता है। तीक्षण अवश्य है, परन्तु अद्भुत औषधि है। कोमल स्वभाव वालों को सेवन नहीं करना चाहिये। ३ दिन में ही आराम आता है। मूल्य ९ टिकिया २)

उपदंशौषधि नं० १६, (उपदंश रेचन)—जब कि रोग जीर्ण हो चुका हो, या ऐसा दुःसाध्य हो, कि आराम न आता हो, तो पहिले जुलाब लेना उचित होता है। यह औषधि ३ माशा या अधिक से अधिक ६ माशा खिलाई जाती है। इस से उचित रेचन होकर उपदंश का विष निकल जाता है। जिस का आसौज, कार्तिक, या चैत्र फाल्गुण में उपदंश के फूटने का भय हो, वह ऋतु के आरम्भ में यह रेचन ले लें। मूल्य ६ माशा १) रुपया।

तथाच, (उपदंशौषधि नं० १७)—(द्वितीय तृतीय दर्जा उपदंश के लिये), यह औषधि दुःसाध्य जीर्णोपदंश के घाव, द्वितीय, तृतीय दर्जे के घाव फोडा, फुन्सा, व्रणादि को हितकर है। तालूछिद्र को गुणकारा है। नासूर को दूर करती है। मूल्य ६४ गोली ४) रुपये, ३२ गोली २) रुपया ॥

सारशारिष्ट—बहुत सी वैद्यक औषधियों का संग्रह है। उपदंश द्वितीय, तृतीय दर्जे में हितकर है। फोडा फुन्सी, दाग़, चम्बल, दाद, कृष्णदाग, ताम्र वर्ण धप्पड, खुजली आदि को दूर करके शरीर को कुन्दनवत करता है। उन सब रोगों में जिन में वलायती सारस्परीला वर्ता जाता है, यह अधिक गुणकारी प्रमाणित होगा। मधुमेह, प्रमेह को हितकर है। प्रमेह के पश्चात् जो कारबङ्कल भयंकर फोडे (मेह पिडिका) निकलते हैं, उन को भी हितकर है। बात, रक्त भगन्दर को गुणकारी है। उत्तेजक और सुखदायक है। मूल्य १ बोतल २) रुपये ॥

सारशारिष्ट मिश्रित—उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त उपदंश द्वितीय व तृतीय दर्जे में विशेष लाभदायक बनाने के लिये इस को मिश्रित किया जाता है। उपदंश का विष बैठ जाने से जब कोई न कोई रोग होता रहता है, फोडा, फुन्सी आदि निकलते रहते हैं, तो इस का सेवन करना चाहिये। कण्ठमाला, सन्धिवात, और उपदंश की पीडाओं को भी हितकर है। मूल्य फी शीशी ३ औन्स २) रुपया, नमूना ।=)

रक्तशोधक—यह केवल उश्बा (सारस्परीला) का सत्व है। प्रभाव लग भग वही है, जो सारशारिष्ट मिश्रित के हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना ।=)

हबूब हयात—सर्व शरीर ही क्यों न गल गया हो, इस औषधि के सेवन से कांचन बन जाता है, कुष्ट तक को हितकर है। शरीर के घाव, आतशक के घाव इस से अच्छे होजाते हैं। जिन के शरीर बहुत खराब होगए हैं उन को दीजाता है। ४० दिन खानी चाहिये। मूल्य ४० गोली ४), रुपया नमूना ८ गोली ।॥)

सोज़ाक की औषधि—सोजाक में पहिले जलन व पीडा होती है। नितान्त कष्ट होता है। दूसरे दर्जे में पीव आनी आरम्भ होती है। कुर्रह होजाता है, जलन धीरे २ बन्द होजाती है और केवल पीब जाती है वा तार से निकलते हैं, इस से भी बढ जावे तो तीसरे दर्जे में अवरोध होजाता है। मूत्र की नाली संकीर्ण होजाती है। कभी २ मूत्र रुक जाता है। तीसरे दर्जे में पहुंचा हुआ सोजाक बड़ी मुशकिल से दूर होसकता है। और जीर्ण होजावे तो जाता ही नहीं। सोजाक के वास्ते भी बहुत सी औषधियां तैयार रहती हैं। अवस्थानुसार दी जाती हैं, साधारणतया निम्न लिखित हैः—

सोज़ाक औषधि नं० १—प्रथम दर्जे में अकसीर का काम देती है। २४ घण्टे के भीतर जलन दूर होती है। कष्ट कम होता है, थोडे दिनों में पूर्ण लाभ होता है। यदि पीब भी हो और जलन भी साथ हो, तो इस को खाकर पहिले जलन दूर करनी चाहिए। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना ≈)

सोज़ाक औषधि नं० २—बडे ही तजुर्बों के पश्चात् हमारा स्वयम् निर्म्माण कृत योग अकसीर सोजाक व कुर्रह को है, जो कि प्रत्येक अवस्था मे गुणकारी है। दाह, जलन हो, पीब हो, दोनों मिले हुए हो, सब की अकसीर अचूक औषधि है। शुक्रमहादि को हितकर है। मूल्य ६० गोली ४), नमूना १५ गोली (५ दिन के वास्ते) १) रुपया॥

अकसीर दमाकुर्रह—यह औषधि केवल कुर्रह अर्थात् पीब जाने पर दी जाती है। एक ही दिन के भीतर पीब बन्द होनी आरम्भ होती है। इस के अतिरिक्त उपदंश को हितकर है। इस वास्ते जब सोजाक व उपदंश एक साथ हों तब भी हितकर है। दमा, खांसी आदि रोगों को दूर करती हैं। मूल्य २) रुपया, नमूना ।)

नोट—भस्मों में से सीपभस्म, संगजराहतभस्म, फिटकड़ीभस्म, मोतीभस्म और पारदादि हितकर हैं॥

बवासीर की औषधि—यू तो बवासीर ६ प्रकार की होती है। परन्तु बडे दो ही भेद हैं। रक्तार्श व वातार्श । कभी पैतृक भी होती है, जो कष्ट साध्य है। साधारणतया निम्न लिखित औषधियां हैः—

अर्शौषधि नं० ३—यह खूनी व बादी दोनों को हितकारी है। और साधारणतः इस से आराम आजाता है। मूल्य ४० गोली २) रु०, नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ७—यह विशेष कर रक्तार्श को लाभदायक है। ७ दिन के भीतर रक्त बन्द होता है। और २–३ सप्ताह में पूरा आराम आता है। मूल्य ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ५—जब कि अर्श के कारण नितान्त कष्ट हो पीडा, दाह, जलनादि से मनुष्य व्याकुल हो, उस समय यह औषधि ऐसी शान्ति देती है, जैसे अग्नि पर पानी डालदें। मूल्य १), नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ८—इस गोली को घिस कर मस्सों पर लगाने से खाज, जलन, शोथ सब बन्द होता है, और मस्से मुरदा होजाते हैं। मूल्य ३२ गोली २) रुपया, नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ९, (अकसीर बवासीर व शीघ्रपतन)— औषधि बलवर्द्धक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि को लाभदायक है। विशेष कर रक्तार्श के लिए मूल्य ३० गोली ५), ६ गोली १) रुपया ॥

अर्शौषधि नं० १०—बवासीर खूनी बादी को विशेष कर जब कि कोष्टबद्धता साथ बहुत हो अद्वितीय है। मूल्य २), नमूना ।)

अर्शकुठाररस—जब अर्श के साथ इतनी कोष्टबद्धता हो कि मल कभी ठीक उतारता ही न हो, तो पहिले एक रेचन देनी बहुत हितकर होती है। यह एक अर्शविरेचन है। खूब दस्त होते हैं और अगले दिन से ही बवासीर को आराम मालूम होता है। मूल्य १६ गोली १) रुपया ॥

प्लीहोदरौषधि—म्लेरिया ज्वर अधिक देर रहने से तिल्ली बढ़ जाती है। और म्लेरिया चिर काल तक बना रहता है। फिर ज्वर हट जाने पर भी तिल्ली बनी रहती है। कभी उदर की अन्य खराबियों से तिल्ली बढ़ती है निम्न लिखित औषधियां प्रायः देते हैं:—

दवाई प्लीहा नं० २—यह औषधि उस समय दी जाती है, जब कि आमाशय निर्बल हो तिल्ली साधारणतः बड़ी हो, क्षुधा कम लगती हो, मात्रा ६ गोली नित्य। मूल्य २४ गोली २), नमूना ।)

प्लीहोदरौषधि नं० ३—पौष्टिक है, चेहरे के रंग को शीघ्र लाल करती है। बल को बढ़ाती है। अग्नि सन्दीपन है, म्लेरिया के पुराने कीटाणु दूर होते हैं। सब प्रकार की तिल्ली दूर होती है। मात्रा २ रत्ती, मूल्य ६ माशा ४) रुपया, १॥ माशा १) रुपया ॥

प्लीहोदरौषधि नं० ४—सब प्रकार के प्लीहा के वास्ते हितकर है। प्रायः २० दिन में आराम आता है। साधारणतः यही दी जाती है। नमूना ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

प्लीहोदरौषधि नं० ५—जबकि प्लीहा के साथ कोष्टबद्धता हो, या तिल्ली बहुत ही पुरानी और बढ़ी हुई हो, तो यह औषधि गुणदायक है। उचित यह है, कि उपरोक्त किसी भी औषधि के खाते समय इस औषधि को जारी रक्खा जावे। रात्रि को सोते समय एक गोली खाने से प्रातः खुलकर शौच आवेगा और तिल्ली कम होती जावेगी। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना ।)

अकसीर हाज़मा—आमाशय सम्बन्धी सर्व रोगों की अचूक औषधि है। आहार पच कर पूरा बल प्रदान करता है। खाया पिया सर्व पच जाता है। क्षुधा बढ़ती है। आज कल के दिनों में जबकि पक्वाशय सम्बन्धी व्याधियां

बहुत बढ़ी हुई है लग भग सब अमीर मन्दाग्नि ग्रस्त दिखाई देते हैं । यह औषधि प्रसाद प्रमाणित होती है । मूल्य ६० गोली २) रुपया, ३० गोली १) रुपया, नमूना ।)

पाचक चूर्ण—उदर पीड़ा गुड़गुड़ाहट, वमन, विशूचिका, अतिसार आदि रोगों को हितकर है । पाचन शक्ति खूब बढ़ती है । अन्य पाचक चूर्ण इस के सन्मुख तुच्छ हैं । मूल्य २) रुपया, नमूना ।)

पाचनवटी—शूल, पेट की बादी, गुड़गुड़ाहट, अफारादि को हितकर है । क्षुधा वर्द्धक है, कोष्ठबद्धता को दूर करता है । प्रत्येक घर में वर्तमान रहनी चाहिये । मूल्य ६४ गोली १) रुपया, नमूना ८ गोली ≈।

प्राणदाता, (विशूचिका की अकसीर औषधि)—यूं तो अमृत धारा भी विशूचिका के वास्ते अमृत है, तथापि ऐसे भयंकर रोग के वास्ते किञ्चित् अन्य औषधियां भी हमेशा तैयार रखनी चाहिये । यह हमारी अनुभूत औषधि है । और ५ घण्टे के भीतर ही इस से प्रायः आराम आजाता है । वमन विरेचन बन्द होकर ज्वर होजाता है । मूल्य १५ गोली १), सदैव पास रक्खो, विशेष कर इस रोग के प्रकोप के दिनों में ॥

रेचक वटी (गोली जुलाब)—यह गोलियां जुलाब के लिए अनुपम हैं । एक दो गोली रात को सोते समय खाने से प्रातः समय खुलकर शौच हो जाता है । एक दस्त आता है । कोई कष्ट नहीं होता । शरीर सुखमय होजाता है । १०—१२ गोलियां खाने से ८ दस जुलाब खुलकर होजाते हैं, तीनों दोषों के वेग को दूर करती है । मूल्य १०० गोली १), नमूना ≈)

गन्धार रस—कठिन से कठिन और जीर्ण से जीर्ण अतिसार, मरोड़, संग्रहणी, आदि थोड़े दिनों में दूर । प्रायः एक ही मात्रा से अतिसार मरोड़ादि को आराम आता है । विशूचिका के वमन विरेचन को आराम होता है । अतिसार व मरोड़ के वास्ते ऐसी हितकर अन्य औषधि न होगी । मूल्य १ तोला १) रुपया, नमूना ≈)

हयातअफ़ज़ा—हृदय की निर्बलता और धड़कन के वास्ते अनुपम औषधि है। २८ दिन में आराम आता है। २८ दिन की मात्रा का मूल्य २) रुपया, नमूना ।=)

मण्डूरवटिका—कामला, श्वेतवर्णता, पाण्डु रोग, यकृत की निर्बलता, के वास्ते रामवाण है, शुद्धरक्त उत्पन्न होकर रंग लाल होता है। वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। मूल्य १६ गोली ।)

सुरमा नं० १—यह सुरमा दैनिक सेवन के वास्ते है। नेत्रों को प्रायः रोगों से सुरक्षित रखता है। दृष्टि शक्ति स्थिर रखता है। और शीतलता प्रदान करता है। मूल्य १ तोला ॥) नमूना केवल ‐)

सुरमा नं० २— रोग यथा पानी जाना, नया फोला, जाला, कुकड़े, पुड़वाल, आदि को दूर करता है। मूल्य १ तोला ॥।) नमूना ‐)॥

सुरमा नं० ३—यह सुरमा फोला के वास्ते विशेष रूप से हितकर है। धुन्ध, जाला, कुकरों आदि को बहुत शीघ्र दूर करता है। मूल्य ८) रुपये, तोला, ६ माशा ४), नमूना १)

सुरमा नं० ४—पुड़वालों के लिए विशेष रूप से हितकर है। पुड़वालों को उखाड़ २ कर लगाया जाता है जो फिर नहीं उगते। मूल्य ४) रुपये तोला, ६ माशा २), नमूना ३ माशा १)

भीमसेनी कपूर—वैद्यक का प्रसिद्ध योग है। नेत्र के सर्व रोगों को दूर करता है। ढलका, शोथ, पीड़ा, गरमी, दाह, खुजली, धुन्ध, जाला, पानी बहना, ललाई सब दूर होती है। अव्वल दर्जे का दृष्टि शक्ति वर्द्धक है। इस के अतिरिक्त और बहुत से काम आता है। उत्तेजक और लकवर्द्धकादि औषधियों में पड़ता है। उचित तो यह है, कि जहां किसी योग में कपूर लिखा हो इस को डालें तभी वह योग पूरा लाभ देगा। मूल्य १५) रुपया तोला, ३ माशा ३॥।), १ माशा १।)

नूराञ्जन—यह सुरमा अत्यन्त दृष्टि शक्ति वर्द्धक है। विद्यार्थी, क्लर्कादि यदि इसका सेवन रक्खें तो कभी नेत्र निर्बल न होंगे, और न कभी ऐनक की आवश्यकता होगी। दृष्टि क्षीणता के वास्ते इसके समान कोई औषधि न होगी। २ सप्ताह के सेवन के पश्चात् ही ऐसा ज्ञात होता है, कि नई शक्ति आगई है। मूल्य २०) तोला, ३ माशा ५) रुपये, नमूना ६ रत्ती १।)

कर्ण तैल—कर्ण रोग यथा दर्द, पीब, घाव, कानों में साएं २ आदि शब्द आना, श्रवण शक्ति हीनता को हितकर है। मूल्य १) २ डराम, नमूना।)

अनुपम नस्य—यह निस्वार अद्वितीय है, जो सदैव पास रखने योग्य है। इस निस्वार के लेते ही शिखदना, आधा शीशी, दाढ़ दर्द, कर्ण पीड़ा, मुखशोथ, नेत्र पीड़ा, प्रतिश्यायादि दूर होते हैं, मृगी, सन्निपात तक को हितकर है। मूल्य १) तोला, नमूना।) इस से छींकें कभी आती हैं, कभी नहीं आतीं॥

मञ्जन नं० १—दन्त रोगों यथा रक्त स्राव, पानी निकलना, पानी लगना, दन्तपीड़ा, मुखदुर्गन्ध को हितकर है। दांतों को स्वच्छ करता है मूल्य।), नमूना ~)

मञ्जन नं० २—विशेष कर दांतों की सफाई के लिए बनाया गया है। इस के मलते रहने से दांत मोतियों के समान चमकने लगते हैं। जिन के टारटर (मल) जम गया हो वह उसे उतार कर मलते रहें तो फिर न जमेगा मूल्य।) नमूना ~)

नकसीर की औषधि—चाहे कितनी देर से नकसीर जाती हो, इस के कुछ दिन नाक में डालने से बन्द होजाती है। मूल्य॥)

बाल उड़ाने की अनुपम औषधि—इस को पानी में घोल कर लगाने से एक मिण्ट के भीतर कठोर से कठोर और कोमल से कोमल स्थान के बाल जड़ से दूर होते हैं। जिस २ मंगवायां प्रशंसा की है। मूल्य फी डबिया।≈) नमूना ~)॥

बाल दूर करने की औषधि, (अर्थात् बाल आयु पर्यन्त न उगें)—बाल दूर करने की औषधि के मलने से फिर उमर भर बाल नहीं उगते। बालों को साफ़ करके इस को लगाया जाता है इस से आगामी बाल निकलने बन्द होते हैं। मूल्य १।) फी० शीशी। नमूना नहीं।

बालों का सुगन्धित तैल—बालों को नरम व मुलायम करता है। बढ़ाता है, शिर को शीतल रखता है, बाल सुन्दर, स्याह, चमकीले और नरम रहते हैं। दैनिक लगाया करो, मूल्य २ औन्स १), नमूना ।)

बाल उगाने की औषधि—इस औषधि के लगाते रहने से जिस जगह चाहो बाल उत्पन्न कर सकते हो, जब बारीक बाल उत्पन्न होजावें तो मूछें बढ़ाने का तैल लगाते रहो बढ़ेंगे। मूल्य १) प्रति टिकिया।

मूछें बढ़ाने का तैल—यह तैल न केवल मूछों को वरंच प्रत्येक स्थान के बालों को बढाता है, उन की स्याही स्थिर रखता है। आहा! रोबदार मूछों वाला चेहरा कैसा भला मालूम होता है। मूल्य फी शीशी ३ औन्स २), नमूना ।)

उबटन—इस उबटन को स्नान समय मलने से चेहरे के बुरे दाग, कील छाइयांदि दूर होकर चेहरा साफ होता है। झुरियां नहीं पडती, चेहरे का रंग दिन प्रति दिन निरखता जाता है, सूरत मनमोहिनी होजाती है। विलायत की लेडियां इस को लगाकर विस्मित होती हैं, कि एक भारतीय औषधि उन की हज़ारों ऐसी औषधियों की तुलना में उतम है! मूल्य केवल १), नमूना ≈)

सौन्दर्य्य बर्द्धक—यह स्नान के पश्चात् सेवन किया जाता है। एक प्रकार का तैल है, जो चेहरे को चमकाता है, और दाग़ कीलादि को दूर करता है। यदि स्नान से पहिले उबटन और स्नान पश्चात् सौन्दर्य्य बर्द्धक का सेवन हो तो बस कहना ही क्या है। मूल्य फी शीशी ॥≈) नमूना ≈)

सौन्दर्य्यमलाई—जिस स्त्री को एक बार दे दो सदैव इस की इच्छा करेगी। नरम मलाई हाथ पर रख कर चेहरे पर मली जाती है। चेहरे को नरम, कोमल, और सुन्दर करती है। छांई आदि दूर होती है। क्षौर के पश्चात् या किसी जगह के रोम दूर करके इस को लगादो तो भी रेशम की तरह नरम होजाती है। मूल्य २) नमूना ॥)

नोटः—सौन्दर्य्य विषयक एक पृथक सूची तैयार होने वाली है। यहां पर केवल किञ्चित् का वर्णन किया जाता है ॥

मुख रक्षक—मुख के छालों के वास्ते हितकारी है। चाहे बालकों को हों वा बड़ों को, मूल्य ॥) नमूना ।)

पान मसालह—पान खाने वाले श्रीमानों को यात्रा में जहां पान नहीं मिलता नितान्त कष्ट होता है। इस के अतिरिक्त हम ने देखा है कि बाज़ारी पान विक्रेता प्रायः मलिन बर्तनों आदि में सामग्री रखते है, इस लिए यह मसाला बनाया गया है। एक पान पर चुटकी रख दीजिए पान तैयार है। वैसा ही रंग देगा, वैसा ही स्वाद देगा. इस के अतिरिक्त मुख दुर्गन्ध को दूर करेगा, स्तम्भन बढ़ावेगा, दांतों को दृढ करेगा, कफादि को शुष्क करेगा, मूल्य १), रुपया नमूना ≈)

ताम्बूल वटी—वह लोग जो पान के बड़े २ पत्र मुख में डालने के बिना पान का आनन्द लेना चाहते हैं, या यात्रा में जहां पान ले जाना भी कठिन है इन गोलियों को खावें, एक गोली मुख में रखने से पान का मज़ा भी आवेगा रंग भी होगा, शेष ऊपरि लिखित गुण है। मूल्य ६० गोली १) नमूना ≈)

स्वर वर्द्धक—वकीलों, बैरिस्टरों, लेकचरारों, उपदेशकों, पण्डितों, रागियों, स्कूलमास्टरों, आदिकों के वास्ते जिन को बोलने का काम है, यह गोलियां रखनी चाहियें। यथावश्यक गोली मुख में रखने से गला जल्दी नहीं

बैठता, बैठा हुआ जल्दी खुलता है। और कुछ दिन लगातार खाने से कण्ठ सुरीला होजाता है। मूल्य ३० गोली २), नमूना ।)

दद्रुघ्न औषधि—इस के कुछ दिन लगाने से दाद चाहे किसी जगह हो, आराम आजाता है चम्बल को भी हितकर है। बहुत नरम जगह पर जबकि खुजाया हुआ हो, थोडी देर लगती है। दूसरी जगहों पर नहीं लगती, दाग, धप्पड कुछ नहीं पडता, वस्त्र खराब नहीं होते। इस को लगाकर कोई काम बन्द नहीं करना पडता। मूल्य १) ४ डराम, नमूना १ डराम ।)

रोगन मसीहा—जीर्ण से जीर्ण नासूर को दूर करता है, भगन्दर को हितकर है। इस के लगाने से प्रथम सब पीब निकल कर भीतर से भरना आरम्भ होता है। अन्य सर्व प्रकार के घावों को भी बहुत गुणकारी है। इस के खाने से कुरह को लाभ होता है। आन्तरिक घावों को खाने से भरता है। मूल्य १ औन्स ३ रुपया, ४ डराम १॥), नमूना १ डराम ।=)

सूर्य्य घृत—इस के शरीर पर मलने से सब प्रकार की खाज तर व खुश्क दूर होती है। फोडा फुन्सी जिन को कई प्रकार के निकलते रहते हैं उन को रसायन है। गलित शरीर भी सर्वथा स्वच्छ होजाते हैं। चर्मज रोगों को अत्यन्त लाभ दायक है। मूल्य २ औन्स १) रुपया, नमूना ४ डराम ।)

टिकिया छीब—इस को गोमूत्र में या अजा दूध में घिस कर लगाने से थिम्ब, छीब, श्वेत कुष्ट दूर होजाता है। मूल्य ॥) टिकिया ॥

प्लेग की औषधि—७ गोली तक खाने से प्लेग रोग जाता रहता है। यदि साथ अमृतधारा भी हो तो ९० प्रति सैकडा आराम आता है। यदि प्रति मास कुछ खा छोडा करें तो प्लेग का भय जाता रहता है। मूल्य ४० गोली केवल ॥) है ॥

खांसी की गोलियां—इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से नई खांसी रुक्ष हो वा स्निग्ध थोडे दिनों में लाभ होता है। मूल्य ६० गोली १), नमूना =)

जया गुटिका—यह गोलियां कफज, कास, श्वास के वास्ते अति गुणकारी है। पुरानी खांसी इन से दो तीन सप्ताह में जाती है। ज्वर साथ हो तो भी दी जा सकती है। विषमज्वर को भी हितकर है। मलभेदक है। उदर पीडादि को भी हितकर है। मूल्य ३२ गोली २) नमूना ।)

अकसीर बदन—गले व छाती के सर्व रोग, कास, श्वास, गले पडना आदि को हितकर है। जीर्णज्वर रक्तवमन राजयक्ष्मा की खांसी में, रक्त जाने मे, थोडे दिनों मे पूरा गुण करती है। इस लिये अन्य औषधियों के साथ दिक, सिल, में इस को अवश्य सेवन करना चाहिये। निर्बल बालकों को बलवान बनाती है। दुर्बल शरीर वालों को स्थूल। मूल्य १॥) शीशी ॥

ज्वरारि अभ्रक—यह गोलियां विषमज्वर के वास्ते अनुपम व अद्वितीय है। पुराना ज्वर और विशेष कर वह ज्वर जो चढता उतरता हो, प्रायः पहिले दिन छोड देता है। त्रितीयक, चौथिया, दैनिक आने वाला हो, जिस दिन खावे उसी दिन नहीं आते। मूल्य १६ गोली १), ८ गोली ॥) आना

ज्वरार्क—म्लेरिया, जूडी, या मौसमी किसी प्रकार का हो तीन दिन के भीतर जाता रहता है। म्लेरिया कृमि को नष्ट करने में रामबाण है। दैनिक आने वाला. नित्य दो बार आने वाला तीया, चौथिया, तिल्ली सब को दूर करता है। मूल्य ॥) शीशी, जिस में युवा की ३ दिनकी मात्रा होती है॥

त्रितीयक ज्वर तन्त्र—इस औषधि को ज्वर चढने से १ घण्टा पहिले मध्यमा उगली पर बांध देने से ज्वर नहीं चढता मूल्य ॥)

नोटः—और बीसियों औषधियां ज्वर सम्बन्धी तैयार होती रहती है। वैद्यक में इस के सम्बन्धी सैकडो रस है॥

पीडा नाशक—इस की एक ही पुडिया के सेवन से चाहे किसी प्रकार की नसों व पट्ठों की पीडा हो जाती रहती है। शिर पीडा, कटिपीडा, गुल्फ, रान या किसी जगह की भी पीडा हो १५ मिनट में आराम। पुरानी

पीडा हो तो कुछ दिन सेवन करनी चाहिये। अन्यथा पहिली पुडिया से ही आराम होजाता है। जिन को दर्द शिर का रोग हो इस को अवश्य अपने पास रक्खा करें। एक पुड़िया ५ मिनट में पीड़ा बन्द कर देगी। मुल्य १, नमुना ।)

ब्राह्मी अरिष्ट—स्मरणशक्ति के वास्ते इस से बढ कर कोई औषधि न होगी। मस्तिष्क की निर्बलता, शिरपीड़ा, पुरुषों के वीर्य्यसम्बन्धी रोग, स्त्रियों के रजसम्बन्धी रोग, शुक्रमेहादि को हितकर है। मलभेदक है। थोडे दिनों में मस्तिष्क दिव्य हो जाता है। वाणी मधुर हो जाती है। गान विद्या और काव्य इस से शीघ्र आती है। मुल्य २) रुपया शीशी ४ औन्स ॥

वृद्धिबाधिका बटिका—यह गोलियां सब प्रकार की अण्डवृद्धि को हितकर हैं, नल उतरने को एक दो दिन में आराम देती हैं। अण्डशोथ और अण्डपीड़ा को भी हितकर है, अंत्र वृद्धि (आंत उतरने) को हितकर है, किन्तु आराम दो चार मास में आता है। यह गोलियां श्लीपद को भी हितकर हैं। मूल्य ६० गोली २।।), १५ गोली ॥≈)

अफीम निवारक—इन गोलियों के खाने से अफीम छूट जाता है। सैकड़ों मनुष्य छोड चुके हैं। मूल्य ६० गोली १॥) जो रत्ती तक अफीम खाते है उन के वास्ते ६० गोली पर्य्याप्त हैं। अधिक खाने वाले २-३ डबिया यथा आवश्यक मंगालें ॥

मोटा होने की औषधि—कतिपय लोग कोई विषेश रोग न होने पर भी और अच्छा आहार खाने पर भी मोटे नहीं होते, वह इस को सेवन किया करें। मूल्य आध सेर ४), नमूना आध पाव १) रुपया ॥

वातकुलान्तकरस—यह गोलियां मृगी के वास्ते रामवाण हैं। प्रायः १ मास के भीतर आराम हो जाता है। इन गोगियों के साथ २ नाक में डालने के वास्ते अमृतधारा रखनी चाहिये। मूल्य ३० गोली ५), १२ गोली २) बालकों को $\frac{1}{4}$ से अर्द्ध गोली तक देना चाहिये ॥

दवाई गंठिया (संधिवात)—जोड़ों की पीड़ा, शोथ, सन्धिवात अर्द्धांगवात, आदिवातादि को हितकर है । मूल्य ६० गोला २) नमूना ॥)

अमृत की गोलियां—कफज कास, श्वास, पेटदर्द, शीतज्वर, नेत्रपीड़ा, नेत्ररोग, नाखूना, सब प्रकार का विष, हड्डी का ज्वर, बात, सन्निपात, दन्तरोग, कोष्टवद्धता, बवासीर, बन्ध्यापन, सर्पदंश, बिच्छूदंश, ढलका, उदरकृमि, मूत्रवद्ध, आमाशय की निर्बलता, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, सन्धिवात, उपदंश, शुक्रमेह, मधुमेह, मुखगन्ध, दर्द शिर, कामला, जलोदर, धातुक्षीणता मृगी, श्वेत कुष्ठ, नासूर, गञ्जशिर, अतिसार, मरोड़, कर्णपीड़ा, दन्तपीड़ा, अन्धराता, आर्तवबद्ध, भिड़ादि का दंश, शरीर की शिथिलता, गुदभ्रंश, शीतदोष, नाभिपीड़ा, तमक श्वास, अश्मरी, छब, प्रतिश्याय, मूत्रातिसार, बालकों का डब्बा रोग, तृषा की अधिकता इत्यादि रोग दूर होते हैं । और पांच सात गोलियां इकट्ठी देने से बढ़िया रेचन का काम भी देता है । मूल्य ६० गोली १) रुपया नमूना ≈)

हकीम ।

दुनियां में अनूपम मेडीसन बक्स (औषधियों का डब्बा)

अनुपम इस वास्ते कि केवल ३ औषधियां हैं । जेब में रक्खा जासकता है और केवल ३ औषधियों से सर्व रोग दूर होने का ठेका मिलता है, इस वास्ते इस का नाम हकीम रक्खा गया है । अमृतधारा एक अनुपम औषधि है, इस के साथ इस में एक शीशी गन्धार रस और एक शीशी अमृत की गोलियां हैं । प्रशंसा इन की पीछे लिखी गई है । अमृतधारा ही पर्य्याप्त है । फिर जहां आवश्यकता पड़े इन को साथ मिला देने या पृथक सेवन करने से गजब ही तो होगा । मूल्य तीनों का ४॥) है, परन्तु इस को सर्व साधारण में प्रचलित करने के वास्ते केवल ४) रुपये मूल्य रक्खा है । बक्स मानो मुफ्त है ॥

पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य रचित

प्रत्येक पुरुष के पढ़ने योग्य वैद्यक पुस्तकें
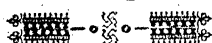
सोजाक का वर्णन—तत्स्वबंधी व्याख्या उस का कारण निदान और चिकित्सा बहुत उत्तम शैली से अंकित है मूल्य ।॥)

शीघ्रपतन—समस्त दुनियां में ९९ प्रति सैकड़ा से भी अधिक इस रोग में ग्रस्त हैं, कारण यह है कि बुरे व्यसन सम्पूर्ण जगत् पर अधिकार किये हुए हैं, इस पुस्तक में उन के पूर्ण व्याख्या की गई है, और पश्चात् सविस्तर चिकित्सा और सर्व प्रकार के योग भी दिए गए हैं, ताकि प्रत्येक धनी व निर्धन लाभ उठा सकें मूल्य ।≈)॥

डाक्टर लूईकोहनी के चार स्नान—की पूरी विधि बड़ी योग्यता से संक्षिप्त करके लिखने के पश्चात् उन से प्लेग की चिकित्सा कैसे करनी चाहिये, इसका भी वर्णन किया गया है, मूल्य ≈॥

ब्रह्मी—आज कल ब्रह्मी के तन्द्रा नाशक, मस्तिष्क पौष्टिक, स्मरण शक्ति बर्द्धक प्रमेह नाशक आदि होने को सभी जानने लग गए हैं, और ब्रह्मी बहुत सेवन की जारही है । इस में ब्रह्मी का पूरा वर्णन करके सेवन करने के असंख्य उपाय लिखे गए हैं, मूल्य ≈)॥

प्रसूत काल—यह पुस्तक घर में मौजूद होनी चाहिये और प्रत्येक घर में पढ़कर या सुनाकर इस के सम्पूर्ण लेख हृदयस्थ करा देने चाहिये । प्रत्येक दाया को इस से अवगत होना आवश्यक है । इस में २३ लाभ दायक चित्र हैं । मूल्य ॥≈)

विज्ञापन ॥

हमने विलायत से एक टिकिया बनाने की मशीन मंगवाई है। इसी कारण हमारे हां गोलियों के स्थान में टिकियां बनने लग गई हैं। सो यदि सूची में गोली लिखी देखें और पहुंचें टिकियां, तो इसका विचार न करें ॥

काम व रति शास्त्र

प्रथम भाग

छपने की तय्यारी हो रही है

इस में २४५ हस्त चित्र और ५० फोटो के चित्र हैं ॥

काम शास्त्र या कोक शास्त्र आदि नामों से बीसियों पुस्तकें लिखी गई हैं, लोग इस नाम को भावना समझते हैं, इस वास्ते बहुसंख्यक इस प्रकार की पुस्तकें बिक रही हैं, परन्तु कदाचित् कोई ऐसी पुस्तक होगी, जिसके पहुंचने पर ग्राहक को सन्तोष हो, और वह प्रसन्न हो, कतिपय समय वह हैरान होता है, कि एक ही पुस्तक के दो नाम रख कर प्रकाशित किया जाता है, ताकि लोग बार २ फंसें, हमने पूर्णांग रूप से इस विषय को पाठकों के भेट करने की इच्छा करली है ॥

अतः प्रथम भाग लगभग ५०० पृष्ट में समाप्त होगा, जो अभी से दरख्वास्त भेज देंगे, उनको मूल्य में कुछ रियायत होगी, तय्यार होने पर आप को सूचना दी जायगी, आप की इच्छा होगी मंगवाइए । अब केवल नाम अपना भेज दीजिए ॥

शुक्र रोगों के रोगियो !

यदि तुम विविध इलाज करके निराश हो चुके हो, तो भी तुम मुझे केवल एक कार्ड लिखो, मैं तुम्हें वह २ उपाय बताऊंगा, कि तुम फिर से स्वस्थ और युवा बन सकोगे, नाम और पता स्पष्ट लिखें ॥

विज्ञापकः—

ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य मालिक देशोपकारक

औषधालय व अमृतधारा लाहौर ॥

तीन वैद्यक पत्रों के सम्पादक व २ दर्जन से अधिक पुस्तकों के रचिता

कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की तय्यार की हुई

[रजिस्टरी हुई] **"अमृतधारा"** [रजिस्टरी हुई]

OCK VERIFICATION
1988
BY

लगभग उन सब रोगों का जो प्रायः घरों में होते रहते हैं हुक्मी इलाज है। **बीस सहस्र** सेवन करने वालों की यही सम्मति है, कि अमृतधारा हर घर में, हर जेब में सदा मौजूद होनी चाहिए, क्योंकि जो बीमारी या कष्ट होजावे, इस के खाने लगाने से ९० फीसदी तो आराम ही आता है, अन्यथा रोग रुक अवश्य ही जाता है, यही कारण है, कि लगभग **२० सहस्र प्रशंसापत्र** प्रतिष्ठित सज्जनों के मौजूद हैं। अमृतधारा कारखाना के वास्ते एक लाख रुपया लागत का एक विशाल मकान लाहौर में बनाया गया है, जिस का नाम "अमृतधारा भवन" है, इस भवन के पूर्व ओर जो सड़क है, उसका नाम कमेटी ने **अमृतधारा सड़क** रक्खा है, इसके भीतर एक डाकखाना खुला है। जिसका नाम **अमृतधारा डाकखाना** है, यह भवन श्रीमान् एफ. डबल्यू. **केनवे साहिब बहादुर डिप्टी कमिश्नर लाहौर** के शुभ हाथों से लाहौर के प्रतिष्ठितों के बड़े भारी जलसा में खुला था। **"अमृतधारा" सचमुच एक अद्भुत आविष्कार है,** सविस्तर जानने के वास्ते "अमृत-पुस्तक" मुफ्त मंगावें, **अमृतधारा की प्रसिद्धि के कारण इस की नकलें बहुत बन गई हैं। झूठी नकलों से सावधान रहें ॥**

मूल्य अमृतधारा पूरी शीशी २॥) आधी शीशी १।) नमूना ॥) है